



# उदानं

राहुलसङ्कीर्णानेन  
आनन्दकोसलानेन  
जगदीसकस्सपेन च  
सम्पादितो

उत्तमभिक्षुना पकासितो

२४८१ बुद्धवज्जरे (1937 A C)



## प्राङ्निवेदनम्

पालिवाङ्मयस्य नागराज्यरे मुद्रण अत्यपेक्षितमिति नाविन्तित्वर भारती  
यतिहासविदिपूणाम । सम्कृतपाणिभाषयोरतिसामीप्यादपि यत परम्पदमभ्य  
जिनामुभ्यः संस्कृतभ्यः पालिग्रन्थराश्यवसात् दुष्करमिव प्रतिभानि नत णिपि  
भदादेव । एतदयमयमस्माकमभिनव प्रयास । अत्र नूतना अपि पाठभदा निघषा  
न्यासीदस्माक मनीषा पर बालात्ययभीत्याऽत्र प्रथमभागे धम्मपदादयत्र ३ तत  
कृतममृत् । अधोऽप्यणीपु सन्निवृत्ता पाठभदा । प्राङ् Pali Text Society  
मद्वितीयेषु ग्रन्थेभ्य उद्धृता ।

अथसाहाय्य दिना अस्मत्समीहित हूनि निगूहितमेव स्यात् । तत्र भदन्ता  
उत्तमस्यविरेण सान्नाय्य प्रणाय मन्दुपकृतमिति निवेदयति—

कार्तिकशुक्लमास्या

२४८० बुद्धाब्द

राहुल साकृत्यायन

आनन्द बौत्तल्यायन

जगदीश काश्यपदत्त



# सुत्त-सूची

पिट्ठको

पिट्ठको

१—बोधि वग्गो

१

३—नन्दवग्गो

२१

१-बोधि-सुत्तं

१

२१-कम्म-सुत्त

२१

२-बोधि-सुत्त

२

२२-न'व-सुत्त

२१

३-बोधि-सुत्त

२

२३-यत्तोज-सुत्त

२४

४-निप्रोष-सुत्त

३

२४-सारिपुत्त-सुत्त

२८

५-येर-सुत्त

३

२५-कोज्झि-सुत्त

२८

६-कस्सप-सुत्त

४

२६-पिलि-द-सुत्त

२८

७-पाटलि-सुत्त

४

२७-कस्सप-सुत्त

२९

८-सगामजी-सुत्त

५

२८-विण्ड-सुत्त

३१

९-जटिल-सुत्त

६

२९-सिप्प-सुत्त

३२

१०-बाहिय-सुत्त

६

३०-लोक-सुत्त

३३

२—मुच्चलिन्द-वग्गो

१०

४—मेघिय-वग्गो

३५

११-मुच्चलि-द-सुत्त

१०

३१-मेघिय-सुत्त

३५

१२-राज-सुत्त

११

३२-उद्धत-सुत्त

३८

१३-दण्डि-सुत्त

११

३३-गोपाल-सुत्त

३९

१४-सक्कार-सुत्त

१२

३४-जुण्हा-सुत्त

४०

१५-उपासक-सुत्त

१३

३५-नाग-सुत्त

४२

१६-गग्गिनी-सुत्त

१४

३६-विण्डोल-सुत्त

४४

१७-एकपुत्त-सुत्त

१५

३७-सारिपुत्त-सुत्त

४४

१८-सुप्पवामा-सुत्त

१५

३८-सुवरी-सुत्त

४५

१९-विसाखा-सुत्त

१८

३९-उपसेन-सुत्त

४७

२०-भद्वि-सुत्त

१९

४०-सारिपुत्त-सुत्त

४८



# सुत्त-सूची

|                    | पिट्ठको |                    | पिट्ठको |
|--------------------|---------|--------------------|---------|
| १—बोधि-वग्गो       | १       | ३—नन्दवग्गो        | २१      |
| १-बोधि-सुत्त       | १       | २१-कम्म-सुत्त      | २१      |
| २-बोधि-सुत्त       | २       | २२-नन्द-सुत्त      | २१      |
| ३-बोधि-सुत्त       | २       | २३-यसोज-सुत्त      | २४      |
| ४-निप्रोष-सुत्त    | ३       | २४-सारिपुत्त-सुत्त | २८      |
| ५-येर-सुत्त        | ३       | २५-कोलित-सुत्त     | २८      |
| ६-कस्सप-सुत्त      | ४       | २६-पिलिन्द-सुत्त   | २८      |
| ७-पाटलि-सुत्त      | ४       | २७-कस्सप-सुत्त     | २९      |
| ८-सगामजी-सुत्त     | ५       | २८-विण्ड-सुत्त     | ३१      |
| ९-जटिल-सुत्त       | ६       | २९-सिप्प-सुत्त     | ३२      |
| १०-बाहिय-सुत्त     | ६       | ३०-लोक-सुत्त       | ३३      |
| २—मुचलिन्द-वग्गो   | १०      | ४—मेधिय-वग्गो      | ३५      |
| ११-मुचलिन्द-सुत्त  | १०      | ३१-मेधिय-सुत्त     | ३५      |
| १२-राज-सुत्त       | ११      | ३२-उद्धत-सुत्त     | ३८      |
| १३-दण्डि-सुत्त     | ११      | ३३-गोपाल-सुत्त     | ३९      |
| १४-सक्कार-सुत्त    | १२      | ३४-जुण्हा-सुत्त    | ४०      |
| १५-उपासक-सुत्त     | १३      | ३५-नाग-सुत्त       | ४२      |
| १६-गम्भीरो-सुत्त   | १४      | ३६-पिण्डोल-सुत्त   | ४४      |
| १७-एकपुत्त-सुत्त   | १५      | ३७-सारिपुत्त-सुत्त | ४४      |
| १८-मुप्पवासा-सुत्त | १५      | ३८-सुदरी-सुत्त     | ४५      |
| १९-विताखा-सुत्त    | १८      | ३९-उपसेन-सुत्त     | ४७      |
| २०-भाटिय-सुत्त     | १९      | ४०-सारिपुत्त-सुत्त | ४८      |



|                     | पट्टिका |                       | पट्टिका |
|---------------------|---------|-----------------------|---------|
| ५—सोनथेर धगो        | ४९      | ७—घुल्ल-धगो           | ७९      |
| ४१-राज-मुत्तं       | ४९      | ६१-भट्टिय-मुत्तं      | ७६      |
| ४२-अप्पायुव-मुत्तं  | ५०      | ६२-भट्टिय-मुत्तं      | ७६      |
| ४३-मुदडी-मुत्तं     | ५०      | ६३-बामेमु-सत्त-मुत्तं | ७७      |
| ४४-मुमार-मुत्तं     | ५२      | ६४-बाममु सत्त मुत्तं  | ७८      |
| ४५-उपागप-मुत्तं     | ५३      | ६५-लुण्टव-मुत्तं      | ७८      |
| ४६-मोण-मुत्तं       | ५८      | ६६-तण्णवत्तव-मुत्तं   | ७९      |
| ४७-रेवत्त-मुत्तं    | ६१      | ६७-वपण्णवत्तव-मुत्तं  | ८०      |
| ४८-नव-मुत्तं        | ६२      | ६८-भक्कान मुत्तं      | ८०      |
| ४९-सहायमान-मुत्तं   | ६२      | ६९-उवपान-मुत्तं       | ८१      |
| ५०-वव-मुत्तं        | ६३      | ७०-उवपन-मुत्तं        | ८२      |
| ६—जळयन्ध धगो        | ६४      | ८—पाटलिगामिय धगो      | ८३      |
| ५१-आपुसम-मुत्तं     | ६४      | ७१-निव्वान-मुत्तं     | ८३      |
| ५२-ओमज्जा-मुत्तं    | ६६      | ७२-निव्वान मुत्तं     | ८३      |
| ५३-पटिसल्लान-मुत्तं | ६८      | ७३-निव्वान-मुत्तं     | ८४      |
| ५४-आट्ट-मुत्तं      | ६९      | ७४-निव्वान-मुत्तं     | ८४      |
| ५५-किर-मुत्तं       | ७१      | ७५-मुद-मुत्तं         | ८४      |
| ५६-तिरियम मुत्तं    | ७२      | ७६-पाटलिगामिय-मुत्तं  | ८८      |
| ५७-मुमुत्ति-मुत्तं  | ७३      | ७७-विपापव-मुत्तं      | ९२      |
| ५८-गणिका-मुत्तं     | ७३      | ७८-विताणा-मुत्तं      | ९३      |
| ५९-उपालि-मुत्तं     | ७४      | ७९-वग्ग-मुत्तं        | ९५      |
| ६०-उप्पज्जति-मुत्तं | ७४      | ८०-वग्ग-मुत्तं        | ९५      |

## उदानं

### १—बोधिवग्गो

( १—बोधि-सुत्त १।१ )

एव मे सुत्त—एव समय भगवा उद्वलाय विहरति मज्जा नेरञ्जराय तीरे बोधिरूक्षमूले पठमाभिसम्बुदा ।<sup>१</sup>

तत खो पन समयन भगवा सत्ताह एकपल्लङ्कन निसिस्सो हाति विमुत्तिसुख पटिसव्वदी<sup>२</sup> । अथ स्ता भगवा तस्स सत्ताहस्म अच्चयन तम्हा समाधिम्हा वुट्ठहित्वा रत्तिमा पठम याम पटिच्चसमुप्पाद अनुलाम साधुक मतसाक्कासि<sup>३</sup> इति—इमस्मि सनि इद होनि इमस्सुप्पादा इद उप्पज्जति यदिद—अविज्जाप-  
च्चया सङ्खारा, सङ्खारपच्चया विज्जाण, विज्जाणपच्चया नामरूप, नामरूपप-  
च्चया सत्तायतन सत्तायतनपच्चया फस्सो, फस्सपच्चया वदना वदनाप-  
च्चया तण्हा तण्हापच्चया उपादान, उपादानपच्चया भवो, भवपच्चया जाति  
जातिपच्चया जरामरण सोक्खपरिदेवदुक्खदामनस्सुपायासा सम्भवन्ति । एव  
एतस्म दुक्खवक्खधस्म समुदयो होतीनि । अथ खो भगवा एतमथ विदित्वा  
ताय वेलाय इम उदान उदानेसि ।

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिना नायतो ब्राह्मणस्स ।

अथस्स वड्ढवा वपयन्ति सब्बा यतो पजानाति सहनुधम्मन्ति ॥१॥

पाठभेदा अट्ठक्यातश्च पदानि—

१ <sup>१</sup> महावग्ग १।१।१ ३ १ पय०—इति सव्वत्र १

२ सुल्लप्प०—इति B

## ( १—योधि-सुत्त १।२ )

एव म सुत्त—एव समयं भगवा उद्धेत्तायं विहरति नज्जा नेरञ्जराय तीरे योधिपत्तमूले पठमानिगम्मुटो ।

तत्र ता पा समयन भगवा सत्ताह एवपल्लवन्न निमित्तो हाति विमुत्तिमुत्त मुत्त पटिसवेनी ।<sup>१</sup> अथ सो भगवा तस्य सत्ताहस्य अच्चेये तप्हा समाधिग्हा बुद्धित्वा रत्तिपा मत्तिम याम पटिप्पसमुणाद पटिलोम साधुत् मनसायासि इति—इमस्मि असति इदं न हाति इमस्य निरोधा इदं निरञ्जनि यत्ति— अविज्जा निरोधा सङ्खारनिरोधा, सङ्खारनिरोधा विज्जाननिरोधा विज्जान निरोधा नामरूपनिरोधो, नामरूपनिरोधा मत्तायतननिरोधा, मत्तायतननिरोधा पस्सतिरापो, पस्सतिरापो वत्थानिराधा, वत्थानिराधा तण्हा निरोधा, तण्हा निरोधा उपादाननिरोधा, उपादाननिरोधा भवनिराधा, भवनिराधा जाति निरोधो, जातिनिरोधा जरामरणमारपरिचदुक्खमोमनस्सुपावसा निरञ्जति । एवमेतस्स दुक्खमपस्स निरोधा होतानि । अथ सो भगवा एत्त अत्थं विस्तिवा ताव वेत्तायं इम उपात्तं उपात्तमि—

यत्ता हवे पातुभवन्ति धम्मा आनाविना सापया वाहाणस्स ।

अपस्स वद्धसा यययति सज्जा ययो मय पच्चेयानं अत्थीनि ॥२॥

## ( २—योधि सुत्त १।३ )

एव म सुत्त—एव समयं भगवा उद्धेत्तायं विहरति नज्जा नेरञ्जराय तीरे योधिपत्तमूले पठमानिगम्मुटो ।

तत्र ता पन समयन भगवा सत्ताह एवपल्लवन्न निमित्तो हाति विमुत्तिमुत्त मुत्त पटिसवेनी ।<sup>१</sup> अथ सो भगवा तस्य सत्ताहस्य अच्चेयन तप्हा समाधिग्हा बुद्धित्वा रत्तिपा पच्छिमे याम पटिप्पसमुणाद अनुलोमं पटिलोम साधुत् मनसायासि इति—इमस्मि सति इदं होति इमस्सुणात्ता इदं उणञ्जति इमस्मि असति इदं न हाति, इमस्य निरोधा इदं निरञ्जनि, यत्ति— अविज्जापच्चेय ( = १ सु० ) दुक्खमपस्स समुदयो होति । अविज्जा मत्त्वव अस्सेपाधिरागनिरोधा सङ्खारनिरोधो ( = १ सु० ) दुक्खमपस्स

२ महावग्ग, १।१।३-५

३ महावग्ग, १।१।६-७

१ सुलप°—इति B

१ सुलप°—इति B

निरोधो होनीति । अथ खो भगवा एतमत्थं विदित्वा ताय वलाय इम उदान  
उत्तानेसि—

यदा हव पातुभवन्नि धम्मा जातापिना चामता ब्राह्मणस्स ।

विधूपय तिट्ठति मारमन मुरियो' व आभामयमन्तरिक्खन्नि ॥३॥

### ( ४—निग्रोध-मुत्त ११४ )

एव मे सुत्त—एवं समय भगवा उरुवेत्ताय विहरति नग्गा नेरञ्जराय  
तीर अजपालनिग्रोधे पठभाभिसम्बुद्धा ।

तेन खो पन समयेन भगवा सत्ताह एकपञ्चद्वेन निमिजो होति विमुत्तिसुत्त  
पटिमवदी<sup>१</sup> । अथ खो भगवा तस्स मत्ताहस्स जच्चयन तम्हा समाधिम्हा बुद्धासि ।  
अथ खो अञ्जनतरो हूहुदकजातिको<sup>२</sup> ब्राह्मणो यन भगवा तनुपसद्वक्कि उप  
सद्वक्कित्वा भगवता सद्धि मम्मोदि सम्मोदनीय वय सागणाय धीतिमारत्वा  
एवमन्त जट्टामि एवमन्त ठितो खो सो ब्राह्मणो भगवन्त एतत्वाच—वित्तावना  
नु खा भो गोनम ब्राह्मणो हाति वनम च पन ब्राह्मणकार्त्ता धम्मा<sup>३</sup> ति ? अथ  
खा भगवा एतमत्थं विदित्वा ताय वलाय इम उत्तान उत्तानेसि—

यो ब्राह्मणो बाहितपापधम्मो नीहुहुद्वको निक्कसावी यत्तत्ता ।

वदन्तगू वुत्तिनब्रह्मचरिया धम्मेन सो ब्राह्मणो ब्रह्मवाद बदेम्य (१)

यस्सुत्तदा नत्थि कुट्ठाञ्च लोकेनि ॥४॥

### ( ५—थर-मुत्त ११५ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाय-  
विण्डिकस्सारामे ।

तम खो पन समयेन आयस्मा च सारिपुत्तो आयस्मा च महामोग्गल्लानो  
आयस्मा च महाक्खसपो आयस्मा च महाक्त्वायनो आयस्मा च महाकोट्ठितो  
आयस्मा च महाकप्पिनो आयस्मा च महाबुद्धो आयस्मा च अनुसद्धो आयस्मा च  
रेवतो आयस्मा च देववत्तो आयस्मा च आनन्दो यन भगवा, तेनुपसद्वक्किमु ।

४ <sup>१</sup> महावग्ग, १।२।१-३

<sup>२</sup> B सुत्तपु°

<sup>३</sup> A हूहुका° BD

ब्राह्मणकरण धम्म, महावग्गे—ब्राह्मणकरणा धम्मा

अस्या स्या भगवा ते आग्रस्मन्त दूरताव आगच्छन्ते, त्विस्वान भिक्षू आमन्तसि—  
एते भिक्षव ! ब्राह्मणा आगच्छन्ति एते भिक्षव ! ब्राह्मणा आगच्छन्ति ।

एव वृत्ते षञ्जतरा ब्राह्मणजानिना भिक्षु भगवत एतद् अवोच—  
' कित्तावना नु खो मन्त ब्राह्मणो होति कतमे च पन ब्राह्मणकारवा ! धम्मा नि ?  
अथ खो भगवा एतमत्थं विन्त्वा ताव वलाय इम उत्पन्नं उदानसि—

वाहिवा पापक्कं धम्मं ये चरन्ति मत्ता सत्ता

खीणसयोन्ना<sup>५</sup> बुद्धा त वे<sup>६</sup> लोक्कस्मि ब्राह्मणानि ॥५॥

### ( ६—कम्मसप सुत्त १।६ )

एव मं सुत्त—एक समय भगवा राजगहे विहरनि वल्लुवन कलवकनिवाये ।

तत्र स्या पन समयन आयस्मा महाकस्सपो विष्णुनिगुहाय विहरनि, आवाधिक्को  
हानि दुस्सित्तो वाट्ठगिगिगानो । अथ खो आयस्मा महाकस्सपो अपरन समयन तम्हा  
आवाधा बुद्धामि । अथ खो आयस्मनो महाकस्सपस्स तम्हा आवाधा बुद्धितस्स  
एतन्होति मत्तामह राजगह पिण्डाय पविगम्यति । तेन खो पन समयन पञ्च  
मत्तानि दवत्तासत्तानि उत्सुक्क आपत्तानि हान्ति आयस्मतो महाकस्सपस्स पिण्ड  
पातपटिग्गमाय । अथ खो आयस्मा महाकस्सपो तानि षञ्चमत्तानि देवसत्तानि  
पटिक्खित्वा पुञ्चगृहसमय निवामत्वा पत्तचीवर आत्ताय राजगह पिण्डाय पाविमि  
येन त्तिह्विसित्ता कपणविसित्ता पसवारविसित्ता । अहमा खो भगवा आयस्मन्त  
महाकम्मप राजगह पिण्डाय चरन्त यन त्तिह्विसित्ता<sup>७</sup> कपणविसित्ता पसवार  
विसित्ता । अथ खो भगवा एतमत्थं विन्त्वा ताव वलाय इम उदान उदानमि—

अनञ्जपार्णि अञ्जात दन्त मारे पतिट्ठित ।

खाणासय वन्तदोग तमह भूमि ब्राह्मणन्ति ॥६॥

### ( ७—पणलि सुत्त १।७ )

एव मं सुत्त—एक समय भगवा पाटलिय<sup>\*</sup> विहरनि अजक्कापके चेनिये  
अजक्कापकस्स यक्कस्स भवने ।

५ <sup>१</sup> BD<sup>०</sup> करणा ABD खीणा<sup>०</sup> <sup>३</sup>A च चे

६ <sup>१</sup>B दळहिछा

७ <sup>\*</sup>C चावाय B पाराय अनुगच्छति AD वग्गगुहान-नाथा च

तन खो पन समयेन भगवा रत्त घवारतिमिसाय अभावासे निसिन्धो होति,  
देवो च एकमेक फुमार्यति। अथ खो जज्वलापको यक्खो भगवतो भय  
छम्मितत्त लोमहस उप्पात्तुकामो येन भगवा तेनुपसज्जमि, उपसज्जमित्वा  
भगवता अविदूरे तिवल्लत्तु अक्कुलपक्कुला<sup>१</sup> ति अक्कुलपक्कुलि<sup>२</sup> अवासि—  
'एसो<sup>३</sup> ते समण<sup>४</sup> पिसाचो'ति। अथ खो भगवा एतमत्थ विदित्वा ताय वेलाय  
इम उदान उदानेसि—

यदा मकेसु धम्मसु पारगू हाति बाह्मनो,  
अथ एत पिसाच च अक्कुल चातिवत्ततीति\* ॥७॥

### ( ८—सगामजी सुत १।८ )

एव म सुत—एक समय भगवा सावस्थिय विहरा जेतवने अनाथ  
पिण्डिक्ख आरामे।

तेन खो पन समयेन आयस्मा सङ्गामजि सावस्थि अनुप्पता होति भगवन्तं  
दस्सनाय। अस्मोसि खो आयस्मतो मङ्गलमजिस्स पुराणदुत्तियिका—अय्यो  
सङ्गामजि सावस्थि अनुप्पत्तो'ति। सा दारकमादाय जेतवन<sup>१</sup> भगमासि<sup>२</sup>  
(१) तन खो पन समयेन आयस्मा सङ्गामजि अज्जतरस्मि हक्खमूले निवाविहार  
निसिन्धो होति। अथ खो आयस्मतो सङ्गामजिस्स पुराणदुत्तियिका यन  
आयस्मा सङ्गामजि तनुपसज्जमि, उपसज्जमित्वा आयस्मत सङ्गामजि  
एतदवोच—'खुद्दुत्त हि समण<sup>३</sup> पोम मन्ति। एव वुत्त आयस्मा सङ्गामजि  
तुण्ही<sup>४</sup> अहोसि। दुत्तनिमम्पि खा आयस्मतो मङ्गलमजिस्स पुराणदुत्तियिका त  
दारक आयस्मतो सङ्गामजिस्स पुराणा निक्खिपित्वा पक्कामि—एसो ते समण<sup>५</sup>  
पुत्तो पोम न'न्ति। अथ खो आयस्मा सङ्गामजि त दारक नव ओलोकेसि नापि  
आलपि। अथ खो आयस्मतो सङ्गामजिस्स पुराणदुत्तियिका अविदूरे गन्वा  
अपलोकेत्ती अहसायस्मन् सङ्गामजि त दारक नव ओलोकेत्त नापि आल्पन्त,  
दिस्वानस्स एतदहोसि—न चाय समणा पुत्तेना<sup>६</sup> पि अचिक्खेति (१) ततो पटिनि  
वत्तित्वा दारकमादाय पक्कामि। अहमा खो भगवा दिब्बन चक्खुना विसुद्धेन अति

<sup>१</sup> A अक्कुलोवक्कुलो

- A अक्कुलवक्कुलिक, BD पुस्तकयोरशुद्ध

<sup>२</sup> B एस

\* BD पुस्तकयोरन्तिम पादोऽशुद्धो भाषातेच—सम

तिवत्तति A च वीतिवत्तति अत्रानुगम्यते

ववन्नपानुसवन आयस्मता सद्भगामजिरा पुराणदुनियिनाय एवम्प विप्पकार ।  
अय या भगवा एतमथ विन्तिता ताय वेलाय इमं उदान उप्पनत्ति—

आर्यात्त नाभिनन्ति पयमाम्नि न सावति ।

सद्भगा सद्भगामजि भुत्त तमहं तमि वात्थण त ॥८४॥

### ( ६—जटिल-सुत्त ११६ )

एव मे सुत्त—एह समय भगवा गयाय जिहरति गयासीते ।

तन खो पन समयेव सम्बहूण जग्गि मातासु हंमन्तिवासु रत्तीसु अन्नरुद्धं  
निमपानममय गयाय उम्मुज्जन्ति पि निमज्जन्ति पि उम्मुज्जनिमुज्ज पि वरोन्ति  
ओसिञ्चन्ति पि अग्गि पि जुहन्ति—मिना मुद्धानि । अहसा खो भगवा त सम्बहूणे  
जटिले मातासु हंमन्तिवासु रत्तीसु अन्नरुद्धं हिमपानममय गयाय उम्मुज्जन्तेपि  
निमुज्जन्तं पि उम्मुज्जनिमुज्ज वरोन्तं पि अग्गिञ्चन्ते पि अग्गि पि जुहन्तं—मिना  
मुद्धानि । अय खो भगवा एतमथ विन्तिता ताय वेलाय इमं उदान उप्पनत्ति—

न उक्कन सुचि हानि, पट्टवरय न्हायतो<sup>१</sup> जणो

यमिह सञ्चञ्च पम्मो च सा सुति सो च ग्राह्यो<sup>२</sup>ति ॥९॥

### ( १०—वाहिय-सुत्त ११० )

एव मे सुत्त—एह समय भगवा मावच्चिय विहरति जेतवने अनायविण्डि  
कत्साराम ।

तेन खो पन समयन वाहियो दासचारियो<sup>१</sup> सुप्पारके<sup>२</sup> पटिक्कन्ति  
समुद्दीरे सक्कता हानि मक्कतो होति मानितो प्पुत्तितो अपचित्ता एग्गी  
चीवरपिण्डपातसेनासन्गिलानपच्चयभेगज्जपरिवसागन । अय खो वाहियस्स  
दासचीरियस्म एव चतगा परिमितक्का उदपादि—यनु खो वच्चि नेवे अरहत्तो  
वा अरहत्तमण वा समापप्पा अह तेम अञ्जानरोनि । अय खो वाहियस्स  
दासचीरियस्स पुराणमागोहिता दक्खता अनुक्कमिक्का अयक्कामा वाहियस्स

९ <sup>१</sup>BD नायति हायणी—इति पठनीयम् ।

१० <sup>१</sup>AD विरियो—इति सर्वत्र <sup>२</sup>AD सुपा

दारुचीरियस्स घेतसा घेतो परिवितवमञ्जाय येन बाहियो दारुचीरियो तनुप सद्धमि, उपसद्धमित्वा बाह्यि दारुचीरिय एतदवोच— तेव सो त्व बाह्यि अरहा नापि अरहत्तमग्ग वा समापन्नो, सा पि त पटिपदा त्थि, माय त्व अरहा वा अस्स अरहत्तमग्ग वा समापन्नो<sup>१</sup> ।'

अथ सो वे "अरहि मदववे सोऽ अरहन्तो वा अरहन्तमग्ग वा समापन्ना<sup>२</sup> ति ?

'अथि बाह्यि' उत्तरेमु जनप<sup>३</sup>सु सावची नाम नगर । तत्थ सो भगवा एतरहि विहरति अरहं सम्मासम्बुद्धो । सा हि बाह्यि' भगवा अरहा चेव अरहत्ताय च धम्मं ससतीति ।

अथ सो बाह्यो दारुचीरियो ताव देवताय सवजितो तावदेव सुप्पारक्खस्मा<sup>४</sup> पक्खामि । सज्जत्थ एवरत्तिपरिवासेन यन भगवा सावत्थियं विहरति जतवन अनायपिण्डवस्साराय तेनुप-सद्धमि । तेन यो पन समयन सम्बहुला भिक्खू अब्भोनासे चद्धमन्ति । अथ सो बाह्यो दारुचीरियो यन ते भिक्खू तेनुपसद्धमि उपसद्धमित्वा त भिक्खू एतदवाच—' कह नु खा भन्ते । एतरहि भगवा विहरति अरह सम्मासम्बुद्धो, दग्गनवामग्हा मय त भगवन्त अरहन्त सम्मासम्बुद्धन्ति ।

'अन्तग्घर पविट्ठो सा बाह्यि' भगवा पिण्डाया ति ।

अथ सो बाह्यो दारुचीरियो तग्गमानरूपो जतवना निक्खमित्वा सावत्थियं पविसित्वा अहस भगवन्त सावत्थियं पिण्डाय चरन्त पासादिव दस्सनीय सन्तिद्विय सन्तमनस उत्तमदमयसमयमनुपसं दन्त गुत्त सन्तिद्विय<sup>५</sup> नाग, दिस्वा येन भगवा तेनुपसद्धमि, उपसद्धमित्वा भगवतो पादे सिरसा निपतित्वा भगवन्त एतद वोच—'देसेतु मे भन्ते । भगवा धम्मं देसेतु मुगतो धम्म, य मम अस्स दीघरत्त हिताय सुखायाति ।'

एव वुत्ते भगवा बाह्यि दारुचीरिय एतदवोच—'अवालो सो ताव बाह्यि' पविट्ठग्हा पिण्डायाति ।' दुतियम्मि सो बाह्यि दारुचीरियो भगवन्तमेतदवोच—'दुज्जान सो पन ॥ भन्ते, भगवतो वा जीवितन्तरायानं मह्य वा जीवितन्त राया, देसेतु मे भन्ते । सुखायाति ।' दुतियम्मि सो भगवा बाह्यि दारुचीरिय एतदवोच—'अवालो पिण्डायाति । ततियं पि सो बाह्यो दारुचीरियो भगवन्त एतदवोच—'दुज्जान देसेतु सुखायाति ।

<sup>१</sup> A सम्मा—इति सवत्र <sup>२</sup> AB को, नास्ति पुस्तके C

<sup>३</sup> AB ओ <sup>४</sup> A सुपा०, B सुपरक्खग्हा <sup>५</sup> B अ०



‘तस्मात् त वाहिय । एवं मिश्रितम्—’<sup>१</sup> शिष्टं शिष्टात् भविष्यति, मुने  
मुनस्त भविष्यति, भू भूतम् भविष्यति, विज्ञानं विज्ञानमस्त भविष्यति ।  
एव त्रि न वाहिय । मिश्रितम् । यथा या ने वाहिय शिष्टे शिष्टमस्त भवि  
स्मिन् विज्ञानं विज्ञानमस्त भविष्यति तथा त्वं वाहिय, न त्वम्, यथा  
न राहिय नयत्य<sup>२</sup>, तथा न राहिय । नविष्य न ह्ये न उभयमन्तरो, एवमनो  
दुर्गममिति ।

अथ या वाहियस्मादाह्वयिष्य भगवता इत्यस्य भविष्यस्य धम्मपेक्षानां  
तात्पर्यं अनुपात्तव्यं आगच्छति चित्तं विमुञ्चि ।

अथ एते भगवा वाहिये दाह्वयिष्य मीमांसा मरित्तन ओवात्त आह्वयित्वा  
पञ्चमि । अथ एते अधिराज्यनस्त भगवता दाह्वय दाह्वयिष्य मीमांसा तदणवच्छा  
अधिपात<sup>३</sup> शिष्टिता घोरोरमि । अथ ता भगवा भावयिष्य विज्ञाय चरित्वा  
पञ्चमस्त विज्ञापानपटिपञ्चा सम्पद<sup>४</sup> शिष्टि निवृत्ति गति भगवता विज्ञापित्वा  
अहम् वाहिय दाह्वयिष्य वाह्वयिष्य शिष्टान भिक्खू आमन्तेमि—<sup>५</sup> गच्छ  
भिक्खव वाह्वयिष्य दाह्वयिष्यस्तरीर<sup>६</sup>, मञ्च<sup>७</sup> आगो<sup>८</sup> वा मीहृत्वा मापय  
धूपञ्च<sup>९</sup>स्त करोम मन्त्राभारी यो भिक्खव । वाह्वयिष्ये नि ।<sup>१०</sup>

एव मन्ते नि या ते भिक्खू भगवता पटिमुणि<sup>११</sup> वा आह्वयिष्य दाह्वयिष्यस्त  
स्तरीर<sup>१२</sup> मञ्च<sup>१३</sup> आगो<sup>१४</sup> वा मीहृत्वा मापय धूपञ्च<sup>१५</sup>स्त करोम यत्त भगवा  
मनुपात्तमिषु उपमन्त्रित्वा भगवन्त अधिवा<sup>१६</sup>स्त एवमन्ते निमी<sup>१७</sup>स्तु एवमन्त  
निमिषा एते ते भिक्खू भगवन्तमाह्वय<sup>१८</sup>— दण्ड मन् । वाह्वयिष्य दाह्वयिष्य-  
यम् सती धूपो चम्प यतो, तस्य वा गति को अभिसम्पदायोनि ।<sup>१९</sup> ‘पण्डितो  
भिक्खव वाह्वयिष्य दाह्वयिष्यपञ्चपा<sup>२०</sup>’ धम्मरमानुधम्म न च म धम्माधिकरणं  
विद्मेनि परिनिम्बता भिक्खवे । वाह्वयो दाह्वयिष्योनि । अथ एते भगवा एतमर्थं  
वित्तिता तां वलाय इम उपात्त उपात्तमि—

यत्त आपा च पठवो<sup>२१</sup> तेजो वायो न माघति<sup>२२</sup>

न तत्त सुवरा जानन्ति जाञ्च्वा न प्यवतानि

<sup>१</sup> एवमेव A पुस्तके, B—न नय चञ्चान ततो त्व वाह्वय न तत्त यतो त्वं  
वाह्वय वि( ! )तत्त, तथा D यत्तत्त पञ्चात्—ततो त्वं वाह्वय यत्तत्त,  
मतो त्वं वाह्वय नवत्त, सतो अस्पष्टं कटुञ्चया वाक्यम्

AB अधिपातित्वा D अधिवाहित्वा

<sup>२</sup> AC सञ्चवादि, C पटिपञ्चि, B सञ्चवादि

<sup>३</sup> A पय०

<sup>४</sup> दृश्यते ३ सयुक्ता०, ११३७

न तत्थ चन्दिमा भानि तमो तत्थ न विज्जति,  
 यदा च अत्ताा धदि मुनि सो तेन ब्राह्मणो,  
 अथ स्था अस्था च सुखदुक्का पमुच्चतीति ॥१०॥

अयं पि उदानो वुत्तो भगवता इति मं मुनन्ति ।

बोधिवग्गो पठमो<sup>१</sup>

तत्र उद्दानं भवति—

तयो च बोधि, भिदो<sup>२</sup> ते देवा बरस्सने च  
 पाग्गो<sup>३</sup> सङ्गामसि जग्गिमा बाहियेन ते स्साग्गि ॥

## २—मुचलिन्द-धम्मो

(११—मुचलिन्द-मुत्त २।१)

एवं म गुा—एतं समय भगवा उरवेत्तायं विहरति राज्ञा नेरञ्जराय तीरे  
मुचलिन्दमूले<sup>१</sup> पठमाभिसम्बुदा ।

तत एव पन समयन भगवा सत्ताह एतन्मन्त्रकानि निमित्तो हाणि विमूति  
सुख पन्निवेने । तेन सा पा समयो महा अत्तामेधो उन्नाणि सत्ताहवद्दिना<sup>२</sup>  
सीतावाता<sup>३</sup> रुद्धिनी । अय एव मुचलिन्दो<sup>४</sup> तानराजा भवमयना निरुगमित्वा  
भगवतो काय मत्तवगसु भोगहि परिनिमित्तया उपरि मुञ्चति महन्तं कण विह्वल्य  
अट्टामि—मा भगवन्ने शीने मा भगवन् उण मा भगवन् उगमममवानात्  
परिनिरुपसपत्तो<sup>५</sup> नि । अय एव भगवा तस्स मत्ताहम्म अण्ययन तम्हा समा  
धिम्हा बुद्धासि । अय एव मुचलिन्दा<sup>६</sup> तानराजा विद्ध विगतवलाह्वं य विन्तिवा  
भगवतो काया भोगे विनिउट्टवा सखयण पत्तिहरिवा माणवकरणं अभि  
निम्मित्तया भगवतो पुरतो अट्टामि पञ्चजिह्वो भगवन्तं नमस्समानो । अय एव  
भगवा एतमत्थं विन्तिवा ताथं वेलाय इम उदान उदामि—

सुखो विवेको तुट्ठस्स गुतघम्मस्स पस्सतो,  
अध्यापन्तो<sup>७</sup> मुक्कं एते पाणभूतसु सयमो ।  
सुखा विरागता छानं कामान् समनिरुत्ता  
अस्मिमानस्स या विनयो एत वे परम मुयन्ति ॥१॥

११ <sup>१</sup> इष्टम्य महावग्गे, १।३।१ ४

<sup>२</sup> A मुञ्च °

<sup>३</sup> A मट्ठ°,

<sup>४</sup> C महावग्गे च—

<sup>५</sup> सरित्तप°

<sup>६</sup> एवमेव पठयत D महावग्गे च, AB° उज्ज

## ( १२—राज-सुत २।२ )

एव मे सुत—एक समय भगवा सावत्थिय विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे ।

तेन खो पण समयेन सम्बहूलान भिक्खून् पच्छाभत्त पिण्डपातपटिवन्तान उपट्टानसालाय सन्निसिनान सन्निपतितान अयमन्तराकथा <sup>१</sup> उदपादि—“को नु खो आवुसो । इमेस द्विध राजून महद्धनतरो वा महाभोगतरो वा महाकासतरो वा महाविजिततरो वा महावाहनतरो वा महब्बलतरो वा महिद्धिवतरो वा महानुभाव तरो वा राजा वा भागधो सेनियो बिम्बिसारो राजा वा पसेनदि कोसलोति ।’ अयञ्चरहि तम भिक्खून् अन्तराकथा होति विप्पक्ता <sup>२</sup> ।

अय खो भगवा मायण्हसमय पटिमल्लाना बुद्धितो येनुपट्टानसाला तेनुपसङ्गमि, उपसङ्गमित्वा पञ्जत्ते आसने निसीदि, निस्सज्ज खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि—

‘कामानुत्थ भिक्खव । एतरहि वधाय सन्निसिना सन्निपतिता का थ पण वो अन्तराकथा विप्पक्ता’ <sup>३</sup> ति ।

‘इध भन्ते । जम्हाकप्पि पच्छाभत्त उदपादि परोनदि कोसलो ति’ । अय खो नो भन्ते । अन्तराकथा विप्पक्ता । <sup>४</sup> अय खो भगवा अनुप्पत्तो ’ति ।

‘न खो भिक्खवे । तुम्हाक् पटिरूप कुत्तपुत्तान सद्धाय <sup>५</sup> अगारस्मा अनगारिम पव्वजितान, य तुम्हे एवहपि कथ कथेय्याथ । सन्निसिनान वो भिक्खव । द्वय करणीय धम्मिकथा अरियो वा तुण्हीभावो <sup>६</sup> ति ।

अय खो भगवा एत अत्थ विदित्वा ताथ वेलाय इम उदान उदानेसि—

य थ कामसुत्त लोके यं चिद दिविय सुख ।

तण्हक्कायसुखस्स ते कल <sup>७</sup> नग्घन्ति सोळसिन्ति ॥२॥

## ( १३—दंडि-सुत २।३ )

एव मे सुत एक समय भगवा सावत्थिय विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे ।

१२ <sup>१</sup> हस्तलेखेषु क्वचिद अन्तरकथा

<sup>२</sup> सर्वत्र °था=°ता, C गोषित °था=°ता <sup>३</sup> अय पाठ २८, २९

त ससृत्त <sup>४</sup> A D सद्धान, B सद्धा, ससृत्त सु० २८, २९ त थ <sup>५</sup> B

धम्मिका कथा <sup>६</sup> AD तुण्हीभावो <sup>७</sup> B °ळ

तत्र खो पत्र समयन सम्बहुत्र कुमारवा अन्तरा च सावत्थि अन्तरा च जेतवने अहि दण्डन हन्ति । अथ खो भगवा पुत्रण्हसमय निवासत्वा पत्तचीवर मदायसावत्थि पिण्डाय पाविमि । जहमा सो भगवा सम्बहुत्र कुमारवे अन्तरा च सवत्थि अन्तरा च जेतवने अहि दण्डेन हन्ति । अथ खो भगवा एतमत्थ विन्त्वा ताव वलाय इम उगान उगानि—

मुग्गमामानि भूतानि यो दण्णं विहसन्ति ।

अत्तनो सुखमेसानो पेच्च सो न रमन्त सुख ।

मुखरामानि भूतानि यो दण्डनं न हिंसन्ति ।

अत्तनो सुख मेसानो पेच्च<sup>१</sup> भो रमन्ते सुखन्ति, ॥३॥

### ( १४—सक्कार-सुत्ता २।४ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा सावत्थिय विहरति जेतवने अनाथपिण्ड कस्स आरामे ।

तेन खो पत्र समयन भगवा सक्कतो होति गह्वता हाति मानिता पूजितो अपचितो आभी चावरणिण्डपातसत्तसनगिलानपच्चयभसज्जपरिक्कारान [सुत्त १० सादृश्य] भिक्खुमणोपि सक्कतो वे परिक्कारान । अज्जति तियया पत्र परिव्वाजका भगवतो सक्कार अत्तमाना भिक्खुसघस्स च गामे च अरज्जे च भिक्खू त्तिवा असमाहि फरसाहि वाचाहि अक्कोसन्ति परिभासन्ति रोसन्ति विद्देसन्ति ।

अथ खो सम्बहुत्र भिक्खू येन भगवा तेनपसद्धवामसु उपसद्धकमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसीदिंसु, एकमन्त तिसिन्ना खो ते भिक्खू भगवन्त एवदवोच—

‘एतरहि भन्ते ! भगवा सक्कतो गह्वतो प परिक्कारान, भिक्खुमणोपि सक्कतो गह्वतो प परिक्कारान अज्जति तियया पत्र परिव्वाजका असक्कता अगह्वता वे परिक्कारान । अथ खो ते भन्ते ! अज्जति तियया परिव्वाजका भगवतो सक्कार प विहसत्तीति ।

अथ खो भगवा एतमथ विन्त्वा ताव वत्थं इम उगान उदानेसि—

गामे अरञ्जे सुखदुःखफट्टो नेवत्ततो गो परतो दहेय<sup>१</sup> ।

पुसन्ति फस्सा उपाधि<sup>२</sup> पटिच्च, निरुपाधि वेन पुमेय्यं फत्साति ॥४॥

### ( १५—उपासक-सुत २१५ )

एव मे सुत—एवं समय भगवा सावस्थिय विहरति जेतवने अनायासिण्डकस्स आरामे ।

तत्र सो पन समयेन अञ्जतरो इच्छानङ्गलको<sup>३</sup> उपासको सावस्थि अनुप्पत्तो होति केनचिदेव करणीयन । अथ खा सो उपासको सावस्थिय त करणीय तीरेवा यन भगवा तेन उपसङ्गमि उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसीणि, एकमन्त निसिन्न सो उ उपासक भगवा एतदवोच— 'चिरस्स खा त्व उपासक' । इम परिवाय अकामि यद्विनिधानमनाया नि' ।

'चिरपटिकाह' भन्ते । भगवन्त दस्सनाय उपसङ्गमितुवामो अपिचाह केहिचि किञ्चकरणीयहि व्यावतो<sup>४</sup> एवाह नासक्खि भगवन्त दस्सनाय उपसङ्ग मितुन्ति ।

अथ सो भगवा एतमथ विन्तिवा ताय वेलाय इम उदान उदानमि—

सुख वन । तस्म न होति किञ्चि सङ्गवातप्पमस्स बहुस्मुतस्स ।<sup>५</sup>

सकिञ्चन पस्स विहज्जमान, जनी जनहि पटिवधरुपा<sup>६</sup> ॥५॥

१४ <sup>१</sup>B दसाय (?), C नेव'अत्ततो नो परतो रहेया (?) 'ति अह भुलितो च 'आह बुलिततो परेन' इदं भयहं सुखदुःख उप्पादितन्ति च नेव अत्ततो नो [त्यज्यते] परतो त सुखदुःख ठपेय (?) दहेय—इति पठनीय किमु ? AD उपधि

<sup>२</sup>०धी—इति हस्तलेखे

१५ <sup>३</sup>C इच्छानङ्गलनामको कोसलेसु एको ब्राह्मणगामो त निवासि ताम (?) तत्त्व वा ततो भयो'तिज वा इच्छानङ्गलको उपासको'ति

<sup>४</sup>A चिर, P°, C स्पष्टयति—चिरपटिको अह चिरकालतो पट्ठाय अह

“A व्यावहो', D व्यावहो

<sup>५</sup>अत्र २१६ इत्यत्र च अङ्गुल्लो हस्तलेख

## ( १६—गम्भिनी-सुता २।६ )

एव मे सुत—एन समय भगवा सावत्पिय विहरनि जेतवने अनापपिण्डकस्स क्षारामे ।

तेन सा पन समयेन अञ्जतरस्स परिव्वाजजस्स दहरा माणविका पापानी होनि गम्भिनी उपविजञ्जा । अय सो मा परिव्वाजिका त परिब्बाजक एतदवोच—'गच्छ त्व ब्राह्मण । तेल आहर, य मे विजाताय भविस्सती ति ।

एव वृत्त सो परिव्वाजको त परिव्वाजिन एतवोच—'कुतो पनाह भानिया तल आहरामा' ति ।

दुतिमिप्पि सा सा परिव्वाजिका त परिव्वाजिक एतदवोच—'गच्छ त्व ब्राह्मण । तेल आहर, य मे विजाताय भविस्समि ।

दुतिमिप्पि सो मो परिव्वाजिको त परिव्वाजिक एतवोच—'कुतो पाह भानिया तल आहरामी ति ।

ततिय पि सो सा परिव्वाजिका त परिव्वाजिन एतदवोच—'गच्छ त्व ब्राह्मण । तेल आहर य मे विजाताय भविस्सती ति ।

तेन सो पन समयेन रञ्जो पसेनदिस्स कोसलस्स कोट्टागारे समणस्स वा ब्राह्मणस्स वा सप्पिस्स<sup>१</sup> वा तेलस्स वा यावन्त्य पातु दीयनि नो नीहरितु । अय सा तस्स परिव्वाजकस्स एतहोसि—रञ्जो सो पन पसनदिस्स<sup>२</sup> नाहरितु । यतूताह रञ्जो पसेनदिस्स<sup>३</sup> कोसलस्स कोट्टागार गत्वा तेलस्स यावन्त्य पिवित्वा घर आगत्वा<sup>४</sup> उग्गिरत्थान दयेय्य य इमिस्मा विजाताय भविस्समीणि ।

अय सो परिव्वाजको रञ्जो पसेनदिस्स कोसलस्स कोट्टागार गत्वा तेलस्स यावन्त्य पिवित्वा गार गत्वा नेव सक्कोनि उद्व कानु त पन अघो । सो दुक्काहि तिब्बाहि खराहि वटुराहि वेदनाहि पुट्ठा जावट्टति परिवट्टति च । अय सो भगवा पुट्ठवण्हसमम निवासत्वा पत्तचीवरमादाय भावत्थि पिण्डाय पाबिसि । अहसा सो भगवा त परिव्वाजक दुक्काहि तिब्बाहि खराहि वटुराहि वट्टाहि वट्टाहि पट्ट जावट्टमान परिवट्टमान । अय सो भगवा एतमत्थ विन्त्वा ताय वेलाय इम उज्जल उज्जलमि—

सुगिणो वप य अकिञ्चना वदगुणो हि जना अकिञ्चना ।

सकिञ्चन पस्स विहञ्जमान, जनो जनहि<sup>५</sup> पटिवचचित्तो ॥६॥

## ( १७—एकपुत्त-सुत्त २।७ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा सावत्थिय विहरति जेतवने अनार्यापिण्डिकस्स आरामे ।

तेन सो पन समयेन अञ्जतरस्स उपासकस्स एकपुत्तको पियो मनापो कालङ्कतो होति । अथ सो सम्बहुला उपासका अल्लवत्था अल्लवेसा दिवादिवस्स । येन भगवा तेनुपसङ्गमिमु । उपसङ्गमिन्वा भगवन्त अमिवादेवा एकमन्त मिसीदिमु, एकमन्त निमिन्ने सो ते उपासके भगवा एतद्वोच— 'किन्नु तुम्ह उपासका अल्लवत्था अल्लवेसा इधुपसङ्गमन्ता दिवादिवस्सा' ति ?

एवमुत्ते सो उपासको भगवन्त एतद्वाच—“मग्ग्ह सो भन्ते । एकपुत्तको पियो मनापो कालङ्कतो, तेन मय अल्लवत्था अल्लवेसा इध उपासकमन्ता दिवादिवस्सा”ति ।

अथ सो भगवा एतमत्थं विदित्वा ताव वेलाय इम उदान उदानेसि—  
पियरूपा सातगधिता<sup>२</sup> वे देवकाया पुष्पमानुसा च  
अथाविनो परिजुष्ठा मच्चुराजस्स वस गच्छन्ति ।  
य वे दिवा च रत्तो च अप्पमत्ता जहन्ति पियरूप,  
त वे खणन्ति अधमूल मच्चुनो आमिस्स दुरतिवत्तति ॥७॥

## ( १८—सुप्पवासा-सुत्त २।७ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा कुण्डिकाय<sup>१</sup> विहरति कुण्डिकानवने<sup>२</sup> ।

तेन सो पन समयेन सुप्पवासा<sup>३</sup> कोलियधीता<sup>४</sup> सत्त वस्सानि गम्भ धारेति

१७ <sup>१</sup>C दिवादिवस्सा'ति दिवसस्स पि दिवा भज्जान्तिके काले'ति अत्थो

<sup>२</sup>AC पियरूपासात°, B पियरूपसागतदे, D पियरूपसातगविधिता,  
C व्याख्यायते ये पियरूपेसु अस्सादेन गिच्छा त पियरूपा  
सातगभिता (?)

१८ <sup>१</sup>C कुण्डिकाय, D कुण्डिकाय

<sup>२</sup>So AB कुण्डिकानवने, C कुण्डिकानवने, D कुण्डिकानवने

<sup>३</sup>AD अवचित—सुप्पवासा <sup>४</sup>A प्रायेण—कोलियो°, B C D

कोलिय° C कोलियधीता'ति कोलियराजधीता



तेनूपसङ्गमिता, उपसङ्गमित्वा भगवन्तं एतन्नाथ—‘मञ्जसो भजे ! सो  
उपासका पया, बरागु गुण्यवासा कोऽपिधीता सत भस्ताति पच्छा मा  
वरिस्ताती’ नि ।

अथ सो गुण्यवामा कोऽपिधीता सताहं बुद्धपमृगं भिन्नसुखं वर्णात्ता मात्ताया  
भोजनीयेन सत्त्वा सन्त्येभि मय्यपारेभि, तं च दारवं भगवन्तं वप्येभि मय्य  
च भिन्नसुखं । अथ सो आयम्मा गारिपुतो तं दारवं एतद्दोत—‘कच्चि त  
दारवं । समनीयं कच्चि यापनीयं, कच्चि न तिष्ठि दुक्कं नि ?

‘कुतो मे भजे गारिपुत ! समनीयं कुता यापनीयं । मत्त वस्ताति मे  
लोहितादुम्भिया’ द्वाती’ नि ।

अथ सो गुण्यवामा कोऽपिधीता— पुता मे पय्यसागणिता गडि मन्नेती  
ति अत्तममा पमुदिता पीतितामनस्ताजाता अहोमि । अथ सो तावा सुण्यवात  
कोऽपिधीतर एतद्वात—‘इच्छेय्यामि त्वं गुण्यवाम । अञ्ज नि एवम्पं पुत्त’ नि ।

इच्छेय्यामहं भगवा । अञ्जाति पि एवम्पानि सत पुत्तानी’ नि ।

अथ सो भगवा एतमत्तं विन्त्वा ताव पय्य इमं उता उतामनि—

असातं सातरूपं पियरूपं अपिय

दुत्थ सुग्गसं म्मेन पमत्तमनिवत्ताती<sup>३</sup> नि ॥८॥

### ( १६—विस्तरा-सुत्त २।६ )

एव मे सुत्तं—एष समम भगवा सावत्थियं बिहरति पुच्छारत्ते मिगारमातु-  
पात्तावे ।

ततं सो पन समयन विस्तरात्ताय मिगारमातुपा पाविन्व अत्थो रञ्जो  
पमेनन्निम्हि<sup>१</sup> कोसले पटिब-या<sup>२</sup> होति । त राजा पमेनदि कोसलो न यथाधिप्याय  
सीरेति । अथ सो विस्तरा मिगारमाता विन्वाविस्सव यन भगवा तेनूपसङ्गमिता  
उपसङ्गमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमत्तं निसीनि, एकमत्तं निसिन्नं सो

<sup>१</sup>CD °य, A °कुम्भिया C लोहितरम्भियं वट्टानी’ति मातु-कुच्छिय  
अत्तनो गभावासदुक्खं सत्ताय वदति

<sup>२</sup>D अहं, इच्छेय्यहं <sup>३</sup>C व्याख्यायते—अतिवर्तति अभिभवति

<sup>४</sup>B पत्तेनदिकोसले °B°बद्धो पटिब-य-पटिबद्ध, E Muller,  
P L P 22, D पश्चात् °बद्धो, AC°अथो°

विसाख मिगारमातर भगवा एतद्वोच—“हन्द<sup>१</sup> कुतो नु त्व विसाखे, आगच्छसि दिवादिवस्सा”ति ?

“इध मे भन्ते कोचिदेव अत्थो प तीरे”ति ।

अथ खो भगवा एतमत्थं विदित्वा तां वेलाय इम उदान उदानेसि—

सब्ब परवस दुक्ख, सब्ब इत्सरिय सुख ।

साधारणे<sup>१</sup> विहञ्जन्ति, योगा हि दुरतिक्कमा<sup>२</sup> ति ॥१॥

### ( २०—महिय-सुत्त २।१० )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा अनुपियाय विहरति अम्बवने ।

तेन सो पन समयन आयस्मा भद्दियो कालिगोघाय<sup>२</sup> पुत्तो अरञ्जगतो पि खवमूलगतो पि सुञ्जागरगतो पि अभिक्खण उदान उदानेसि—अहो सुख अहो सुख<sup>३</sup> न्ति । अस्मोनु सो सम्बहण भिक्खू आयस्मता भद्दियस्य कालि गोघाय पुनम्म अरञ्जागतस्स पि खवमूल गतस्स पि सुञ्जागरगतस्स पि अभिक्खण उदान उदानेन्तस्म । सुत्थान तेस एतदहोसि—‘निस्ससय खो आवुसो<sup>१</sup> । आयस्मा भद्दियो कालिगोघाय<sup>२</sup> पुत्तो अनभिरता ब्रह्मचरिय खरति, यस्स पुब्बे अगारिक भूतस्स<sup>३</sup> रज्जसुख<sup>४</sup> सोत अनुत्सरमाना अरञ्जगता पि अभिक्खण उदान उदानेनि—अहो सुख अहो सुख<sup>३</sup> न्ति ।

अथ रतो सम्बहूला भिक्खू यन भगवा तेनुपसङ्कमिसु उपसङ्कमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निमीदिसु, एकमन्त निसिन्ना खा ते भिक्खू भगवन्त एतद्वोचु—‘आयस्मा भन्त । भद्दियो कालिगोघाय पुत्तो अरञ्जगतो पि उदानेनि—‘अहो सुख सुख<sup>३</sup> न्ति । निस्ससय खो भद्दयो कालिगोघाय पुत्तो अनभिरतो पे अहोसुय<sup>३</sup> न्ति ।

<sup>१</sup>C व्याख्यायते साधारणा पयोजने साधेतब्बे सति

२० इष्टं च चूलवगा, ७।१, ५ १० जातके च

<sup>३</sup>A क्वचित् कालि<sup>०</sup> BCD कालि<sup>०</sup> सवत्र

<sup>३</sup>C य सो पुब्बे अगारिय भूतो समानोति यत्वा अनुभावो<sup>३</sup> ति वचनसेत्तेन केचि अत्थ वणणति अपरे सथा निपठन्ति य स पुब्बे अगारियभतस्सा<sup>३</sup> ति तत्थ य सा<sup>३</sup> ति य अस्स (१) य पुब्बे अगारिय<sup>०</sup>, पश्चात्—सय पुब्बे, पश्चात्—य पुब्बे

<sup>४</sup>A रज्जस<sup>०</sup>

तनुपसङ्गमि, उपसङ्गमिता भगवन्त एतयोः— 'मञ्जुतो भन्त ! सो  
उपासते मया, करोतु मुण्यासा कोऽप्यधीता मत्त भताति पञ्चा सा  
वरिस्मयी' ति ।

अथ सो मुण्यासा कोऽप्यधीता सत्ताहं वृक्षपुष्पं भिक्कुगुणं पणीतेन ग्राहनीयेन  
भोजनीयेन गृह्णत्या सन्नपेमि मम्पवारमि, तं च दारणं भगवन्त वत्तापमि मञ्ज  
प भिक्कुगुणं । अथ सो आयरमा सागिगुता तं गारणं एतद्धार— 'कञ्चि ते  
दारण ! समीर्यं, कञ्चि मापनीयं, कञ्चि न विञ्चि दुवम् न्ति ?

कुतो न भन्त सास्तिपुत्त ! समीर्यं कुतो मापनीयं । सत्त वत्सानि म  
लोहिक्कुम्भिया<sup>१</sup> द्धाना<sup>२</sup> ति ।

अथ सो मुण्यासा कोऽप्यधीता— 'कुतो म धम्ममनापतिना सङ्घि मन्ती  
ति अत्तमना पमुत्तिना पीतिसोमनस्सजाता अहोमि । अथ सो भगवा मुण्यासा  
कालियधीतर एतद्धार— 'इच्छय्यासि त्वं मुण्यामे<sup>३</sup> । अञ्जं पि एवम्प पुत्त' ति ।

'इच्छय्यामह<sup>४</sup> भगवा । अञ्जानि पि एवम्पानि सत्त पुत्ताना ति ।

अथ सो भगवा एतेमयं विन्त्वा तावं वत्तामं इम उत्ता उदानमि—

असां सातरपन पियस्सेन अप्पियं

दुक्खं गुणरसा रूपेण पमत्तमनिवत्ता<sup>५</sup> ति ॥८॥

### ( १६—विमाता-सुत्त २।६ )

एवं मे सुत्त—एवं समय भगवा सावत्थियं विहरन्ति पुम्बारामे मिगारमातु-  
पासादे ।

तेन सो वन समयन विसाखाय मिगारमातुया कोविन्देव अत्था रञ्जे  
पत्तेनदिमिह<sup>६</sup> कोसले<sup>७</sup> पटिवघो<sup>८</sup> होति । त राजा पत्तेनदि कोसले न मयाधिप्पाय  
तीरेति । अथ सो विसाखा मिगारमाता दिवादिक्खमेव वन भगवा तनुपसङ्गमि  
उपसङ्गमिता भगवन्तं अभिवात्त्वा एवमन्तं निसीत्ति, एवमन्तं निमिन्न सो

<sup>१</sup>CD °य, A °कुम्भिया, C लोहिनकम्भिय द्धानी'ति मातु-कुच्छिय  
अस्तो गम्भावासादुक्खं स चायं वदति

<sup>२</sup>D अह, इच्छेय'ह <sup>३</sup>C व्याख्यायते—अतिवत्तति अभिभवति

<sup>४</sup>B पत्तेनदि कोसले °B° बद्धो पटिवघ=पटिवद्ध, E Muller  
P L P 22, D पश्चात् °बद्धो AC° बघो°

विस्तारं विगारमातर भगवा एतद्वोच—“ह”<sup>१</sup> कुनो नु त्वं विस्तारो, आगच्छसि  
निवादिवस्ता<sup>२</sup> नि ?

“इय मे भन्ने कोचिदेव अत्यो पे तीरे”ति ।

अय सो भगवा एतमर्थं विन्त्वा ताव वेत्ताय इम उदान उदानेनि—

सव्य परवस दुस्स, सव्य इस्सरिमं सुत्त ।

साधारणे<sup>३</sup> विहज्जन्ति, यागा हि दुरतिक्कमा<sup>४</sup> नि ॥९॥

### ( २०—भद्वि-मुत्त २।१० )

एव मं सुत्त—एव समय भगवा अनुपियायं विहरनि अम्भजने ।

तेन खो पन समयन आयस्मा भद्विो कालिगोघाय<sup>५</sup> पुत्तो अरज्जगतो पि  
रक्खमूगगतो पि मुज्झागरगतो पि अभिक्खण उग्न उग्ननेसि—‘अहो सुख अहो  
मुख’न्ति । मत्तो<sup>६</sup> खो सम्महुत्त भिक्खू आयस्मना भद्विस्य कालि गोघाय  
पुत्तस्स अरज्जात्तम्म पि रक्खमूलं गनस्स पि मुज्झागरगतस्स पि अभिक्खण  
उग्न उदानेनस्म । सुत्थान तेस एत’होसि—‘निस्ससय खो आवुत्तो’<sup>७</sup> आयस्मा  
भद्विो कालिगोघाय<sup>८</sup> पुत्तो अनभिगतो बह्वावरिय चरति, यस्म पुब्बे अगारिय  
भूतस्स<sup>९</sup> रज्जसुख<sup>१०</sup> सोत्त अनुस्सरमाना अरज्जगतो पि अभिक्खण उग्न  
उदानेनि—अहो सुख अहो मुख’न्ति ।

अय खो सम्महुत्ता निक्खू येन भगवा तेनुपसद्धमिसु उपसद्धमित्वा  
भगवन्त अभिवादत्वा एवमन्त निसीत्तिसु, एवमन्त निसीत्ता खो ते भिक्खू  
भगवन्त एत’वोचु—‘आयस्मा भन्ने ! भद्विो कालिगोघाय पुत्तो अरज्जगतो  
पि उदानेति—अहो सुख सुख’न्ति । निस्ससय खो भद्विो कालिगोघाय  
पुत्ता अनभिगतो पे अहोमुख’न्ति ।

<sup>१</sup>C व्याख्यायते साधारणो पयाजने साधेतब्बे सति

<sup>२</sup>० इष्टं च चत्तलदण, ७।१, ५ १० जातके च

<sup>३</sup>A क्वचित् कालि° BCD कालि° सबत्र

<sup>४</sup>C य सो पुब्बे अगारिय भूतो समानोति वत्था अनुभावो’ति वचनसेसेन केचि  
अत्य वण्णति अयरे सघा निपठन्ति य स पुब्बे अगारियमतस्मा’ति तस्य  
य सा’ति य अस्स (!) य पुब्बे अगारिय°, पश्चात्—सय पुब्बे,  
पश्चात्—य पुब्बे

<sup>५</sup>A रज्जसु°

अथ सो भगवा अञ्जार्दं भिरगु आमन्त्रमि—“एहि त्वं नित्स्वु! मम परना भदियं भिरगु आमन्त्रमि—गत्वा तं आवुमा भदिय, आमन्त्रि” ति।

“एषं भन्ते” ति सो सा भिरगु भगवता पटिस्मुवा यना यस्मा तदिया काञ्चिगोषाय पुत्तो तन् उप्तद्वयमि उप्तद्वयमित्वा आयन्तं भदियं काञ्चि गोषाय पुत्त एतन्पोष—“सत्वा तं आवुमो भदिय! आमन्त्रि” ति?

“एवं आवुमो” नि सो आयम्मा भदियो काञ्चिगोषाय पुत्तो तस्मा भिरगुना पटिस्मुत्वा यन भगवा तनुपगच्छामि उप्तद्वयमित्वा भायनं अभिवात्त्वा एतपन्तं नितीदि। एषमन्तं निमित्तं सो आयरयन्तं भदियं काञ्चिगोषाय पुत्तं भगवा एतद्वोच—“सञ्च निर रं भदिय! अरञ्जगतो वि गुम” नि?

एषं भन्तं ति।

वं पन त्वं भदिय, अथयनं सम्पत्तमानो अरञ्जगतो गुम’ न्ति?

“पुत्रे मे भन्त अगारिषभूनस्स रज्जगुम करोन्ताम्” अतो वि अन्नेपुरे रक्ता सुगविहिता अहोसि यहिणि अन्नेपुरे रक्ता सुगविहिता अहोसि। अतो वि नगरे रक्ता सुगविहिता अहोमि यहि नि नगरे रक्ता सुगविहिता अहोसि। अतो वि जनपदे रक्ता सुगविहिता अहोसि यहि नि जनपदे रक्ता सुगविहिता अहोमि। सा गो अहं भन्ते। एष रक्कितो गोपिनो सतो भीतो उच्चिगो उस्मच्छनी उत्तरता विहासि। एतरेहि सो पा अहं भन्ते। अरञ्जगतापि दग्गमूलगता वि गुञ्जागारगतो वि एतको अभीनो अनुच्चिगो अनुत्तद्वरी अनुत्तन्तो अप्पोमुत्तो पत्ततोमो परववुत्तो<sup>१</sup> मिगभूतं चेतसा विहरामि। इमं<sup>२</sup> सो अहं भन्ते। अत्थयता सम्पत्तमानो अरञ्जगतो वे उदानेमि गुम’ न्ति।

अथ सो भगवा एतमत्थं विदित्वा ताय वलायं इमं उदानं उपासि—

यस्सत्तरतो न गन्ति गोपा इति भयामवतञ्च धीतिवत्तो।

सं विगतमयं सुधि अतावं दवा नानुभवन्ति दग्गाया नि ॥१०॥

मुचल्लिन्द-वग्गो<sup>३</sup> बुत्तिषो

तस्सुदान—

मुचल्लिन्दो<sup>४</sup> राजा दण्डे न सक्कतो उपासयेव च

यदिमदी एषपुत्तो च सुप्पवासा विस्सत्ता च काञ्चिगोषाय भदियो? ति।

<sup>१</sup>A°सी °A रज्जगुम करन्तस्स, D°करोन्तस्स, B रज्ज वारेन्तस्स  
<sup>२</sup>AC परववुत्तो B चरदवुत्तो D परववुत्तो C (=अट्ठक्का) पुत्तवे  
 व्याख्यायत—परेहि निन्न चिवराविता वत्तमानो [ चुल्लवग्ग पाठ —परववुत्तो ]

\*A इव A भुञ्च <sup>६</sup>ABDआ <sup>७</sup>A°अत, BD°आ

### ३—नन्दयगो

( २१—कम्म-सुत्त ३।१ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा सायत्थिय विहरति जेतवने अनायपिण्डकस्स आरामे ।

तेन खो पन समयेन अञ्जतरो भिक्खु भगवतो अविदूरे निसिघो होति पल्लङ्क आभुजित्वा उज्जु वाय पणिधाय पुराणकम्मविपाकज दुक्ख तिप्प<sup>१</sup> खर कट्ठक वेदन अधिवासन्तो सता सम्पजाना अविहञ्जमानो । अहसा खो भगवा स भिक्खु अविदूरे निसिन्न पल्लङ्क आभुजित्वा पे वेदन अधिवासेन्त सत सम्पजान अविहञ्जमान । अय खो भगवा एतमत्थ विदित्वा ताय वेलाय हम उगग उदानेसि—

सञ्चकम्मजहस्स<sup>२</sup> भिक्खुनो धुनमानस्स पुरेक्ख रज ।

अममस्स ठिनस्स<sup>३</sup> तान्निनो अत्थो नयि जन लपेत्तवे<sup>४</sup> ति ॥१॥

( २२—नन्द-सुत्त ३।२ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा सावत्थिय विहरति जेतवने अनायपिण्डकस्स आरामे ।

तेन खो पन समयेन आयस्सा नदो भगवतो भाता मातुच्छापुत्तो सम्बहुलान भिक्खून् एवमारोवेति—“अनभिरतो अह आवुसो<sup>१</sup> । ब्रह्मचरिय चरामि, न सक्खोमि ब्रह्मचरिय सधारेतु,<sup>२</sup> सिक्ख पन्वक्खाम हीनाय<sup>३</sup> आवत्तिस्सामी<sup>४</sup>,” ति ।

२१ <sup>१</sup> द्रष्टव्य E Muller, P L p, 38 <sup>२</sup> A कम्महस्स <sup>३</sup> AB °धि

२२ <sup>४</sup> C व्याख्यायते सधारेतुन ति पवत्तेतु °C हीनाय्या<sup>५</sup> ति गिहिभावाय आवत्तिस्साम<sup>६</sup> ति निवत्तिस्सामि

अथ सा अञ्जारा विभु या भगवा तां उपमद्रवमि उपमद्रवमिवा  
भावन अभिरात्वा एवमन्त निमीति एवमन्त निमित्रो सा सो भिन्नु भगवन्त  
एतन्नाह— आयस्मा नन् । नन् भगवा भाता मातुञ्जापुता मन्त्रुत्तानं  
भिन्नुन एवं जातोति—आभिरात्वा य आयसिस्मामी ति ।

अथ सा भगवा अञ्जार भिन्नु, आयस्मामि—' एति त्व भिन्नु । मम  
वचनन नद भिन्नु आयस्मामि—' मया तं आयुसो नन् । आयस्मामि' ति ।

एव मन्त । ति सा सो भिन्नु भगवन्ता पटिरमुत्वा यतायस्मा नन्तो  
मनुमद्रवमि उपमद्रवमिवा आयस्मामि नन् एतन्नाह— सत्पा तं आयुमा  
नन् । आयस्मामि' ति ।

एव आनुमा ति सा आयस्मा नन्ता तन्म भिन्नुतो पटिरमुत्वा यो भगवा  
तेनु पमद्रवमि, उपमद्रवमिवा भगवन्त अभिरात्वा एवमन्त निमीति, एवमन्त  
तिमित्तो आयस्मामि नन् भगवा एतन्नाह—' सत्त्वं किर त्व नन् । सत्त्वं  
भिन्नुन एवमागममि—अनभिरतो य आवसिस्मामी ति । विष्म पन त्वं  
नन् । अनभिरतो ब्रह्मचरिय चरति, न सत्त्वंमि ब्रह्मचरिय सत्त्वातेनु  
मित्रं पञ्चकमय हीतापायसिस्मामी ति ?

"सावित्री" (म) २ मन्त । जनपत्तस्यापी धरा विष्ममन्त उपद्रुत्तिमि  
सहि ३ वमहि अत्रावन्ता म एतन्नाह—' गुवन्तो नो अय्यपुत्त । आगच्छेय्यासी  
ति । सो सा अन् मन्त तं अनुस्मरमानो अनभिरतो ब्रह्मचरिय चरामि न सत्त्वंमि  
ब्रह्मचरिय सत्त्वातेनु आवसिस्मामी' ति ।

अथ सो भगवा आयस्मामन्त नद बाहाय गृह्णत्वा सेय्यया वि नाम वन्ता  
पूरितो मम्मिञ्जित ४ वा बाहं पमारय्य पमारितं वा बाहं सम्मिञ्जय्य, ५ एवमन्तं  
जेतवन्ते अन्तराह्वो दधेसु तावतिगेसु पानुरहोसि । तन स्यो पन समयेन पञ्च  
मत्तानि अञ्जारातानि सत्त्वंस्त देवानमिन्त उपद्रुत आगतानि हान्ति वकुट  
पादिनी ६ ति । तेन सा भगवा आयस्मामन्त नद आयस्मामि—' पत्तासि नो त्व  
नन् । इमानि पञ्च अञ्जारातानि वकुटपादिनी' ति ?

"एव मन्ते !' ति ।

१ A सावित्रीया, C सावित्रीनी'ति सत्त्वंराजघीता

२ नास्ति II

३ C उपद्रुत्ति लिनेहि अद्रुत्ति लिनेहि पि पठन्ति, ४ A उपनि लिनेहि,  
D उपद्रुत्ति लिनेहि

५ C वकुटपादिनी'ति पारापतसदिसपादिनी (०६?), ABD  
कुलकुट

“त किम्मञ्जासि नन्द ! कतमा नु खो अभिरूपतरा वा दस्सनीयतरा वा पासादिकतरा वा साकियानी<sup>१</sup> वा जनपदकल्याणी इमानि वा पञ्च अच्छरासतानि ककुटपादिनी” ति ।

“सेय्यथा पि भन्ते पलुट्ठमक्खटी<sup>२</sup> कण्णनासच्छिन्ना, एवमेव खो भन्ते ! साकियानी जनपदकल्याणी इमेस पञ्चन अच्छरासतान उपनिधाय सट्ठय्य<sup>३</sup> पि न उपेति कलभाय पि न उपेति उपनिधि पि न उपति । अथ खो इमानि पञ्च अच्छरासतानि अभिरूपतरानि चैव दस्सनीयतरानि च पासादिकतराणि च” ति ।

“अभिरम नन्द ! अभिरम नन्द ! अहं ते पाटिमोगो पञ्चन अच्छरासतान पटिलाभाय ककुटपादिनीन ति । स च म भन्त भगवा पाटिमोगो पञ्चन अच्छरासतान पटिलाभाय ककुटपादिनीनन्ति ।

‘अभिरमिस्सामह भन्ते’ भगवा ब्रह्मचरिये’ ति ।

अथ खो भगवा आयस्मन्त नन्द बाहाय गहेत्वा सेय्यथा पे सम्मिञ्जय्य, एयमेव दवेसु तावत्तिसेसु जन्तरहितो जेतवने पातुरहोसि । अस्सोसु खो भिक्खू—‘आयस्मा किर नन्दो भगवतो भाता मातुच्छापुतो अच्छरान हेतु ब्रह्मचरिय चरति, भगवा किर अस्स पाटिमोगो पञ्चन अच्छरासतान पटिलाभाय ककुटपादिनीन’ इति ।

अथ खो आयस्मतो नन्दस्म सहायका भिक्खू आयस्मन्त नन्द भतकवादेन च उपविक्तकवादेन<sup>३</sup> च समुदाचरन्ति—,भतको किरायस्मा नन्दो, उपविक्तको किरा’ यस्मा नन्दो अच्छरान हेतु ब्रह्मचरिय चरति । भगवा किर अस्स पाटिमोगो पञ्चन अच्छरासतान पटिलाभाय ककुटपादिनीन’ ति । अथ खो आयस्मा नन्दो सहायकान भतकवादेन च उपविक्तकवादेन च अट्टिममानो हरायमानो जिगुच्छियमानो एको वूपकट्ठो अप्पमतो आतापी पहिततो विसारदो नचिरस्सव यस्मत्पाय कुलपुत्तो सम्मदेव अवारस्मा अनामारिय पब्बजति, तदनुत्तर ब्रह्मचरियपरियोसान दिट्ठे’ व धम्मे सय अभिञ्जा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहासि—‘खीणा जाति, युत्ति ब्रह्मचरिय क्त करणीय, ना पर इत्थत्ताया’ति अम्मञ्जासि । अञ्जतरो खो पनायस्मा नन्दो अरहत्<sup>४</sup> अहोसि ।

अथ खो अञ्जतरा देवता अतिककन्ताय रत्तिथा अभिवक्कन्तवणा केवलकप्प

<sup>१</sup> C पलुट्ठ मक्कति’ति क्षामङ्ग मक्कटी’, A पण्ड, D पलुद, B पमुद

<sup>२</sup> BC सल

<sup>३</sup> C व्याख्यायते—उपसक्कितकवादेना’ति यो क्हापनाप दीहि विञ्चि किनाति सो उपक्किको’ति युच्चति, A उस°      <sup>४</sup> ABC अरहत्



ज्वावन् आभागेना यत् भगवा तेनुसङ्गमि, उपमङ्गाभित्वा भगवन् अभिया  
त्या एवमन्त अट्टासि, एवमन्ति टिगा सा सा देवता भगवन् एतदवोव—  
आयस्मा भन्त ! तन् भगवन्तो भाता मातुच्छापुता आगवा गवा आगम  
प्राविर्मुनि पञ्चाविर्मुनि दिद् य धम्म गदं अनिञ्जा मत्तिगत्ता  
उपास्यता विहरती' ति ।

भगवन्तोपि ज्ञानं उत्पत्ति—'नन्ते आसुवा गवा विहरता नि । अय  
सो आयस्मा तन्ते तस्मा रसिया अचावेन येन भगवा तनुपमङ्गमि, उपमङ्ग-  
मत्तिवा भगवन्तं अविवात्ता एवमन्ति तिगीति, एवमन्ति निमित्ता सो आयस्मा  
तन्ते भगवन्तं एतवोर—'य म भते ! भगवा पाटिभोमा पञ्चमं अष्टरासान  
पाटिगत्ताप मातुच्छापिना न मुञ्चताम' भन्त ! भगवन्तं एतस्मा पत्तिस्सया नि ।

'ममा नि सो त तन्' । भामा चना परिचय विन्तो—नन्ते आमयानं  
गवा विहरती' ति ।- यवतापि म एतमस्य आरोवेमि—आयस्मा भन्त ! तन्ता  
भगवा भाता मातुच्छापुतो आगवा गवा विहरता नि । यत्त सा त  
नन्ते' अनुपात्ताय आमपेहि चित्त विमुनं अघातं' मुत्ता एतस्मा पत्तिस्सया नि ।

अथ सो भगवा एतमस्य विन्तिवा ताव वेत्ताय इमं उवा उत्तानि—  
यस्त निस्सिणो पद्धतो महिता वागएत्ततो ।

मात्तागवे अनुप्पत्ता तुगदुत्ता तु म वर्या म भिस्सू नि ॥२॥

### ( २३—यसोज-मुत्त ३।३ )

एवं मे मुने—एवं समय भगवा सायस्सियं विहरति जतघने अनापविणि  
वस्त आरामे ।

तेन सो पन समयेन यसोजपमुगानि पञ्चमत्तानि भिक्खुसत्ताणि मावत्थि  
अनुप्पत्तानि होन्ति भगवन्त दस्सनाय । ते च अगन्तुवा भिस्सू नवासिक्केहि  
भिक्खूहि सङ्घि पटिसम्मोत्तमाना सेनासनानि पञ्चापयमाना पत्तचीवरानि  
पटिसामयमाना उच्चासद्दा<sup>१</sup> महासद्दा अहसु । अथ सो भगवा आयस्मन्त आन च  
आमन्तेसि—'वे पनेते आनन्द ! उच्चासद्दा<sup>२</sup> महासद्दा वेवद्दा मञ्जे मच्छ  
विन्तोपेति ?

<sup>१</sup> A मुच्चासद्दाह, D मञ्चाह

<sup>२</sup> AB पाठ—वेवापि—इत्यस्य स्थान योस्यते

<sup>३</sup> AD अस्ताह BC अवाह २३ \* A०७

<sup>४</sup> A सो

“एतानि भन्ते ! यसोजपमुत्तानि पञ्चमत्तानि भिक्खुसत्तानि सावत्थि अनुपत्तानि भगवन्त दस्सनाय । ते च आगन्तुका प पत्तिसामयमाना उच्चासद्दा<sup>१</sup> महासद्दा<sup>१</sup> ति ।

“तेन हानद<sup>१</sup> मम वचनन ते भिक्खू आमन्तेहि—सत्था आयस्मन्ते आममन्ते<sup>१</sup> ति ।”

‘एव भन्ते ।’ ‘ ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पटिस्सुवा यन ते भिक्खू तेनुपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा ते भिक्खू एतदवोच—“मया आयस्मन्ते अमन्तेती” ति ।

‘एव आवुसो’ ति खो स भिक्खू आयस्मतो आनदस्म पटिस्सुवा येन भगवा तेनुपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसीदिमु एकमत निसिन्न खो ते भिक्खू भगवा एतदवोच—“वि नु तुम्हे भिक्खवे । उच्चासद्दा<sup>१</sup> महासद्दा<sup>१</sup> केवद्दा मज्जे मच्छ विलोपा ति’

एव वुत्ते आयस्मा यमोजो भगवन्त एतदवोच—“इमानि भन्ते । पञ्चम त्तानि भिक्खुसत्तानि सावत्थि अनुपत्तानि भगवत दस्सनाय । ते मे आगन्तुका भिक्खू प पटिसामयमाना उच्चा सद्दा<sup>१</sup> महासद्दा<sup>१</sup> ति ।

‘गच्छया भिक्खव । वो पणामेमि, न यो मम सन्तिके वनव्वति ।

‘एव भन्ते ।’ ति खो ते भिक्खू भगवतो पटिस्सुवा उद्वायासना भगवन्त अभिवादेत्वा पदक्खिण क्त्वा, सनामन पटिसामत्वा पत्तचीवर मादाय यन वज्जी तेन चारिक पक्कमि सु ।<sup>१</sup> वज्जीमु अनुपुब्बेन चारिकञ्चरमाना येनवग्गुमुदा<sup>२</sup> नदी, तेनुपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा वग्गुमुदाय नदिया तीरे पण्णकुटियो क्त्वा वस्स उपगच्छिमु<sup>३</sup> ।

अय खो आयस्मा यसोजो वस्सुपगतो भिक्खू आमन्तेसि—‘ भगवता मय आवुसो ! पणामिता अत्थकामेन हितेसिना अनुकम्पकन अनुकम्प उपादाय । हन् । मय आवुसो, तथा विहार कप्पेम, यथा नो विहरत भगवा<sup>४</sup> अत्तमनो अस्सा’ ति ।

“एव आवुसो ।’ ति खो भिक्खू आयस्मतो यसोजस्स पञ्चस्सोसु ।

अय खो ते भिक्खू वूपवद्दा अप्पमत्ता आतापिनी पहितत्ता विहरन्तो तनेव-  
न्नरवस्सेन सग्गेव तिसो विज्जा मज्झीकमु<sup>५</sup> ।

<sup>१</sup> B पक्कमिमु

<sup>२</sup> B वग्गुमुदा—इति सयथ

<sup>३</sup> Mss<sup>०</sup> ई °इयु स्याने

<sup>४</sup> B °गच्छिमु

<sup>५</sup> AD भगवतो

<sup>५</sup> B सच्छारात्तु, C सच्छिकारिमु

अथ सा भगवा सावत्थियं यथाभिरत्तं विहारित्वा येन वसाली तेन चारिक् पक्कमि<sup>१</sup> अनुपुब्बन चाग्गि चरमानो येन वसाली तदवसरि । तत्र मुद भगवा वसालिय विहरनि महावने कूटागारमालाय ।

अथ सो भगवा वग्गुमुदातीरियान भिक्खून चेतसा चेतो परिच्च मनसिक् रित्वा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि— 'आलोकजाना विय मे आनन्द' एसा त्ति सा जाभासजाता विय मे आनन्द एसा दित्ता, 'यस्स दित्ताय वग्गुमुदातीरिया भिक्खू विहरन्ति गन्तु' अप्पटिकूणासि भ<sup>२</sup> मनसिक्कातु । पहिण्य्यासि त्वं आनन्द ! वग्गुमुदातीरियान भिक्खून सन्तिके दूत—सत्था आयस्मन्ते आमन्तति<sup>३</sup> सत्था आयस्मन्तान दस्सनकामा ति ।

एव भन्ते ।' ति सो आयस्सा आनन्दो भगवतो पटिस्सुत्वा येन अञ्जतरो भिक्खु तत्त उपमद्रक्कमि उपसद्वक्कमित्वा त भिक्खु एतदवाच— एहि त्व आवुत्तो । यत्त वग्गुमुदातीरिया भिक्खू तेनुपसद्वक्कम, उपसद्वक्कमित्वा वग्गुमुदातीरिये भिक्खू एव वनेहि—सत्था आयस्मने आमन्तेति सत्था आयस्मन्तान दस्सनकामो ति ।

एव आवुत्तो । ति सो सो भिक्खु आयस्मतो आनन्दस्स पटिस्सुत्वा सय्यथापि नाम वल्लया पुरिमो सम्मिञ्चित वा वाह पसारय्य पसारित वा वाह सम्मिञ्जेय्य एवमेव महावने कूटागारमालायमन्तरहिणो वग्गुमुदाय नदिया तीरे तत्त भिक्खून पुरतो पातुरहाति ।

अथ सो भिक्खु वग्गुमुदातीरिये भिक्खू एतदवाच— सत्था आयस्मन्तो आमन्तेति सत्था आयस्मन्तान दस्सनकामो ति ।

एवमावुत्तो ।' ति सो सो भिक्खू तत्त भिक्खूनो पटिस्सुत्वा वेनासन् पटिसामेत्वा पत्तचीवरमादाय सय्यथा वे सम्मिञ्जेय, एवमेव वग्गुमुदाय नदिया तीरे अन्तरहिता महावने कूटागारमालाय भगवतो सम्मुखे पातुरहसु ।

तत्त सो पत्त समयेन भगवा आञ्जन<sup>७</sup> समाधिना निमित्तो होति । अथ सो तेत्त भिक्खून एतदहोसि— कतमेन नु सो भगवा विहारेत्त एतरहि

<sup>१</sup> B °आमि

°A एतदित्ता

<sup>२</sup> पुस्तकयो —यस्स दित्ताय जायामा इत्यस्य स्थाने <sup>४</sup> नास्ति C B भन्ते

<sup>३</sup> A प्पटिकूल आसिमे, नास्ति D

<sup>६</sup> A °सि

<sup>७</sup> A आनञ्जेत्त, C आनञ्जसमाधिना

आनञ्जेत्त°पि पाठो

विहरतीति । अथ सो तेस भिक्षून एतदहोसि—‘आनञ्जेन<sup>१</sup> या भगवा विहारेण एतरहि विहरती’ ति सब्ब<sup>२</sup>व आनञ्जन समाधिना निसीदिसु ।

अथ सो आयस्मा आनन्दो अभिक्वन्ताय रत्तिया निक्वन्ते पठमं याम उट्ठायासना एकस चीवर वरित्वा येन भगवा तेन अञ्जलि<sup>३</sup> पणामत्वा भगवन्तमेन<sup>४</sup>वाच—‘अभिक्वन्ता भन्ते । रत्ति निक्वन्तो<sup>५</sup> पठमो यामो चिरनिसिन्ना आगन्तुका भिक्षू । पटिसम्भोदतु भन्ते । भगवा आगन्तुकेहि भिक्षूही’ति ।

एव धुत्ते भगवा तुण्ही<sup>६</sup> अहोमि । दुनिय पि सो आयस्मा आनन्दो अभिक्वन्ताय रत्तिया निक्वन्ते मज्झिमे याम उट्ठायासना एवम चीवर वरित्वा येन भगवा तेनञ्जलिम्पणामत्वा भगवन् एतदवोच—‘अभिक्वन्ता भन्त । रत्ति निक्वन्तो मज्झिमो यामो, चिरनिसिन्ना आगन्तुका भिक्षू पटिसम्भोदतु भन्ते । भगवा आगन्तुरहि भिक्षूही’ति ।

दुतियमि सा भगवा तुण्ही अहोसि ।

ततियमि सो आयस्मा आनन्दो अभिक्वन्ताय रत्तिया निक्वन्ते पच्छिमे याम उट्ठते<sup>७</sup> अरणे नदिमूखिया रत्तिया उट्ठायासना एसस चीवर वरित्वा येन भगवा तेनञ्जलिम्पणामत्वा भगवन् एतदवोच—‘अभिक्वन्ता भन्त । रत्ति, निक्वन्तो पच्छिमो यामो, उट्ठता<sup>८</sup> अरणो नदिमूखी रत्ति, चिरनिसिन्ना आगन्तुका भिक्षू, पटिसम्भोदतु भगवा आगन्तुकेहि भिक्षूही’ति ।

अथ सो भगवा तम्हा समाधिम्हा बुद्धित्वा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि—‘सचे सो त्व आनन्द । जानम्यासि एत्तकमि<sup>९</sup> ते न पटिभासेय्य—<sup>१०</sup>अहं च आनन्द । इमानि च पञ्च भिक्षुसत्तानि सब्बव, आनञ्जसमाधिना<sup>११</sup> निसीदिम्हाति ।

अथ सो भगवा एतमत्थं विदित्वा ताय वेलाय इम उवाच उदानेसि—

यस्स जितो कामवण्टको<sup>१२</sup> अक्कोसो च यधो च वधनञ्च ।

पव्वतो त्रिय सो टितो अनेजो सुखदुक्खसु न वेधति स भिक्षू ति ॥३॥

<sup>१</sup> A आनञ्ज,

<sup>२</sup> A अञ्जली 6° A°६

<sup>३</sup> D उगगते, A उदधस्ते, A उट्ठतो द्रष्टव्य ५१५ चुलवगणे ९११

<sup>४</sup> A एत्तकमि, B एत्तकमि

<sup>५</sup> A समपटिभासेय्य, D पटिभासेय्य

<sup>६</sup> आनञ्ज

<sup>७</sup> A B वण्टको

## ( २२—सारिपुत्त-सुत्त ३।४ )

एवं मे सुत—एक समय भगवा सावत्थिय विहरति जेतवने अनापविण्डवस्त आरामे ।

तत्र सो पण समयेन आयस्मा सारिपुत्तो भगवतो अविदूरे निमिग्नो हानि पल्लङ्क आमुजिवा<sup>१</sup> उज्जु कायं पणिघाय परिमुगं मति उपट्ठपत्वा<sup>२</sup> । अहमा सो भगवा आयस्मन्न सारिपुत्तं अविदूरं निसिन्न पल्लङ्क<sup>३</sup> आमुजिवा<sup>४</sup> उज्जु कायं पणिघाय परिमुगं मति उपट्ठपेत्वा अथ सो भगवा एतमथं विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानमि—

यथा पि पच्चता सलो अचलो सुप्पनिट्ठितो  
एव माहस्सया भिक्खु पच्च ता य ण वेधनी ति ॥४॥

## ( २५—कोलित-सुत्त ३।५ )

एवं मे सुत—एक समय भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनापविण्डवस्त आरामे ।

तत्र सो पण समयेन आयस्मा महाभोग्गल्लानो<sup>३</sup> भगवता अविदूरे निसिग्नो होति पल्लङ्क आमुजित्वा उज्जु राय पणिघाय कायगताय सनिया अज्झत्त सुपतिट्ठिताय । अहमा सो भगवा आयस्मत्त महाभोग्गल्लानं अविदूरं निसिन्न पल्लङ्क ये सुप्पनिट्ठिताय । अथ सो भगवा एतमथं विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानमि—

सति कायगता उपट्ठिता छमु कस्सायतनमु सवृत्तो  
मनत्त भिक्खु समाहितो जज्झा निब्बानमत्तना<sup>४</sup> ति ॥५॥

## ( २६—पिलिन्द सुत्त ३।६ )

एवं मे सुत—एक समय भगवा राजगहे विहरति जेतवने कल्लदकनिवापे ।  
तत्र सो पण समयेन आयस्मा पिलिन्दवच्छो<sup>२</sup> भिक्खू वमलवान्न समुत्ताचरति ।

<sup>१</sup> A आमुञ्चित्वा      A आपेत्वा      <sup>३</sup> A °गल्लानो—इति सबत्र  
२६    <sup>२</sup> B पलिन्दवच्छो, D पिलिन्दवच्छो, महावग्गेयि ६।१३

अथ खो सम्बहुला भिक्खू येन भगवा तेनुसङ्गमिसु,<sup>१</sup> उपसङ्गमित्वा भगवन्त  
अभिवादेत्वा एकमन्त निसीदिमु, एवमन्त निमिग्धा खो ते भिक्खू भगवन्त  
एतदवोचु—“आयस्मा भन्ते । पिलिन्दवच्छो भिक्खू वसलवादेन समुदाचरती”ति ।

अथ खो भगवा अञ्जतर भिक्खु आमन्तेसि—“एहि त्व भिक्खु । मम  
वचनेन पिलिन्दवच्छ भिक्खु आमन्तेहि—सत्था त आवुसो पिलिन्दवच्छ  
आमन्तती ति ।

“एव भन्ते”ति खो सो भिक्खु भगवतो पटिस्सुत्वा येन आयस्मा पिलिन्दव  
च्छो तेन उपसङ्ग कमि, उपसङ्गमित्वा पिलिन्द वच्छ एतदवोच—“सत्था त  
आवुसो आमन्तेती” ति ।

“एव अवुसो”ति खो आयस्मा पिलिन्दवच्छो तस्स भिक्खुनो पटिस्सुत्वा येन  
भगवा तेनुपसङ्ग कमि, उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसीदि  
एकमन्त निसिद्दो खो आयस्मन्त पिलिन्दवच्छ भगवा एतदवोच—“सच्च किर  
त्थ वच्छ । भिक्खू वसलवादेन समुदाचरती”ति ?

“एव भन्ते”ति ।

अथ खो भगवा पिलिन्दवच्छस्स पुब्बेनिवास मनसिकरित्वा भिक्खू आम  
न्तमि—‘मा खो तुम्ह भिक्खव । वच्छस्म भिक्खुनो उज्झापित्थ । न भिक्खवे ।  
वच्छा दोसन्तरो भिक्खू वसलवादेन समुदाचरति । वच्छस्सा भिक्खवे । भिक्खुनो  
पञ्च जातिसत्तानि अज्जोविष्णानि ब्राह्मणकुले पञ्चाजातानि ।

मो नस्स वसलवादो दीघरत्त अज्जाविष्णो<sup>२</sup> । तेनाय वच्छो भिक्खू वसलवादेन  
समुदाचरती ति ।

अथ खो भगवा एतमत्थ विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—

यन्हि न माया वत्तति न मानो यो खीणलोभो अममा निरासो  
पणुजकोधो<sup>३</sup> अभिनिवृत्ततो, सो ब्राह्मणो सो ममणा स भिक्खू नि ॥६॥

( २७—कस्सप-सुत्त ३१७ )

एव मे सुत—एक समय भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कल दकनिवाये ।

तेन खो पन समयेन आयस्मा महाकस्सपो पिप्फलिगुहाय विहरति, सत्ताह

<sup>१</sup> ABD °०६, इसु—स्थान—इत्यथ <sup>२</sup>C उदाचिन्नो अज्जाचिन्नो

ति । <sup>३</sup>D पणुल्ल° । <sup>४</sup>A अब्भो°, B पुस्तकेष्टुकयात् —सत्तियादि

जातिअ-तरहि अब्भोमिस्सानि

एतन्मन्त्रो वा विविधा हानि अञ्जनं समाधिं समाधिञ्च वा । अथ यो आचम्य  
 महावस्त्रात् तत्र म तद्वा अञ्जनां तद्वा समाधिञ्च वा । अथ यो आचम्य  
 महावस्त्रात् मन्त्रं समाधिञ्च वा कृत्वा एतन्मन्त्रो—यथाहं राजाहं विज्ञान  
 परिधिम् । उवाच वा समयन पञ्चममन्त्रानि दद्यात्तानि । उग्रावस्त्रात्  
 वा । आचम्यो महावस्त्रात् विज्ञानात्प्राप्तवान् । अथ यो आचम्य  
 महावस्त्रात् मन्त्रं पञ्चममन्त्रानि दद्यात्तानि परिधिञ्च वा पुनश्चमयं नित्यं  
 पत शीतलान् वा राजाहं विज्ञाय पात्रिणि । उवाच यो समयन मन्त्रो  
 मन्त्राभिन्ने आचम्यो महावस्त्रात् विज्ञानात्प्राप्तवान् होति पञ्चात्मिन् ।  
 अनित्यमिति वा<sup>१</sup> तन् विनाति<sup>२</sup>, गुणात् अमुरवा वासर<sup>(?)</sup><sup>३</sup> पूरति ।  
 अथ यो आचम्य महावस्त्रात् राजाहं तान् विज्ञाय चरमानो येन सारस  
 मन्त्राभिन्ने विनाति तनुपगच्छति । अहं वा मन्त्राभिन्ने आचम्य  
 महावस्त्रात् दूतो<sup>४</sup> वा आचम्य विज्ञानं पत विनाति वा गुणात्प्राप्तवान् इत्यत्र  
 पत गृह्य परं पवित्रं वाद्या आचम्युद्धृत्वा पत पूरत्वा आचम्य  
 महावस्त्रात् पतति<sup>५</sup> । यो अत्र विज्ञायो अनन्यता औद्यम्यं<sup>६</sup>  
 अनन्यमप्यञ्जना<sup>७</sup> । अथ यो आचम्य महावस्त्रात् एतन्मन्त्रो—वा पु यो  
 अथ गता, यन्मन्त्रं एवमा इदंनुभावा नि<sup>८</sup> अथ यो आचम्यो मन्त्रावपरा  
 एतन्मन्त्रो—मन्त्रो पु वा भवानमिन्नेति इति विदित्वा सक्त दद्यात्तानि<sup>९</sup>  
 एतन्मन्त्रो—वर्त वा स हं योगिन् वा पुन पि एकमप्यञ्जना<sup>१०</sup>ति ।

अष्टावन्ति भन्त वस्तव । पुञ्जो अन्तो अष्टावन्ति पुञ्जो वरणी  
 यन्ति । अथ यो सक्तो दद्यात्तानि आचम्यो मन्त्रावपरा अभिवादत्वा पञ्चविंश  
 क्त्वा वेदात् अभुग्नवा आवाते अन्तश्चिन्तय विदित्वा उदान उदानमि—अहो  
 दान परम दान वस्तवे गुपतिष्ठति । अहो गुपतिष्ठति ।

अन्तोमिन्तो भगवा विद्याय सीतमानुषा विदुषा अतिवन्तमानुसिवाय  
 सक्तस्त भवानमिन्नेति वेदात् उदान उदानन्तरं—अहो गुप-  
 तिष्ठति । अहो गुपतिष्ठति । अथ यो भगवा एतन्मन्त्रं विदित्वा  
 तान् वेदात् इम उदान उदानेति ।

२७ <sup>१</sup>BD वेत्तकार<sup>०</sup> ।<sup>२</sup>A नेत्वा ।<sup>३</sup>A विनाति, B विनाति, दृष्टव्य I Mullet, The Pal Language p 102 ।<sup>४</sup>अतमुट, Bण सर, CDवासर ।<sup>५</sup>A सत्वा ।<sup>६</sup>B पादाति ।<sup>७</sup>A<sup>०</sup>ध्यञ्जनो ।

पिण्डपातिकस्स भिक्षुना अतभरस्स अनञ्जपोमिनो  
देवा पिह्यन्ति तादिनो उपसन्तस्स सदा सतीमतो<sup>१</sup> ति ॥७॥

( २८<sup>२</sup>—पिण्ड-सुत ३।८ )

एव मे सुत—एव समय भगवा सायस्मिय विहरति जेतवने अनायपिण्डिकस्स आरामे ।

तेन छा पन समयेन सम्यहुत्थान भिक्षून पच्छामन्त पिण्डपातपटिकव-  
न्तान करेरिमण्डलमाल सन्निसिन्नान सन्नपनितान अयमन्तराकथा<sup>३</sup> उदपादि  
पिण्डपातिको आवुसो भिक्षु पिण्डाय चरन्तो लभति कालेन काल मनापिके  
चक्खुना रूप पस्सितु लभति कालेन काल मनापिक सोतेन सह सोनु लभति  
कालेन काल मनापिक धानेन गाये घायितु लभति कालेन काल मनापिके  
जिह्वाय रसे सायितु लभति कालेन काल मनापिके बायेन फोढुब्बे फुसितु,  
पिण्डपातिको आवुसा भिक्षु सक्कता गरुक्कतो मानितो पूजितो अपचितो पिण्डाय  
चरति । हन्व आवुसा मय पि पिण्डपातिको होम मय पि लच्छाम कालेन काल  
मनापिके चक्खुना रूप पस्सितु मय पि लच्छाम कालेन काल मनापिके सोतेन  
सह सोतु, मय पि लच्छाम कालेन काल मनापिक धानेन गाये घायितु मम्पि  
लच्छाम मनापिके जिह्वाय रसे समितु मम्पि लच्छाम मनापिके बायेन फोढुब्ब  
फुसितु, मम्पि सक्कता गरुक्कता मानिता पूजिता अपचिता पिण्डाय चीरस्सा  
मा नि । अयञ्चरहि तेम भिक्षून् अन्तराकथा हाति विप्पक्कता<sup>४</sup> । अथ खो भगवा  
सायण्हसमय पटिम्मत्तलाना बुद्धितो येन करेरिमण्डलमालो तेनुपसङ्गमि उपसङ्ग-  
मित्वा पञ्जस आसने निमोदि निसज्ज खो भगवा भिक्षू आमन्तेसि—काम<sup>५</sup> नुत्थ'  
भिकरवे' एतरहि कयाय सन्निसिन्ना, का च पन थो अन्तराकथा विप्पक्कता' ति ?

इध भत्ते । जम्हाक् पच्छामन्त पिण्डपातपटिकवन्तान करेरिमण्डलमाले<sup>६</sup>  
सन्निसिन्नान सन्नपनितान जय अन्तराकथा उदपादि—पिण्डपातिको पे  
पिण्डाय चग्गिस्सामा ति अय खो नो भन्ते अन्तराकथा विप्पक्कता,  
अय खो भगवा अनुप्पत्तो' ति ।

<sup>१</sup>D सतिमस्सा ।

२८ <sup>२</sup> द्रष्टव्ये सुत १२, २९ ।

<sup>३</sup>A अन्तरो° अन्तर° ।

<sup>४</sup>हस्तलोक्खु सक्क—°था, द्रष्टव्य सुत १२

<sup>५</sup>B कामा °A°ले



१ इतं विदध । तन्मते पटिक्ते कुम्भुतां गदाय अगारम्मा अनत  
 ग्यं पत्रिगित्तं मे सुम्भु एवम्भं वर्यं वर्यम्मा । मद्रिगित्तं मद्रिगित्तं  
 या विदध । इय वरणीय—यम्भिया वा यथा अरिया वा सुम्भुमात्राणि ।  
 एव ना भागदा तन्मते विदध्या माय दत्तपं दमं उता उतासि—

विदध्यामिदम् विदधुतो अतभरम्मा अज्जज्जामिती ।

ददा विदधत्ति तात्ति, ता य मद्रिगित्तनिमित्तं<sup>१</sup>ति ॥८॥

### ( २६—सिप सुत्त ३।६ )

एवं मे सुत्त—एवं ममये भगवा तावत्सिपं विदधति जेयये अनामपिण्ड  
 वग्ग आराम ।

तत्र ता पा ममया सम्पद्दुता भित्तूने (मुत्ते विर) अत्रा  
 यथा उतासि—'को नू गो आवुत्ता<sup>१</sup> । सिपं<sup>२</sup> जाताति का वि सिप्य  
 निस्सा<sup>३</sup>, वारं गिप्पां अग्गन्ति ।' तत्र एवञ्च एवमाहुं—'हयिगिपं  
 गिप्पां अग्गन्ति ।' एवञ्च एवमाहुं—'अग्गमिप्य गिप्पां अग्गन्ति । एवञ्च  
 एवमाहुं—'एयमिप्य गिप्पां अग्गन्ति । एवञ्च एवमाहुं—'धनुमिप्य  
 गिप्पां अग्गन्ति ।' एवञ्च एवमाहुं—'वसतिपं गिप्पां अग्गन्ति । एवञ्च  
 एवमाहुं—'मुरागिपं गिप्पां अग्गन्ति । एवञ्च एवमाहुं—'गणनसिप्य  
 गिप्पां अग्गन्ति । एवञ्च एवमाहुं—'गद्गगनमिपं गिप्पां अग्गन्ति ।  
 एवञ्च एवमाहुं—'एग्गमिप्य गिप्पां अग्गन्ति । एवञ्च एवमाहुं—  
 'वद्वमिप्य गिप्पां अग्गन्ति । एवञ्च एवमाहुं—'लोकापनमिप्य गिप्पां  
 अग्गन्ति । एवञ्च एवमाहुं—'सत्तविज्जासिप्य गिप्पां अग्गन्ति ।

अप्यरहि सभं भित्तूने अन्तराया विप्यवता<sup>४</sup> । अय गो भगवा  
 मायण्हसमयं वे (यथा २८ सुत्त) विप्यवता ति । इय मन्ते  
 वे (यथापूत) उदपाति—को नू ता आवुत्ता<sup>१</sup> सिप्य जानाति  
 वे सत्तविज्जासिप्य गिप्पां अग्गन्ति अय गो ना भत्त । अन्तराया  
 विप्यवता । अय सा भगवा अनुप्पत्तो ति ।

<sup>१</sup> A नीचेतस्स सलाक् निस्सिता, D चेत्तस्स सिलोरनिस्सतो C प्रयत्त-  
 पाठ, सीलोव—इत्यत्र ह्रस्वकार कृत्वा

२९ <sup>२</sup> A सिम्ब—मवद

<sup>३</sup> तिक्कि—सयंप हस्तलेखेपु

<sup>४</sup> द्रष्टव्या सुत्त २८ टिप्पणी २

नह्वेत पे (यथा २८ सुत) तुण्हीभावो'ति । अथ खो  
 भगवा एत अत्थ विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—  
 असिप्पजीवी रुहु अत्यकामो यतिद्वियो सब्बधिविप्पमुत्तो ।  
 अनोकमारी अममो निरासो हत्वा मार एकचरो स भिक्खू'ति ॥९॥

( ३०—लोक-सुत ३।१० )

एव म सुत—एक समय भगवा उह्वेलाय विहरति नज्जा नेरञ्जराय  
 तीरे बोधिवृक्षमूल पठमाभिसम्बुद्धा ।

तत सो पन समयेन भगवा सत्ताह एकपल्लञ्जन निसिन्नो होति विमुत्ति  
 मुख<sup>१</sup> पटिमवदी । अथ खो भगवा तम्म सत्ताहम्म अञ्जयेन तम्हा समाधिम्हा  
 बुद्धहित्वा बुद्धचक्षुना लोक वालोक्खि<sup>२</sup> । अइसा खो भगवा बुद्धचक्षुना लोक  
 बोलोक्खन्तो<sup>३</sup> सत्ते अनरहि सन्तापेहि सन्नप्पमान अनकेहि च परिच्छाहहि<sup>४</sup> परि  
 इह्ममान रागजहि<sup>५</sup> पि दासजहि<sup>६</sup> पि मोहजहि पि नि । अथ खो भगवा एतमत्थ  
 विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—

अय लोरो मन्तापजातो फस्सपरेता राग वदति अत्ततो<sup>१</sup>,

यन हि मञ्जति तता त होति अञ्जया ।

अञ्जयाभावि भवप्पत्तो<sup>२</sup> लोरो भवपरता भव एवाभिनन्दति ।

यदा भिनन्दति, त भय, यस्स भायति, त दुक्ख ।

भवविप्पहाताय सो पन इद ब्रह्मचरिय वुस्सतो नि

ये हि केचि समणा वा ब्राह्मणा वा भवेन भवस्स विप्पमोक्ख

आहुमु, सज्ज' एते अविप्पमुत्ता भवस्मा' ति वदामि ।

ये वा पर केचि समणा वा ब्राह्मणा वा विभवेन भवस्स निस्सरण अहुसु  
 सब्ब'ते अनिस्सरण भवस्मा ति वदामि ।

३०. <sup>१</sup> B मुख

<sup>२</sup> B ओलोकेसि

<sup>३</sup> B ओस्स<sup>०</sup>

<sup>४</sup> CD<sup>०</sup> ताह<sup>०</sup>

<sup>५</sup> A रागराजेहि

<sup>६</sup> A दोसरजेहि

C अत्ततो अत्ततो 'ति पिपठति, D अत्ततो

<sup>१</sup> C भावप्पत्तो, A भावसत्तो, D सवसत्तो, अञ्जयामावि—इत्यत

सूत्रात् यायाद वाक्य B वुस्सत्ते न दृश्यते

न उपनी<sup>१</sup>ति<sup>२</sup> पत्न्यं दुर्गं इदं गच्छेति<sup>३</sup> ।

सम्पुन्यातामा न पि दुर्गस्य सम्भवो ।

गतं<sup>४</sup> पत्यं पुन्यं अभिगच्छाय परया भूता भूतया वा अगमिता,

य इति कति भया सर्वपि गच्छन्त्यनाम,<sup>५</sup> गच्छ एव भया अनिम्या दुर्गा

ः निरिगामयम्मा इति ॥१०॥

पत्यत्वं<sup>६</sup> यथाभूत् सम्पुन्याताय पत्न्या ।

भवान्ता पत्नीयति विभवन्तु<sup>७</sup> भित्तयि ।

गच्छतो गच्छां गया अगेताविगमनिरोधो विध्या ।

तास्य निन्दुतास्य निन्दुतो अनुतास्य पुनश्च<sup>८</sup> न हति ।

अभिभूतो भारो<sup>९</sup> विजितसद्व्यामा,<sup>१०</sup> उपपन्ना<sup>११</sup> सम्भवति तासी<sup>१२</sup> नि

तदप्यगो तप्यो ।

(तस्य) उदां —

वाम । १ भारो बभेजे न तप्यन्तो न वे जिते ।

विजितो वस्यो विजितो विजितो विजितो न हति ॥ १० ॥

<sup>१</sup> D उपपि

<sup>२</sup> नास्ति A

<sup>३</sup> एवमेव C A पत्न्योत्तमप्योतिति, D पत्न्योतिति

<sup>४</sup> D मृतनाथ

<sup>५</sup> AD एवम वे सुतं

<sup>६</sup> A मनो D मानो

<sup>७</sup> B विजितो स "

<sup>८</sup> D उपपन्ना, AC उपपन्नाया, उपपन्नता

<sup>९</sup> A ता, D तादि

<sup>१०</sup> हस्तलेख कम्प

<sup>११</sup> AB अ, D ० इ

<sup>१२</sup> AD रसा

## ४—मेधिय-वग्गो

( ३१—मेधिय-सुत्त ४।१ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा चालिकाय विहरति, चातिके पव्वते ।

तेन खो एन समयेन आयस्मा मेधियो भगवतो उपट्ठाको होति । अय खो जायस्मा मेधियो येन भगवा तेनुपसङ्कमि', उपसङ्कमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त अट्ठासि, एकमन्त ठितो खो जायस्मा मेधिया भगवन्त एतद वाच—  
“इच्छामह भन्ते ! जन्तुगाम<sup>१</sup> पिण्डाय पविसितु ति” ।

‘यस्स दानि त्व मेधिय’ काल मज्झसी ति ।

अय खो आयस्मा मेधियो पुब्बण्हसमय निवासेत्वा पत्तचीवरमागय जन्तुगामे पिण्डाय पात्रिमि, जन्तुगाम पिण्डाय चरित्वा पच्छाभन्त पिण्डपानपटिवन्तो येन किमिकालाय<sup>२</sup> नदिया तीर तेन उपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा किमिकालायनदिया तीरे जङ्घाविहार<sup>३</sup> अनुचङ्कमानो अनुविचरमानो अहसा खो अम्बवन पासान्धि<sup>४</sup> रमणीय, दिस्वान स्म एतद अहोसि— पासादिव वत<sup>५</sup> इद अम्बवन रमणीय । अल वत<sup>६</sup> इद कुलपुत्तस्स पधानत्थिकस्स पधानाय<sup>७</sup> । सत्वे म भगवा अनुजानेय्य आगच्छय्य<sup>८</sup> इद अम्बवन पधानाया<sup>९</sup> ति । अय खो आयस्मा मेधियो येन भगवा तेन उपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसीदि एकमन्त निसिप्रो खो आयस्मा मेधियो भगवन्त एतदवाच—इध<sup>१०</sup>ह भन्त पुत्थण्हसमय निवासेत्वा पत्तचीवर आगय जन्तुगाम पिण्डाय पविसि । जन्तुगामे पिण्डाय चरित्वा पच्छाभन्त पिण्डपानपटिवन्तो येन किमिकालाय नदिया तीर, तेनुपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा किमिकालाय नदिया तीरे जङ्घाविहार अनुचङ्कमानो अनुविचरमानो अहम अम्बवन पासादिव रमणीय, दिस्वान मे एवदहोसि—  
‘पासादिक वत ! इद अम्बवन रमणीय, अल वत ! इद कुलपुत्तस्स पधानत्थिकस्स

३१ १ BD °मे C °म, मे

२ A वचित °वाक् °

३ BD °जङ्घा °

४ C व्याख्यायते—पधानाया<sup>९</sup>ति समणयम्मकरणाय

पधानाय । सचे म भगवा अनुजानम्य आगच्छेय्याहं इ० अम्बवनं पधानाय०ति ।  
सचे म भते । भगवा अनुजानानि, गच्छय्याहं त अम्बवन पधानाय नि

एव युक्तं गगना आयस्मन्त मेधिय एतदवोच—“आगमहि ताव मेधिय ।  
एतद्गृहा ताव, याव अञ्जोपि वाचि भिस्तु आगच्छती” ति १ ।

‘दुतियमि गो आयस्मा भधियो भगवन्त एतदवोच—“भगवतो भन्ते ।  
नयि विञ्चि उत्तरिं करणीय नत्वि वतस्स वा पतिवया,” मय्ह सो पन भन्ते ।  
अयि उत्तरिं करणीय, अत्वि वतस्स पतिवया । सचे म भन्त । भगवा अनुजानाति,  
गच्छय्याह त अम्बवा पधानायति । दुतियमि गो भगवा आयस्मन्त मेधिय  
एतदवोच—’ आगमहि आगच्छती’ ति ।

‘ततियमि सो आयस्मा भधिया भगवन्त एतदवोच—‘भगवता भन्त ।  
नत्वि पधानाय’ ति ।

‘पधानन्ति सो भधिय । व०मान विन्ति वे०य्याम । ३यस्स दानि त्व मेधिय ।  
काल मञ्जसी नि ।

अथ सो आयस्मा मेधियो उट्ठाव आसना भगवन्त अभिवादेत्वा पदस्त्रिण  
पत्वा पन त अम्बवन तनुपसद्गमि, उपसद्गमित्वा त अम्बवन अज्जागहत्वा ४  
अञ्जानरास्म द्वात्तमूले दिवाविहारं निसीदि । अथ सो आयस्मता मेधियस्स  
तस्मि अम्बवन विहरन्तस्म यभुय्येन तयो पापका अकुसला विनक्वा समुदाचरन्ति,  
सेय्यय इ०—‘कामवतिवरा ध्यापादवितक्का विहिमावितक्का नि ।

अथ सो आयस्मतो मेधियस्स एतद्गृहाति—‘अच्छरिय वन भो । अ०भुत वन  
भा । सहाय च वनमि अगारस्मा अनवारिय प०वजितो अथ च पनिमहि ती० पाप  
कहि अकुसलेहि वितवराहि अनवास्त गो ५ सेय्ययीद—‘नामवितक्केन ध्यापादवितक्केन  
विहिमावितक्कना ति । अथ सो आयस्मा मेधियो सायण्हममय पडिसरत्तना  
वुट्ठितो येन भगवा तेपुपमद्गमि उपसद्गमित्वा भगवन्त अभिवात्त्वा एवमन्त  
निमी० एवमन्त तिसिन्नो सो आयस्मा मेधियो भगवन्त एतदवोच—’ इथ

१ Cकोचि भिक्खु दिस्सती०ति पाठा आगच्छती०ति पि पठन्ति, तस्य  
भिस्तु नि २ ABD पतिवयो, C पतिवयो नोध्यते परिचयो ३ A वरमान  
विञ्चि चरेय्यामा C यात्थायते समणद्धेम्मं करोमीति० ति त  
अवदमानं [ २ वद ] मय अञ्ज जिन् ताव वदेय्याम ४ A ०गह ० ५ A अज्जापयत्तो  
द्वितीयवार अवावर्गति सिंहल हस्तललेषु तनयोरावृत्तिसादृशात् पाठभेद प्रदर्शन  
दुप्परम C अनवास्तनाति अनुलङ्घावोक्तिना अनवत्तमा०ति पि पाठो B  
पाठ—अनवास्तमा [ द्वि ] D अवास्तनाति अनवास्तमि

मग्ध भन्ते । तस्मिं अम्बवने विहरन्तस्स येमुय्येन तयो पपका अकुसला विनङ्का  
समुदाचरन्ति प विहिंसावितक्के' ति । मग्ध भन्ते ।  
एतदहोसि—“अच्छरिय प विहिंसाविनक्केना' नि ।

“अपरिपक्काय मेधिय । चेतोविमुत्तिया पञ्च धम्मा परिपाकाय सवत्तन्ति ।  
वतमे पञ्च ?<sup>१</sup> इध मेधिय । भिक्खु कल्याणमित्तो होति कल्याणमपवङ्गस्स ।  
अपरिपाकाय मेधिय । चेतोविमुत्तिया अय पठमो धम्मो परिपाकाय सवत्तन्ति ।<sup>२</sup>  
पुन च पर मेधिय । भिक्खु सीलवा होति, पाटिमोक्खसवरमवुता विहरन्ति,  
आचारगोचरसम्पत्तो अनुमत्तसु वज्जेसु भयन्त्सावी समानाय भिक्खवन्ति सिक्काप-  
देसु । अपरिपाकाय मेधिय । चेतोविमुत्तिया अय दुतिया धम्मो परिपाकाय  
सवत्तन्ति ।<sup>३</sup> पुन च पर मेधिय । भिक्खु या'य कया अभिसल्लेखिका<sup>४</sup> चेतो  
विवरणसप्पाया - एकन्तनिब्बिदाय विरागाय निरोधाय उपसमाय अभिञ्ञाय  
सम्बोधाय निब्बानाय सवत्तन्ति सेय्य' थोद—अप्पिच्छकया सन्तुट्टिकया पयिवव  
कया अससगकया विरियारम्भकया सीलकया समाधिकया पञ्ञाकया विमुत्ति  
कया विमुत्तिञ्ञाणस्सनकया एवम्पिया कयाय निजमलाभी होति अक्किञ्च  
लाभी<sup>५</sup> अकसिरलाभी । अपरिपाकाय मेधिय । चेतोविमुत्तिया अय तनियो धम्मा  
परिपाकाय सवत्तन्ति ।<sup>६</sup> पुन च पर मेधिया । भिक्खु चारद्वविरियो विहरन्ति जकुम-  
लान धम्मान पहाणाय कुमलान धम्मान उपसम्पदाय धामवा दढ्हपरवक्कम्मो अनि  
क्खित्तधुरो कुमलेसु धम्मेषु । अपरिपाकाय मेधिय । चेतोविमुत्तिया अय चतुथा  
धम्मो परिपाकाय सवत्तन्ति ।<sup>७</sup> पुन च पर मेधिय । भिक्खु पञ्ञवा होति उदयत्थ  
गामिनिया पञ्ञाय समघागतो अरिमाय निब्बेधिकाय सम्पादुक्कक्खयगामिनि  
मिया । अपरिपाकाय मेधिय । चेतोविमुत्तिया अय पञ्चमो धम्मो परिपाकाय सव-  
त्तन्ति । अपरिपाकाय मेधिय । चेतोविमुत्तिया इम पञ्च धम्मा परिपाकाय सवत्तन्ति ।

“कल्याणमित्तस्स<sup>१</sup> एत मेधिय । भिक्खुनो पाटिकङ्कगम<sup>२</sup> कल्याणसहायस्स  
कल्याणसम्पवङ्गस्स य सीलवा भविस्सन्ति पाटिमोक्खसवरमवुता विहरिस्सन्ति  
आचारगोचरसम्पत्तो अनुमत्तसु वज्जसु भयदस्सावी भिक्खवन्ति भिक्काप<sup>३</sup>सु ।  
कल्याणमित्तस्सेत कल्याणसम्पवङ्गस्स, य सीलवा भविस्सन्ति पाटिमोक्ख  
सवरसवुतो(?) या म कया अभिसल्लेखिका चेतोविवरणसप्पाया एकन्तनिब्बिदाय  
विरागाय निरोधाय उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय सवत्तन्ति,  
सय्यथो द—अप्पिच्छकया अससगकया विरियारम्भकया सीलकया समाधिकया

<sup>१</sup> AB °ता, C °सल्लेखिका - A सञ्ञाया <sup>२</sup> AB अक्किञ्च, °

पदवात—A अक्किञ्च \*ABD °आ, °अ



विविष्णवाच्च मुद्रुस्ततिरो असम्पजाने असमाहिते विष्मत्तचित्ते पावतिद्रिमे । अथ  
खो भगवा एतमत्य विदित्वा ताय वलाय इम उन्नान उदानेसि—

अरक्खितेन कायेन मिच्छादिद्विगतेन<sup>१</sup> च

धीनमिद्धाभिभूतन वस मानस्स गच्छति ॥

तस्मा रक्खितचित्तस्स सम्मासद्धवप्पगोचरो ।

सम्मानिद्विपुरेक्खारो अत्थान उदयव्वय

धीनमिद्धाभिभू भिक्खु सव्वा दुग्गतियो जहे सि ॥२॥

( ३३—गोपाल-सुत ४१३ )

एव म सुत—एष समय भगवा बोसलेसु चारिष वरति महता भिक्खुसङ्घन  
सदि ।

अथ खो भगवा भग्वा ओक्कम्म यन अञ्जतर रक्खमूल तेनु'उपसद्धमि,  
उपसद्धमित्वा पञ्जते आमने निसीदि । अथ खो अञ्जतरो गोपालको यन  
भगवा तेनु'उपसद्धमि, उपसद्धमित्वा भगवन्त अभिवात्तेत्वा एकमन्त निसीदि,  
एकमन्त निसिन्न खो त गोपालक भगवा धम्मिया कयाय सन्दस्ससि समादपेसि  
समुत्तजसि सपहससि । अथ खो सो गोपालको भगवता धम्मिया कयाय सद्दस्मितो  
समादपितो समुत्तजितो सपहसितो भगवन्त गतदवोच—“अधियानेतु मे भन्ते ।  
भगवा स्यातनाय भत्त सदि भिक्खुसघना” सि । अधिवासमि भगवा तुण्हीभावेन ।

अथ खो सो गोपालक भगवता अधिवासन विन्त्वा उट्ठाया आसना भगवन्त  
अभिवादेत्वा पक्खिण कत्वा पक्कामि । अथ खो सो गोपालको तस्सा रत्तिया  
अच्चयन सके निवसन पट्टत अप्पोदकपायास पटियात्तपेत्वा नवञ्च मप्पि भगवतो  
काल अराचेसि— वागे नत्ते' निद्रित भत्त नि । अथ खो भगवा पुट्टण्हसमय  
निवासेत्वा पत्ताचीवर आत्ताय सदि भिक्खुसघन येन तस्स गोपालकस्स निग्गसम  
तेनु'उपसद्धमि उपसद्धमित्वा पञ्जत्त आसने निसीदि । अथ खो सो गोपालको  
धुट्ठपमुत्थ भिक्खुसघ अप्पोत्तपायासेन च नवेन च सप्पिना सहत्था सन्तप्पेसि सपवा  
रेमि । अथ खो सो गोपालको भगवन्त भुत्तावि ओनीतपत्तपारिण<sup>२</sup> अञ्जतर नीच  
आसन गहेत्वा एकमन्त निगीदि, एकमन्त निसिन्न खो त गोपालक भगवा धम्मिया  
कयाय सन्दस्सत्ता समादपेत्वा समुत्तजत्वा सम्पहसेत्वा उट्ठाया सना पक्कामि ।

<sup>१</sup> A °पातेन B °ततेन <sup>२</sup> Bपहो D पिहो

<sup>३</sup> धोतहत्थ पानी (?) [धोतपत्तपानी] न्ति पि पाथो धोतपत्तहत्थ न्ति अथो



अथ सा अचिरपयान्तम्भ भगवतो त गोपात्रं<sup>१</sup> अञ्जारा गुरिगो सीमन्त  
रिवाया<sup>२</sup> जीविना ओरापति । अथ सो गम्बट्टला भिक्खू यन भगवा तेनुमसट्ट-  
रमिगु उपमट्टरमित्वा भगवन्तं अभिवातेत्ता एवमन्तं निसीत्थिमु, एवमन्तं  
निसिप्पारायो त भिक्ख भगवन्तं एतदवोचु— येन भन<sup>३</sup> गोपालरन अञ्ज  
उत्पमुत्ता भिननुमथा अपात्पायामन नयन च सप्पिा सहत्था मन्निपितो गम्पया  
रितो मा विर भन्त गोपालरो अञ्जानरो गुरिमव सीमन्तरिवाय<sup>४</sup> जाविना वारा  
विता<sup>५</sup> नि । अथ वो भगवा एतं विन्वा ताव वेत्ताय म्भ उत्तम उत्तममि—

निमा निगु यन वयिरा वरि वा पन वेगि ।

मिच्छापणिहिन्न चित्त पापिया न तत्ता करे ति ॥२॥

### ( ३४—जुणहा सुत्त ४१४ )

एव मे सुत्त—एव समय भगवा राजगह विहरति थेद्धुयने बलदवनिषाय ।

तेन सो पन समयन आयस्मा च सारिपुत्तो आयस्मा च मत्तामोगल्लानो वपोत  
वदराय<sup>१</sup> विहरति । तन सो पन समयेन आयस्मा सारिपुत्तो जुणाय रत्तिया  
नवोरापित्ति वसहि अभोरास तिसिप्पो होति अञ्जतर समाधि समापज्जिवा ।  
तेन सो पन समयन द्व यवना सहायवा उत्तराय तिसाय दस्सिण निमि गच्छन्ति  
वेन विदेव करणीयेन । अट्टससु खा त यस्मा आयरमन्त सारिपुत्त जुणाय  
रत्तिया नवोरोपित्ति वसहि अभोकाव निमित्त, तिस्या एरो यक्खो दुत्तिय यक्ख  
एतदवोच— पटिभाति म सम्म, इमम्भ समणस्म सीसे पहार दातु<sup>२</sup> ति ।

एव वुत्त सो यक्खो त यक्ख एतदवोच— अल सम्म मा समण आमादसि<sup>३</sup> ।  
उल्लारो सी गम्भ समणो महिद्धिको महानुभावो ति ।

दुत्तियपि सो सो यक्खो त यक्ख एतदवोच— पटिभाति म सम्म<sup>४</sup> । इमम्भ  
समणस्म सीसे पहार दातु ति ।

दुत्तिय<sup>५</sup> पि सो सा यक्खो त यक्ख एतदवोच— अल सम्म । महानु  
भावो<sup>६</sup> ति ।

<sup>१</sup> ABCD सि<sup>०</sup>

<sup>२</sup> Sec धम्मप ४२

३४ <sup>३</sup>C वपोतवदरायति एवनामरे विहारे <sup>४</sup>C मा आसादेसी ति  
गोच्यते—आपादेसि मा थातसि मा पहार देहि<sup>५</sup> ति वुत्त होति, AD आसारेसि,  
B आसादेसिस्थाने, ABC आसारेसि द्रष्टव्य चूर्णवगे ७।३।१२

ततिय' पि खो सो यक्खो त यक्ख एतदवोच—'पटिभानि दानु'नि ततिय पि खो सो यक्खो त यक्ख एतदवोच—“अल सम्म । महानुभावो ति ।

अय खो सो यक्खो त यक्ख अनान्वित्वा आयस्मतो सारिपुत्तयरस्स मीसे पहार अदासि । अपि तेन पहारेण सत्तरत्तन वा अड्ढरत्तन वा नाग ओसादेय्य<sup>१</sup> महन्त वा पच्चत्तकूट पदालेय्य । अय च पन<sup>२</sup> मो यक्खो डय्हामि डय्हामी' नि यदा तय एव महानिरय अपतासि । अहसा खो आयस्मा महामोग्गल्लानो दिव्वेन चक्खुना विमुद्धन जतिकन्तमानुसवेन तेन यक्खेन आयस्मता सारिपुत्तस्स मीसे पहार दीयमान, दिस्वान यन आयस्मा सारिपुत्तो तेनुपमद्दकमि उपस द्दकमिन्वा आमस्सन्त सारिपुत्त एतदवोच— कच्चि ते आवुसो<sup>३</sup> ! खमनीय कच्चि यापनीय कच्चि न विज्झि दुक्ख<sup>४</sup> ' नि ।

' खमनीय मे आवुसो मागल्लान<sup>५</sup> ' यापनीय मे आवुसो मोग्गल्लान । अपि च मे मीसे थाक दुक्ख<sup>६</sup> ' नि ।

अच्छरिय आवुमो सारिपुत्त अभुत्त आवुमो सारिपुत्त । य त्व महिद्धिको आयस्मा सारिपुत्तो महानुभावो । इध त्त्त आवुमो सारिपुत्त । अज्जनरा यक्खो मीसे पहार अदासि, ताव महापहारो अहोमि । अपि तेन पहारेण सत्तरत्तन पदालेय्या' ति ।

अय च पन आयस्मा सारिपुत्तो एवमाह— खमनीय मे आवुसा मागल्लान । यापनीय मे आवुसो मोग्गल्लान । अपि च मे मीसे थोक दुक्ख नि । अच्छरिय आवुमो मागल्लान । अभुत्त आवुमो मोग्गल्लान । याव महिद्धिको आयस्मा महामोग्गल्लानो महानुभावो, यत्त हि नास यक्ख पि पम्भिस्सन्ति मय पन एतग्धि पनुपिप्साचक पि न पस्सामा' नि ।

अम्मासि खो भगवा णिब्बाय मानघालुया विस्सुद्धाय अनिकक्खन्मानुमिवाय तेम उन्नित्त महानागान इम एवरूप कयासन्त्ताप । यय खो भावा एत नय विदित्वा ताय बलाय इम उदान उन्नित्त<sup>७</sup>—

<sup>१</sup> A अयद्धमर°, BD अड्ढरत्तन,

C ओसादेय्या'नि पठविष ओसोसापेय्य निमुज्जापेय्य, ओसादेय्य'नि पि पाठो चुन्नविबुध करेय्या'नि अत्यो AD अओसादेय्या, B ओसदेय्यय

<sup>२</sup> C अपि च मे मीसे थोक दुक्ख—

इत्यपि पाठ

<sup>३</sup> द्रष्टव्या घेरमाया, V १९१

यस्य मरूपं विसं शिं तापुपम्पति ।

विसं रजायमु बोदा न कुपति ॥

यस्य एव<sup>१</sup> भाविता रिं मुने न दुग्गमस्मणी नि ॥४॥

### ( ३६—नाग सुत्त ४६ )

एव म सुत्त—एवं सम्यं भगवा बोताम्बियं विहरणि घोसितारामे ।

ता ता पा तमया भगवा आरिणा विहरणि भित्तुहि भित्तुनीहि उपागमहि उपासिताहि ताहि राजमहामत्तहि निविषति निचियमावहि आरिञ्जा दुक्का न फामु विहरणि । अथ ता भगवो एवमाहि—“अहं ता एतहि आरिणा विहरामि भित्तुहि निचियमावहि आवित्रा दुक्का न फामु विहरामि, यप्पुनाहं एवो गणस्मा वृषवद्दो विहरस्यंति ।

अथ सो भगवा पुत्रमष्टमस्यं विहागत्वा पत्तचारम्माणम रोसम्भियं विण्णय पाविणि राजम्भिय विण्णय चरित्तं वच्छामत्तं विहानपटिवानो माम” तेनात्तन गमात्तेता पत्तीवर आणय आत्मन्तेवा उगट्ठाव जात्तावाया भित्तुससं एवो अत्तियो वा पात्तिस्सव<sup>२</sup> तन पारितं पत्तामि अनुपुत्तन तात्तिव्वरमातो यन पात्तिस्सव<sup>३</sup> तत्तवमरि । तत्र सुत्तं भगवा पात्तिस्सव<sup>४</sup> विहरणि रविणत्तवनसण्ठे भइत्तालमूले ।

अञ्जतरो वि गो हत्तिनामा आविण्णो विहरणि हत्थीहि हत्थिनीहि हत्थिवट्ठारेहि<sup>५</sup> हत्थिच्छापेहि<sup>६</sup> छिन्नग्गानि चेव विण्णानि ताण्णि ओभग्गाभग ज्जत्तसं सात्ताभद्दग ताण्णि आरिणानि च पानीयानि<sup>७</sup> पिबन्ति ओगाण<sup>८</sup> यत्ता उत्तिण्णसं हत्थिनिमो वाय उपनिपपगन्तिवो यच्छन्ति आरिणो दुक्का न फामु विहरन्ति । अथ ता तस्य हत्थिनागस्य एवमाहि—“अहं ता एतहि आरिणा विहरामि हत्थीहि हत्थिनीहि हत्थिवट्ठारेहि<sup>९</sup> हत्थिच्छापेहि<sup>१०</sup> छिन्नग्गानि चेव

<sup>१</sup>AD तत्स' एव, B मत्स एव, C तत्स एत व्याख्यायते यत्स एव(?) ४६ महावाग, १०१४

३५ <sup>२</sup>C सामत्तित सय

<sup>३</sup>B पारि [यथा महावाग]

<sup>४</sup>CD °वल्लारेहि C व्याख्यायते, °पोटवहि

<sup>५</sup>C °छापेहीदति लीलवेहि

<sup>६</sup>B C °नी

<sup>७</sup>D ओगहत्स 'ओगाह'ति तिठ्ठा ओगाहनं तिवि पालि A

<sup>८</sup>D ओगाहत्स

तिणानि खादामि ओभग्गोभग्गञ्च मे साखाभङ्गं खादन्ति, आविलानि च पाणी  
यानि पिवामि ओगाहा<sup>१</sup> च मे उत्तिण्णस्स हत्थिनियो काय उपनिघसन्तियो  
गच्छन्ति आक्खिणो दुक्खं न फामु विहरामि । यधूनाह एको गणस्मा वूपवट्ठो  
विहरेय्य" ति ।

अथ सो मो हत्थिनागो यूया अपक्खं यन पालित्थेय्यक् रक्खितवनसमण्डो<sup>२</sup>  
भट्ठसाल्मूल येन भगवा तेनुपसज्जमि, उपसज्जकमित्रा तत्र सुद सो हत्थिनागो  
यस्मि पदेसे भगवा विहरति त पदेस अप्पहरितञ्ज<sup>३</sup> च वरोति सोण्डाय भगवना  
पाणीय<sup>४</sup> परिभोजनीय पट्टपति । अथ सो भगवतो रहोगतस्स पटिसल्लीनस्स  
एव चेतसो परिवित्तक्को उदपाति— 'अहं सो पुब्बे आक्खिणो विहासि भिक्खूहि  
तित्थियसावकेहि आक्खिणो दुक्खं न फामु विहासि । सो म्हि एतरहि अनाक्खिणो  
विहरामि भिक्खूहि तित्थियसावकेहि अनाक्खिणो सुव फामु विहरामा' ति ।  
तस्स पि सो हत्थिनागस्स एव चेतसो परिवित्तक्को उदपादि— 'अहं सो पुब्बे  
आक्खिणा विहासि हत्थीहि हत्थिनीहि हत्थिक्खळारेहि हत्थिच्छापक्कि छिन्नग्गानि  
चेव तिणानि खादामि ओभग्गोच गग्गञ्च मे साखाभङ्गं खादिसु आविलानि च  
पाणीयानि पिवासि ओगाहा<sup>५</sup> च मे उत्तिण्णस्स हत्थिनिया काय उपनिघसन्तियो  
अगमसु, आक्खिणो दुक्खं न फामु विहासि सो म्हि एतरहि अनाक्खिणो विहरामि  
हत्थीहि हत्थिनीहि हत्थिक्खळारेहि हत्थिच्छापक्कि अच्छिन्नग्गानि चेव तिणानि  
खादामि ओभग्गोभग्गञ्च मे साखाभङ्गं न खादन्ति, अनाविलानि च पाणीयानि  
पिवामि ओगाहा<sup>६</sup> च मे उत्तिण्णस्स हत्थिनियो न काय उपनिघसन्तियो गच्छन्ति,  
अनाक्खिणो सुव फामु विहरामी ति ।

अथ सो भगवा अत्तनो च पविक्क विन्त्वा तस्म च हत्थिनागस्स चेतसा  
चेनोपरिवित्तक्क अज्जाय ताय बलाय इम उदान उप्पनसि—

एत<sup>७</sup> नागस्स<sup>८</sup> नागं ईमादन्तस्स हत्थिनो ।

समेति चित्तं चित्तेन य एको रमती वनं ति ॥५॥

<sup>१</sup> D °पारि

<sup>२</sup> D °अ

<sup>३</sup> D °हा°

<sup>४</sup> B °नी°

<sup>५</sup> AD ओगाहस्स ओगाहञ्ज

<sup>६</sup> D एव, AC एत, B ए



अधिचेतसो अप्यमञ्जतो मुनिनो मोनपथेषु सिम्बतो  
साका न भवन्ति तादिनो उपसन्तस्त सदासतीमतो' ति ॥७॥

### ( ३८—सुन्दरी-सुत ४।८ )

एव मे सुत—भगवा, एर समय भगवा सावस्थिय विहरति जेतवने  
अनाथपिण्डकस्त आरामे ।

तन खो पन समयेन भगवा सक्कनो होति गरकतो होति मानितो पूजितो  
अपचितो रग्भी चावरपिण्डपातसंनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिकारान,  
भिक्षुमघो पि सक्कता हाति प परिकारान अज्जतिथिया पन  
परिव्याजका असक्कना होन्ति (यथा १८ सुत्त) पे परिकारान ।

अथ तो ते अज्जतिथिया परिव्याजका भगवतो सक्कार असहमाना  
भिक्षुसघस्म च येन सुदरी परिव्याजिका तन उपसङ्कमिषु, उपसङ्कमित्वा  
सुन्दरि पग्ग्वाजिव एतदवाचु—“उस्सहसि भग्नि १ आतीनमत्थ कातु ति ।

“क्याह जय्या १ करोमि, कि मया सक्का कातु २ जीवित पि मे  
परिच्चत्त अतीन अत्थाया” ति ।

‘तेन हि भग्नि १ अभिक्खन जेतवन गच्छाही’ ति ।

“एव अय्या” ति खो सुन्दरी परिव्याजिका तस अज्जतिथियान  
परिव्याजकान पटिसुत्वा अभिस्खन जेतवन अगमासि । यदा अज्जिषु ते  
अज्जतिथिया परिव्याजका—“दिट्ठा तो सुदरी परिव्याजिका बहुजनन १  
अभिक्खण जेतवन आगच्छन्ता” ति । अथ न जीविता बोरोपेया तत्थव  
जेतवनस्स परिप्पाय कूपे निसणित्वा येन राजा पसेनदि कोसलो तेन  
उपसङ्कमिषु, उपसङ्कमित्वा राजान पसेनदि कोसल एतद अबोचु—‘मा  
सा महाराज १ सुन्दरी परिव्याजिका सा नो न दस्सती’ ति २

१ C यदा तेस (१) अज्जतिथिया परिव्याजका ते (?) दिट्ठा खो  
मुदरी’ति, तत्थअज्जिअस’ति जानिषु ते दिट्ठा (?) ति पदिट्ठा जेतवन  
आगच्छति (ई-स्याने) च यिसेसतो दिट्ठा बहुल दिट्ठा बहुला दिट्ठा’ति अत्थो,  
A यदा अग्गे अज्जतिथिया D यदा तेस (१) अज्जतिथियान—अग्ग्  
पाट

२ D °ज्जो

३ A °क्खाय, C °आ

४ ABD °मि

“कृत्यं पन तुम्हे आसञ्जया ति ।

जतयने महाराजा’ति ।

तन हि जतवन विचिनया’ति ।

अयं सो त अञ्जनिस्त्रियया परिब्बाजवा जेतवन विचिनित्वा यथानिबिखत परिखाकूपा<sup>१</sup> उद्धरित्वा मञ्चव आरोपत्वा सार्वत्य पवसत्वा रयियाय<sup>२</sup> रयिय सिद्धघाटकन सिद्धघाटक उपसङ्गमित्वा मनुस्मे उज्जापसु—‘पत्सथ’ द्या । सख्यपुत्तियान कम्म । अलज्जिनो इमं समणा सख्यपुत्तिया दुस्सीला पापधम्मा मुसावादिनो अन्नहमचारिनो । इमहि नाम धम्मचारिनो समचारिनो ब्रह्मचारिनो सच्चवान्निो सीलवन्तो कल्याणधम्मा पटिजानिस्सन्ति । नत्थि इमेस सामञ्ज, नत्थि इमेस ब्राह्मञ्ज नट्ट इमेस सामञ्ज नटठ इमेस ब्राह्मञ्ज, कुतो इमेस सामञ्ज कुता इमेस ब्राह्मञ्ज अपगता इमे सामञ्जा, अपगता इमं ब्राह्मञ्जा कथं हि नाम पुरिसो पुरिसक्खिच्च करित्वा इत्थि जीवित्ता वारोपेस्सती’ति ।

‘तेन खो पन समयेन सार्वत्थिय मनुस्सा भिक्खू दिस्वा असमाहि परमाहि वाचाहि अवकोसन्ति परिमासन्ति रोसन्ति विहेसन्ति—‘अलिज्जिनो पे वोरोपेस्सती ति ।

अयं खो सम्बहुला भिक्खू पुब्बण्हसमय निवासेत्वा पत्तचीवरदमाय सार्वत्थि पिण्डाय पावित्तिमु सार्वत्थिय पिण्णाय चरित्वा पच्छाभत्त पिण्डपात पटिक्कन्ता यन भगवा तेनुपसङ्गमिमु उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसीदिमु एकमन्त निसिन्ना खो ते भिक्खू भगवन्त एतदवोचु— एतरहि भन्ते । सार्वत्थिय मनुस्सा भिक्खू दिस्वा प वोरोपेस्सती ति ।

न एसो भिक्खवे । सहो चिर भविस्सति सत्ताह एव भविस्सति सत्ताहस्स अञ्चपन अन्तरयायिस्सति । तन हि भिक्खवे य मनुस्सा भिक्खू न्तिस्वा पे विहेसन्ति, ते तुम्हे इमाय गाथाय पटिचोत्थ—

अभूतवादी निरय उपेति यो चापि क्त्वा न करोमीति चाह ।

उभा वि स पेच्च<sup>३</sup> समा भयन्ति निर्हीनङ्गमा मनुजा परत्था’ति ॥

अयं खो त भिक्खू भगवतो सन्निक इमं गाथं परियापुणित्वा य मनुस्सा भिक्खू न्तिस्वा विहेसन्ति ते इमाय गाथाय पटिचोत्तेन्ति<sup>४</sup>— अभूतवादी पे

<sup>१</sup> A °वत्ता

<sup>२</sup> AD रयिया

<sup>३</sup> ACD वच्च

<sup>४</sup> A °अति

परत्या<sup>१</sup>ति—मनुस्सान एतदहोसि । “अकारवा<sup>२</sup> इमे समणा सम्यपुत्तिया,  
न इमहि<sup>३</sup> वत सपन्ति<sup>४</sup> इम समणा सम्यपुत्तिया<sup>५</sup> ति ।

नेव सो सहो चिर अहोसि, सत्ताह एव सहो अहोसि, सत्ताहस्स अच्चयेन  
अन्तरघायि । अथ सो सम्बहुला भिक्खू येन भगवा तेनु<sup>६</sup>उपसङ्गमिसु, उप  
सङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादत्वा एवमन्त निसी<sup>७</sup>त्तिसु एवमन्त निसिप्पा खो त  
भिक्खू भगवन्त एतदधोचु—“अच्छरिय भन्ते । अब्भुत भन्ते । याव मुभासित  
सो च<sup>८</sup> इद भन्त । भगवता न<sup>९</sup> मो भिक्खवे सहो चिर भविमस्सति सत्ताहस्स  
अच्चयेन अन्तरघायिस्सती<sup>१०</sup> ति । अन्तरहितो सो भन्ते । सहो<sup>११</sup> ति । अथ सा  
भगवा एतमत्थं विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानसि—

तुदति वाचाय जना असज्जाता परेहि सङ्गामगत व कुज्जर ।

सुत्तवान वाक्ख फरस उदीरित अधिवासय भिक्खु अदुदुच्चित्तो<sup>१२</sup> ति ॥८॥

### ( ३६—उपसेन-सुत ४१६ )

एव मे सुत—एक समय भगवा राजगहे विहरति बेलुवने कल-दकनिवापे ।

अथ खो आगस्मतो उपसेनस्स वड्ढगतपुत्तस्स<sup>१</sup> रहोगतस्स पटिसल्लीनस्स एव  
चेतसो परिवितक्को उदपादि—“एवा वत म, सुल्लु वत मे सत्था च मे भगवा  
अरह सम्मासम्बुद्धो स्वाक्याते च म्हि धम्मविनय अगारस्सा अनगारिय पब्बजितो  
सन्नह्मचारियो च मे सीलवन्तो वत्थाणधम्मा सीलेसु च म्हि परिपूरकारी समा  
हितो च<sup>२</sup> म्हि, एक्कगचित्तो अरहा च अम्हि खीणासवो, महिद्विवो च म्हि  
महानुभावो, भद्दक म जीवित भद्द मरणं ति । अथ सो भगवा आगस्मतो  
उपसेनस्स वड्ढगन्तपुत्तस्स<sup>३</sup> चेतसा चेतोपरिवितक्क अज्जाय ताय वेलाय इम  
उदान उदानेसि—

म जीवित न तपति, मरणन्ते<sup>४</sup> न सोचति ।

स चे ण्ठिपदो धीरा, सावमज्जे न साचति ।

उच्छिन्नमवतण्हस्स<sup>५</sup> सन्तचित्तस्स भिक्खुनो ।

विवक्खीणो<sup>६</sup> जातिससारो न त्थि तस्म पुन भवो<sup>७</sup> ति ॥९॥

<sup>१</sup> AC अकारण, D अका

<sup>२</sup> AD निस्समेहि

<sup>३</sup> AD समत्त<sup>१</sup>, B अब्बन्त<sup>२</sup>

३९ <sup>४</sup> D वकन्त<sup>०</sup>

<sup>५</sup> AB मरणते, C मरणते मरणसणखाते अते मरणसमीपे वा

<sup>६</sup> ABCD <sup>०</sup> तण्हाय

<sup>७</sup> BD विक्खितो, A विक्खिनो



## ( ४०—मारिपुत्त सुत्त ४।१० )

एव मं सुत्त—एव समयं भगवा साजत्थियं विहरति जेतवने अनामपिण्डकस्स आरामे ।

तेन स्वा पन्न समयेन जायस्मा सारिपुत्तो भगवतो अविदूरे निसिन्नो हानि पल्लव्ण आभुजित्वा उज्जु काय पणिघाय अत्तना उपसम पच्चवक्खमानो । अस्सा सो भगवा जायस्मान्त मारिपुत्त अविदूरे निसिन्न पल्लव्ण आभुजिया उज्जु काय पणिघाय अत्तना उपसम पच्चवक्खमान । अयं सो भगवा एतमाप्य विट्ठित्वा ताय बलाय हम उत्पन्न उत्पत्ति—

उपसन्नसत्तचित्तस्स<sup>१</sup> नत्तिच्छिन्नस्स<sup>२</sup> भिक्खुनो ।

विक्खानो<sup>३</sup> जातिमसारो मुत्ता सो मारवघना<sup>४</sup> नि ॥१०॥

अधियवगो चतुथा (तस्स) उद्धान—

मधिया<sup>५</sup> उद्धता<sup>६</sup> गापाला<sup>७</sup> जुण्हा<sup>८</sup> नागन पञ्चम ।

पिण्डोणे सारिपुत्तो च सुदरी भवति जट्टम ।

उपसन्नो बद्धगन्तपुत्तो सारिपुत्तो च ते दसा<sup>९</sup> नि

<sup>१</sup> DA उपसन्न°

<sup>२</sup> AD नत्थि च्छिन्नस्स B नत्ति°, C नेत्तिच्छिन्नस्स'ति नेत्ति उच्चति  
भवतण्हा ससारस्स नयन्तो

<sup>३</sup> ABD विविक्खानो

<sup>४</sup> ABD °अ

<sup>५</sup> B उद्धित, A उद्धित, D उद्धित

## ५—सीनथेर-वग्गो

( ४१—राज-सुत्त ५।१ )

एव मे सुत्त—एव समय भगवा सावत्थिय विहरति जेतवो अनायपिण्ड कस्स आरामं ।

तत्र खो पन समयेन राजा पसेनदि कोसलो मल्लिकाय देविया सद्धि उपरिपासादवरगतो हाति । अय खो राजा पसेनदि कोसलो मल्लिक देवि एतद्वोच— अत्थि नु खो त मल्लिके ! कोच'ज्जो अत्तना पियतरो ति ?

"नत्थि खो म महाराज ! कोच ज्जो अत्तना पियतरो । तुम्ह पन महा राज ! अत्थ' ज्जो वाचि अत्तना पियतरो नि ?

"मम्ह पि खो मल्लिके ! न' त्य ज्जो कोचि अत्तना पियतरो नि ।

अय खो राजा पसेन<sup>१</sup> कासला पासाला आराहि<sup>२</sup> वा या भगवा ते<sup>३</sup> नुपसङ्गमि, उपमङ्गमि<sup>४</sup>त्वा भगवन् अभिवादेत्वा एकमन्त निमीदि, एकमन्त निसिन्नो खो राजा पसेनदि कोसलो भगवन् एतद्वोच— 'इधाह भन्ते ! मल्लिकाय देविया उपरिपासादवरगतो मल्लिक देवि एतद्वोच—अत्थि प

पियतरो ति ? एव वुत्त मल्लिका देवि म एतदवाच—न त्थि पे पियतरो<sup>५</sup> ति । एव वुत्तोह भन्ते ! मल्लिक देवि एतद्वोच । " मम्ह प पियतरो ति ।

अय खो भगवा एतमत्थ विदिवा ताय बैलाय इम उदान उदानसि— सवा दिसा अनुपरिगम्भ<sup>६</sup> चेतसा नेव ज्जगा<sup>७</sup> पियतरमत्तना ववचि । एव पि सो पुष्पु<sup>८</sup> अत्तपरेम, तस्मा न हिंस पर अनवामा ॥१॥

४१ १<sup>०</sup> ABD °इ

<sup>१</sup>A अज्जगा

<sup>१</sup> ABD °अ

<sup>२</sup>C पुष्पु=वि

<sup>३</sup> BD °कम्म

<sup>४</sup>सं वित्तु

## ( ४२—अप्यायुक्-मुत्त ५।२ )

एव म शुभ—एतं समयं भगवा सावस्थियं विहरति जेतवने अनायविगिरस्य आगम ।

अयं सो जायस्मा आनन्दो मायस्मपय पन्थिगतां पुट्टीं यत्तं भगवा तावुगद्वरमि, उपमन्त्रमिव्या भगवन्तं अभिजात्वा एवमन्त्रं निर्मात्ति, एवमन्त्रं विमिश्रागो जायस्मा आनन्दो भगवन्तं एतादाय—'अच्छन्मिं भन्त ! अच्छन्मिं भन्त ! यावन्त्यायुता हि भन्त ! भावतां भाता अहमि, सत्तात्त्रान' भगवन्ति भगवा माता वाचमन्त्राणि नृगितराय उपमन्त्रनी नि ।

'एवमेव' आनन्द ! अप्यायुक्ता हि बोधिसत्तागतरो ह्यति सत्तात्त्रागो बोधिसत्तानु बोधिसत्तागतरो वात्तद्वरानि नृगितराय उपमन्त्रनी नि ।

अयं सो भगवा एवमन्त्रं विमिश्रा ताव वन्त्राय इमं उपा उपायमि—  
य क्वि भूता भरितमिति ये वाति सव्वे गमित्तमि पहाय भू ।

तं मन्त्र जानि<sup>३</sup> कुमन्त्र विमिश्रा आपाविरो वद्वचारिय पेरव्या नि ॥२॥

## ( ४३—कुट्टी मुत्त ५।३ )

एव म शुभ—एतं समयं भगवा राजगहे विहरति जेतवने वन्त्रवनिवाय ।

तेन सा पा समयं राजगहे सुप्पबुद्धो नाम कुट्टी मनुगन्तिदो अहोसि मनुस्सवपणा मनुस्सराज । तेन सा पा समयं भगवा महन्धिया परिणाय पटिवुतो धम्म दग्गन्तो निमित्तो हानि । अहमा सा सुप्पबुद्धो कुट्टी त महाजनवाय वूत्तो<sup>१</sup> व मन्निपत्तिन त्स्वान स्म एवमेमि । निस्ससम सा एत्थ विज्जिच्च छात्तीय वा भोजनाय वा भाजियनि । यन्नूनाह येन सो महाजनवाया तनुपमद्वरमय्यं । अणव नाभय विज्जिच्च छात्ताय वा भोजनाय वा सभय्यति । जय सा सुप्पबुद्धो कुट्टी येन सा महाजनायो तेनुपसद्वरमि । अहमा सा सुप्पबुद्धो कुट्टो भगवन्त मह त्थिया परिणाय पटिवुत्त धम्म दग्गन्तो विमिय, त्स्वान स्म एताहमि —न सो एत्थ विज्जिच्च छात्तीय वा भोजनीय वा भाजियनि<sup>२</sup> । समथो अय मोत्तयो परि सति<sup>३</sup> धम्म दग्गति । यन्नूनाहमपि धम्म गुणय्य नि तत्थेव एवमन्तं निर्मादि—  
अहमि धम्म सोत्तायो<sup>४</sup> नि ।

<sup>१</sup>BC तुति तत्राय ।

<sup>२</sup>A एव एव?

<sup>३</sup>AC जानितु

४३ <sup>४</sup>A नाजिस्तति

<sup>५</sup>ABD °इ

<sup>६</sup>AB सा D स्त

अथ सो भगवासब्बावन्त परिस चेतसा चेतो परिच्च मनमा अवासि—कोनु खो इध भग्गो धम्म विज्जातु ति । अहमा खो भगवा सुप्पबुद्ध कुट्ठि तस्स परि साध निसिन्न, दिस्वान स्स एतदहोमि—अथ खो इध भग्गो धम्म विज्जातु'ति । सुप्पबुद्ध कुट्ठि आरम्भ अनुपुब्बिकथ कथेसि सेय्ययीद—शाणकथ सीलकथ सग्गकथ कामान आदीनव ओवार सविलेस निकम्मे च आनिसस पनामेसि । यदा भगवा अज्जासि सुप्पबुद्ध कुट्ठि कल्लचित्त मुदुचित्त विनीवरणचित्त उदग्गचित्त पसन्नचित्त, अथ या<sup>१</sup> युद्धान सामुक्कसिका धम्मदेसना स पवाससि दुक्ख समुदय निरोध मत्त । सेम्पयापि नाम सुद्ध वत्थ अपगतवालक्क सम्मदव रत्तन पटिगण्हेय्य, एवमेव सुप्पबुद्धस्स कुट्ठिस्स तस्मि एव आसने विरज यीतमल धम्मचक्रु उद पादि—य किञ्चि समुदयधम्म सब्बत निरोधधम्म' ति । अथ खो सुप्पबुद्धो कुट्ठी ण्डिधम्मा पत्तधम्मो विदितधम्मो परियाणाळहधम्मो तिण्णविचिक्खिच्छा विगतकथकथो वसारज्जपत्तो अपरपच्चयो<sup>२</sup> सत्थु सासने उट्ठासना यन भगवा तेनुपसङ्गमि, उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादेत्था एवमन्त निसीदि, एवमन्त निसिगा खो सुप्पबुद्धो कुट्ठी भगवन एवदवाव—“अभिक्वन्त भन्ते । अभिक्कन्त भन्ते सेम्पयापि भन्ते । निक्कुज्जित वा उक्कुज्जेय्य पटिच्छन्न वा विवरेय्य भूळहस्स वा मग्ग जाविकखेय्य जघकारे वा तेल्पज्जोत धारय्य—‘वस्सुमन्तो रूपानि वक्कन्ती'ति । एवमव भगवता अनेकपरियायन धम्मा पवामिता, एसाह भन्ते । भगवन्त सरण गच्छामि धम्मञ्च भिक्खुसघञ्च, उपासा म भगवा धारतु अज्जतग्गे पाणुपत सरण गत' ति ।

अथ खो सुप्पबुद्धो कुट्ठी भगवता धम्मिया कथाय सद्धस्सितो समावपितो समुत्तजितो सम्पहसितो भगवतो भासित अभिनत्तिवा अनुमादित्वा उट्ठायासता भगवन्त अभिवादेत्वा पक्खिण वत्वा पक्कामि । अथ खो सुप्पबुद्ध कुट्ठि गावी तवणवच्छा अविपातेत्वा जीविता योरापेसि ।

अथ खो सम्बट्टला भिक्खू यन भगवा तेनुपमङ्गमिसु उपमङ्गमित्वा भगवत अभिवादेत्वा एवमन्त निसीदिषु एवमन्त निसिगा खो ते भिक्खू भगवन्त एतदवोचु—‘यो सो भन्ते । सुप्पबुद्धो नाम कुट्ठी भगवता धम्मिया कथाय सद्धस्सितो समावपितो समुत्तजितो सम्पहसितो, सो वालङ्कततो तस्स वा गति वो अभिसम्परायो' ति ।

“पण्डितो भिक्खव । सुप्पबुद्धो कुट्ठी पच्चपादि धम्मस्तानुधम्म, न च

<sup>१</sup> परपच्चयो

<sup>२</sup> AB° इत्वा न D ग्रन्थे

म धम्माधिारण वि.गणि' । सुखबुद्धा धियगये ! कुण्डो वि.ग संयोजनानं परि  
कयया गो ता प यो अविनिशानाम्मा वि.गता मग्गाधिरायया" वि ।

तदे पृथ तत्त्वतो भिन्नु भगवान् एवमाह—“वा तु सा भवति” इति,  
 ता एवमाया गुणतुला कृत्वा मनुष्यवृद्धिं भवति मनुष्यतया मनुष्य  
 सा। ११?

‘भूगुप्तं निवर्त्तय’ मुपबृद्धा तुष्टी इत्यस्य यत्र राजगृहं गच्छितुं  
 अहामि । सो ज्योतिषाभूमिं निवर्त्तय अहमा तमर्त्तयिष्ये<sup>३</sup> पश्चात्तुष्टं गच्छेत् निवर्त्तय  
 पवित्रं, निवर्त्तय एव गच्छेत्तमि—वर्त्तय मुष्टं निवर्त्तय नि निवर्त्तयिष्ये<sup>४</sup> अत्र  
 सध्यामता(?)<sup>५</sup> पश्चिमा गच्छेत्तमि । सो तस्य यमस्य विवाहनं यदनि यमार्त्तयि  
 यदनि यमगच्छेत्तमि यदनि यमगच्छेत्तमि यदनि यमगच्छेत्तमि निवर्त्तय पश्चिमा ।  
 मन्त्रात् यमार्त्तय विवाहायमेव इत्यस्य यत्र राजगृहं मनुमन्त्रिहः अहामि मनु  
 सगच्छेत्तमि मनुमन्त्रयवो मा मयागच्छेत्तमि यमार्त्तय आगच्छ मद्य समाप्ति,  
 गोत्रं समाप्ति, मुत्र समाप्ति, चाग समाप्ति, यच्छ समाप्ति । मा मयागच्छ  
 पश्चिमा यमार्त्तय आगच्छ मद्य मयागच्छिष्ये मा मयागच्छिष्ये मा मयागच्छिष्ये  
 यिष्ये चाग समाप्ति यिष्ये यच्छ मयागच्छिष्ये चायस्य भदा पर मरणा मुक्ति  
 सगच्छ एव यच्छ दद्यात्तार्त्तयानं सध्यामता । मा मया अहो अहो अहो अहो  
 यच्छेत्तमि यच्छेत्तमि यच्छेत्तमि यच्छेत्तमि यच्छेत्तमि यच्छेत्तमि यच्छेत्तमि यच्छेत्तमि

अथ सा भगवा ल्लगत्थ जिन्तिरा साय बेलाय न्म उन्नत उन्नतमि—

‘तस्यैव विगमानी च निज्जमान परराय ।

पण्तिता वायगारस्मि पाण्तिरि परियञ्जय<sup>०</sup>नि ॥३॥

( ४४—कुमार-सुत ५१४ )

तर्क स सुगुण—एक समय भगवा सावन्धिय विहरनि जगवन अनापविष्ट  
करय आराम ।

तेन सो पन ममयो सम्बहूला नुमारवा अनरा च सार्वधि अन्तरा  
च जनवन मच्छन् वाधन्ति । अय सो भगवा पुण्हसमय निवारसेत्वा

<sup>1</sup> AD सच्चवादि—इति नद्विBपुस्तके      <sup>2</sup> A °ति      <sup>3</sup> ABD°

\* A निद्रुह्रित्वा      \* C अ पसय्यामतो कृत्वा' ति      अयपसय्य  
पत्वा, A अव्यामतो' D अव्यामतो, B अपथ्यामातो      \* A °इ

पतञ्जीवरमाणाय सावत्थि पिण्डाय पाविसि । अद्दसा खो भगवा त सम्महुले कुमारके अन्तरा च सवत्थि अन्तरा च जेतवन मच्छन् वाधन्, त्तिस्वान यन १ कुमारका तेनुपसद्धमि, उपसद्धमित्वा त कुमारके एतदवाच—' नायथ वो तुम्हे कुमारवा । दुक्खस्स, अप्पिय वो दुक्खस' ति ? एव भन्ते । भायाम मम मन्ते । दुक्खस्स, अप्पिय नो दुक्खस्सि ।

अथ सा भगवा एतमत्थं विदित्वा तां वेलाय इम उगान उगनेति—  
स चे वो दुक्ख अप्पिय, मा वत्थ पापकं कम्म आवि वा यं वा रहा ।  
स चे वा पापकं कम्म परिस्समं करोय वा ।  
न वो दुक्खा मुत्थं<sup>१</sup> अत्थि उपेच्चापि<sup>२</sup> पलायनं<sup>३</sup> ति ॥ १॥

### ( ४५—उपोसथ सुत ५१५ )

एव म सुत—एवं समय भगवा सावत्थियं विहरन्ति पुन्यारामे निगारमातु पासाहे ।

तेन खो एन समयेन भगवा तत्तुपोसथं भिक्खुसङ्घपरिवृतो नित्तिनो हानि । अथ खो आयस्मा जानदो अभिक्खन्ताय रत्तिया निक्खन्ते पठमे यामे उट्ठायासना एवम चीवरं वत्था येन भगवा तेनञ्जलिं पनामेत्वा भगवन्त एतद्वोच—' अभिक्खन्ता भन्ते । रत्ति, निक्खन्ता पठमो यामो, चिरनिनितो भिक्खुसङ्घो, उद्दिस्सतु<sup>४</sup> भन्ते । भगवा भिक्खून् पानिमोक्ख<sup>५</sup> ति । एव वुत्ते भगवा तुण्ही अहोसि । दुतियं पि खो आयस्मा जानदो अभिक्खन्ताय रत्तिया निक्खन्ते मज्झिमे यामे उट्ठायासना एवम चीवरं वत्था येन भगवा तेनञ्जलिं पनामेत्वा भगवन्त एतद्वोच—' अभिक्खन्ता भन्ते । रत्ति, निक्खन्तो मज्झिमो यामो, चिरनिनितो भिक्खुसङ्घो, उद्दिस्सतु<sup>६</sup> भन्ते । भगवा भिक्खून् पानिमोक्ख' ति । दुतियं पि खो भगवा तुण्ही अहोसि । ततियं पि खो आयस्मा जानदो अभिक्खन्ताय रत्तिया निक्खन्ते पच्छिमे यामे उट्ठने<sup>७</sup> अरणे नत्तिमुत्तिपा रत्तिया उट्ठायासना एवम चीवरं वत्था येन भगवा तेनञ्जलिं पनामेत्वा भगवन्त एतद्वोच—' अभिक्खन्ता भन्ते । रत्ति, निक्खन्तो<sup>८</sup>

<sup>१</sup> D पुस्तक एव, योजित—मेत्रि चठस <sup>२</sup>A वरिमाय <sup>३</sup>D ते

<sup>४</sup> मुत्थं, D यमुत्थं, C मुत्थं <sup>५</sup>C उपेच्च सच्चिच्च, A पच्चापि, B उपट्ठाय

D उपट्ठव <sup>६</sup>C पलायते'ति पि पठन्ति (?)

४५ मावुडयं चूलवगा ५१५ <sup>७</sup>A सातु



करय्याय, पतिमोक्त<sup>१</sup> उद्दिसेय्याय । अट्टानमेत भिक्खवे । अनवरासो, य  
तयातो अपरिमुढाय परिसाय उपोसथ करेय्य पाटिमावण<sup>२</sup> उद्दिसेय्य ।  
अट्टमे भिक्खवे । महासमुद्दे अच्छरियो अब्भुता<sup>३</sup> घम्मा, ये त्तिस्वा दिस्वा असुरा  
महासमुद्दे अभिरमन्ति । क्तमे अट्ट—

१ “महासमुद्दो भिक्खवे । अनुपुब्बनित्तो अनुपुब्बपोणो अनुपुब्बपम्भारो,  
नायतक्कनेव पपातो । य पि भिक्खवे । महासमुद्दो अनुपुब्बनित्तो पपातो,  
अय पि भिक्खवे महासमुद्दे पठमो अच्छरियो अब्भुतो घम्मो, य दिस्वा त्तिस्वा  
असुरा महासमुद्दे अभिरमन्ति ।

२ “पुन च पर भिक्खवे । महासमुद्दो ठित्तघम्मो वेल नातिवत्ति य पि  
भिक्खवे । महासमुद्दो ठित्तघम्मो वेल नानिवत्तन्ति अय पि भिक्खवे । महासमुद्दे  
दुतियो अच्छरियो अब्भुतो घम्मो, य दिस्वा दिस्वा असुरा महासमुद्दे अभिरमन्ति ।

३ “पुन च पर भिक्खवे । महासमुद्दो न मतेन कुणपेन सवमति य होति  
महासमुद्दे मत कुणप त विप्प यव तीर वाहेति<sup>४</sup> षले उत्सारन्ति<sup>५</sup> । य पि भिक्खवे ।  
महासमुद्दो न मतेन षल उत्सारेति, अय<sup>६</sup> पि भिक्खवे महासमुद्दे तनियो  
अच्छरियो अब्भुतो घम्मो, य दिस्वा दिम्वा असुरा महासमुद्दे अभिरमन्ति ।

४ ‘पुन च पर भिक्खवे । या काचि महान्नियो सेय्ययीद—गङ्गा, घमुना,  
अबिरवती, सरभू मही ता महासमुद्द पत्ता जहन्ति पुरिमानि नामगोत्तानि,  
महासमुद्दा त्वेव सद्रव्य गच्छन्ति । य पि भिक्खवे । या काचि पे  
गच्छन्ति, अय पि भिक्खवे । महासमुद्दे चतुत्थो अच्छरियो अब्भुतो घम्मा, य त्तिस्वा  
दिस्वा असुरा महासमुद्दे अभिरमन्ति ।

५ “पुन च पर भिक्खवे । या च लोके सवन्तियो महासमुद्द अप्पन्ति, या  
च अन्नल्लिक्वा धारा पपतन्ति न तेन महासमुद्दस्स ऊनत्त वा पूरत्त वा पज्जायति ।  
य पि भिक्खवे । या च लोके प पज्जायति । अय<sup>६</sup> पि  
भिक्खवे । महासमुद्दे पञ्चमो अच्छरियो प अभिरमन्ति ।

६ “पुन च पर भिक्खवे महासमुद्दो एवरसो लाणरसो । य निक्खव  
समुद्दो एवरसो लोणरसो अय पि भिक्खवे । महासमुद्दे छट्ठो अच्छरि  
पे अभिरमन्ति ।

<sup>१</sup> सादृश्य घुल्लज्जणे ९।२

<sup>२</sup> AD चाह

<sup>३</sup> D °अ

<sup>४</sup> C पापहेति ऋ ३ D ८३

<sup>५</sup> ACD उत्सारेति D अस्मादेति, [त्रिपु स्थानम्]



७ 'पुन न पर भिक्खवे' महासमुद्धो बहुरतनो अनेकरतनो तत्रिमानि रानानि सय्यधीः—मुत्ता मणि बल्लरियो सङ्गवा सिला पक्कलं रजत जानह्पं लाहित्तद्वसो मसारणला। य पि भिक्खवे महासमुद्धो<sup>१</sup> बहुरतनो मसारणलो, अय पि भिक्खव । महासमुद्ध सत्तमो अच्छरियो वे अभिरमन्ति ।

८ पुन च पर भिक्खवे<sup>२</sup> महासमुद्धो महा भूतान जायामो तत्रिम भूता—तिमि तिमिद्वगणे निर्मरपिडगलो<sup>३</sup> अगुरा तामा गच्छया । मणि महासमुद्धे शात्ममनिका पि अत्तभावा द्वियावासनिवा पि अत्तभावा, नियोजनसनिवा पि अत्तभावा चनुयाजनसनिवा पि अत्तभावा पञ्चयोजनमनिका पि अत्तभावा । य पि भिक्खवे महासमुद्धो महा वे अत्तभावा, अय पि भिक्खवे । महासमुद्ध जट्टो अच्छरिया प अभिरमन्ति इम रौ भिक्खव महासमुद्ध जट्ट अच्छरिया वे अभिरमन्ति ।

'एव एव सा भिक्खवे' इमस्मि धम्मविनय जट्ट अच्छरिया अभुत्ता घम्मा य त्तिवा त्तिवा भित्त इमस्मि धम्मविनय अभिरमन्ति । वनमे जट्ट—

१ सम्यथा पि भिक्खवे । महासमुद्धो अनुपुब्बतिष्ठो अनुपुब्बपोणो अनुपुब्ब पमारो नायतनम एव पपाता एवमेव सा भिक्खवे इमस्मि धम्मविनये अनुपुब्बमित्ता अनुपुब्बतिष्ठिया अनुपुब्बपत्तिपा नायतनम एव अच्छापटिद्वेषो । य पि भिक्खव इमस्मि धम्मविनय प अच्छापटिद्वेषो अय पि भिक्खव । इमस्मि धम्मविनय पठमो अच्छरियो अभुत्तघम्मो, य त्तिवा त्तिवा भित्तु इमस्मि धम्मविनय अभिरमन्ति ।

२ सम्यथा पि भिक्खव । महासमुद्धो ट्ठिधम्मो बल नातिवत्तति, एवमेव सा भिक्खवे य भया माववान मिक्खापद पञ्जसत्त मम सावका जीवितहत्तु पि नातिकम्पति । य पि भिक्खवे मया प नातिकम्पति, अय पि भिक्खव । इमस्मि धम्मविनय दुतियो अच्छरियो प अभिरमन्ति ।

३ सम्यथा पि भिक्खव । महासमुद्धो न मनेन कुणपव सवसन्ति । य होति महासमुद्ध मत्त कुणप त त्तिप यव तीर वाहति, यथे उस्सारेति, एवमेव सा भिक्खव । या मो पुग्गणे दुस्सीत्ते पापघम्मो अनुवि सद्दवस्सरसमाचरा पच्छिन्नघम्मता जसमणा समणपतिज्जा अत्रहाचारी ब्रह्मचारिपटिज्जो

<sup>१</sup>BD तिमिरपिडगलो [त्रिषु स्थानेषु], A तिमिपिडगलो, तिमिडगलो [च] तिमिपिडगलो, C (चुलवग्ग) तिमितिमिडगलो ।

<sup>२</sup>C पापाहेहि अपनेति, D पपेति

<sup>३</sup>A वसम्बुव

अन्योऽपि ब्रह्मसुतो ब्रह्मसुजातो, न तेन सधो भवसति, अथ खो न सिष्यमेव  
सिष्यपति वा उच्यते । किञ्चापि सो होति भज्ये भिक्षुसंघस्य नित्यतो, यय  
खो मां ब्रह्माएव' सधमहा सधो च तेनायं पि भिक्षवे । यो सो पुण्यतो  
५ सधो च तेन, अयं पि भिक्षवे । इमस्मि धम्मविनये ततिसो अञ्जरियो

५ अभिरमन्ति ।

४ 'सिष्यया पि भिक्षवे । या वाचि महानदियो सिष्ययोद—गङ्गा यमुना  
अचिरवतो सरभू मही, ता महासमुद् पत्ता पजहन्ति पुरिमानि नामगोत्तानि,  
महासमुद्दे त्वेव सद्ध्यं गतानि, एवमेव खो भिक्षवे । चत्तारा वण्णा—सत्तिया  
ब्राह्मणा धेस्मा सुद्धा से तयागनप्यवदिनं धम्मविनयं अगारस्मा अनगारियं  
पञ्चविंश जहन्ति पुरिमानि नामगोत्तानि, ममना सक्कपुत्तिया त्वेव सद्ध्यं  
गच्छति । यं पि भिक्षवे । चत्तारा ५ गच्छति, अयं पि भिक्षवे ।  
इमस्मि धम्मविनये चतुया अञ्जरियो ५ अभिरमन्ति ।

५ 'सिष्यया पि भिक्षवे । या चलावे सवन्तियो महासमुद् अप्पति या  
च अत्तविन्ना धारा पपनन्ति, न तन महासमुद्ध्यं ऊनत्त वा पूरत्त वा पञ्चा  
यति एवमेव खो भिक्षवे । बहु च पि भिक्षू अनुपादिमेनायं निम्बानपातुया  
परिनिम्बायन्ति, न तं निम्बानपातुया ऊनत्त वा पूरत्त वा पञ्चायति । यं पि  
भिक्षवे । बहु चे पि ५ पञ्चायति, अयं पि भिक्षवे ।  
इमस्मि धम्मविनये पञ्चमो अञ्जरियो ५ अभिरमन्ति ।

६ 'सिष्यया पि भिक्षवे । महासमुद्दा एकरसो एणरसो, एवमेव या  
भिक्षवे अयं धम्मा एकरसो विमुत्तिरसो । यं पि भिक्षवे । अयं धम्मा एकरसो  
विमुत्तिरसो अयं पि भिक्षवे । इमस्मि धम्मविनये छट्ठा अञ्जरियो ५  
अभिरमन्ति ।

७ 'सिष्यया पि भिक्षवे । महासमुद्दा बहुगता अणरसो, सपिमाणि  
रत्नानि मय्ययीद । मुत्ता मणि उरुगिया मद्ध्यं मिया एवा एव जतं जातयो  
राहित्थको मसारण, एवमेव खो भिक्षवे । अयं धम्मा बहुगता अणरसो  
सिष्ययोद—चत्तारा सत्तिया धम्मविनया अगारो इतिपाया मत्तिपाया  
पञ्च वगनि मतं पाप्पय्याणि अगिया अट्टिमयो मया । यं पि भिक्षवे । अयं  
धम्मा ५ मया, अयं पि भिक्षवे । इमस्मि धम्मविनये सप्तमो  
अञ्जरियो ५ अभिरमन्ति ।

८ 'सिष्यया पि भिक्षवे । महासमुद्दा मया । मया आवासी, तां एव भुजा—  
तिमि निमित्तया निमित्तमिदं अयं मया मय्ययीद, मणि महासमुद्दे  
यात्रमनिका पि अणवया, इतिपायापाया पि अणवया, निपायापाया



अन्तोपूति अवस्सुतो कस्सम्बुजातो, न तेन सघो सवसति, अयं सो न खिप्पमेव सन्निपत्तिवा उक्खिपति । किञ्चापि सो होति मज्झे भिक्खुसघस्स निसिन्धो, अथ खा गो आरवाएव' सघम्हा सघो च तेनायं पि भिक्खवे । यो सो पुग्गलो पे सघो च तेन, अयं पि भिक्खवे । इमस्मिं धम्मविनये ततियो अच्छरियो पे अभिरमन्ति ।

४ 'सैय्यया पि भिक्खवे । या वाचि महान्नियो सैय्यधीद—गङ्गा धमुना अचिरवती सरभू मही, ता महासमुद्द पत्ता पजहन्ति पुरिमानी नामगोत्तानि, महाममुद्दो त्वेव सङ्गव गनानि, एवमेव सो भिक्खवे । चत्तारो वण्णा—उत्तिया ग्राहणा वेस्सा सुद्दा ते तयागतप्पवेदिते धम्मविनये अगारस्मा अनगारियं पब्बजित्वा जहन्ति पुरिमानी नामगोत्तानि, समना सक्कपुत्तिया त्वेष सङ्गा गच्छति । यं पि भिक्खवे । चत्तारो पे गच्छति, अयं पि भिक्खवे । इमस्मिं धम्मविनये चतुत्थो अच्छरियो पे अभिरमन्ति ।

५ 'सैय्यया पि भिक्खवे । या च लावे सवन्तियो महासमुद्द अप्पेन्ति या च अन्तल्लिक्वा धारा पपतन्ति न तेन महासमुद्दस्म ऊनत्त वा पूरत्त वा पञ्जायति एवमेव खा भिक्खवे । बहू चे पि भिक्खू अनुपादिसेसाय निब्बणधातुया परिनिब्बायन्ति, न तेन निब्बानधातुया ऊनत्त वा पूरत्त वा पञ्जायति । यं पि भिक्खवे । बहू चे पि पे पञ्जायति, अयं पि भिक्खवे । इमस्मिं धम्मविनये पञ्चमो अच्छरियो पे अभिरमन्ति ।

६ 'सैय्यया पि भिक्खवे । महासमुद्दो एवरसो लोणरसो, एवमेव सो भिक्खवे अयं धम्मो एकरसा विमुत्तिरसो । यं पि भिक्खवे । अयं धम्मो एवरसो विमुत्तिरसो अयं पि भिक्खवे । इमस्मिं धम्मविनये छट्ठा अच्छरियो पे अभिरमन्ति ।

७ 'सैय्यया पि भिक्खवे । महासमुद्दो बहुरतनो अनवरतनो, तपिमानी रतनानि सैय्यधीद । मुत्ता मणि वेळुरियो सङ्गरो सिला पवाल रजतं जातरूपं लाहित्तनो मसारगल्लं, एवमेव सो भिक्खवे । अयं धम्मो बहुरतनो अनवरतनो सैय्यधीद—चत्तारो सन्निपट्ठाना सम्मप्यधाना चत्तारो इड्ढिपाण पञ्चिद्वियाणि पञ्च घलानि सत्त बोद्धवद्दगानि अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो । यं पि भिक्खवे । अयं धम्मो पे मग्गो अयं पि भिक्खवे । इमस्मिं धम्मविनये सत्तमो अच्छरियो पे अभिरमन्ति ।

८ 'सैय्यया पि भिक्खवे । महासमुद्दो महत्तं भूतां आवासो, तत्रिमे भूता—निमि निमिद्दगलो निमिरविद्दगलो अमुरा नागा गणध्या, सन्ति महाममुद्दे योजनसन्निवा पि अत्तभावा, त्रियात्रासन्निवा पि अत्तभावा नियोजनसन्निवा



नितीदि एवमन्त निमिश्रो खो सोणो उपासको कोटिकण्णो आयस्मन्त महारञ्चान  
एतद्वोच—

“इध मय्ढ भन्ते<sup>१</sup> रहोगतस्स पे पब्बज्जेय्य ति । पब्बाजनु म भन्ते  
अय्यो<sup>२</sup> महा कच्चानो<sup>३</sup> ति ।

एव वुत्ते आयस्मा महाकच्चानो सोण उपासक कोटिकण्ण एतद्वोच—  
‘दुक्कर खो सोण । यावजीव एवमन्त गक्खेय्य ब्रह्मचरिय, इद्धय त्व । सोण  
तयव अगारिकभूतो समाना बुद्धान सासन अनुयुञ्ज वायुण एवमन्त  
एक्खेय्य ब्रह्मचरिय’ति ।

अय खो सोणस्स उपासकस्स कोटिकण्णस्स यो अहामि पब्बज्जाभिसङ्गारो  
सो पटिप्पस्समिम्भ । दुतिय<sup>४</sup> पि खो सोणस्स उपासकस्स कोटिकण्णस्स रहान्त  
स्स पे पब्बजेय्य<sup>५</sup> ति । दुतिय पि खो सोणो उपासको कोटिकण्णा  
यनायस्मा अवोच—“इध पब्बाजनु म भन्ते अय्यो महाकच्चा  
नो”ति । दुतिय पि खो आयस्मा अमहाकच्चानो सोण उपासक कोटिकण्ण  
एतद्वोच—“दुक्कर पे ब्रह्मचरिय<sup>६</sup> ति । दुतिय पि खो गारस  
पे पटिप्परसमिम्भ । तनिय<sup>७</sup> पि खो सोणस्स उपासकस्स कोटिकण्णस्स  
रहोगतस्स पे पब्बजेय्य ति । तनिय<sup>८</sup> पि खो सोणो उपासको  
कोटिकण्णो येनायस्मा पे अवोच—‘इध प  
पब्बाजनु म भन्ते । अय्यो महाकच्चानो ति ।

अय खो आयस्मा महाकच्चानो सोण उपासक कोटिकण्ण पब्बाजेमि । तेन  
सा पन समयेन अवन्तिमुदक्खिणायमो<sup>१</sup> अप्पभिवसुको होति । अय खो आरस्मा  
महारञ्चानो निण्ण वस्सान अच्चयेन विच्छन्त रसिरेन तनो-तनो दसवग्ग  
मिवनुमप मग्निपातेत्वा आयस्मन्त सोण उपरम्प्यान्मि<sup>२</sup> । अय खो आयस्मनो  
सोणस्स वस्स वुट्ठस्म<sup>३</sup> रहागतस्स पटिमन्नीनस्स एय चेत्तमा परिविनररो  
उत्तामि<sup>४</sup>—“न खो म सो भगवा सम्मुत्ता दिट्ठो अपि च सुतो येव म, मा भगवा  
ईन्मो ईन्सो चानि । स चे म उपज्जाया अनुजानय्य,<sup>५</sup> गच्छय्याह गयवन्त  
एम्पनाम अरहन्त गम्मामम्बुत्थ ति ।

अय खो आयस्मा सोणो मायण्हसमय पटिमत्ताना वुट्ठितो येनायस्मा महा  
कच्चानो तेनुपसङ्गमि उपसङ्गमत्वा आयस्मन्त महाकच्चान अभिवादया  
एवमन्त नितीदि, एवमन्त निमिश्रो खो आयस्मा सोण आयस्मन्त महाकच्चान

<sup>१</sup>D अवन्तिदक्खिणपठो \* A सम्पादेति, D उन्नमप्यादेति <sup>२</sup>C वस्स  
वुट्ठस्म A च पोट्थहेनु नयि, B वस्सव० <sup>३</sup>C अनुजानानीति पाठो

तन्मोक्ष—'इयं भगवन् नन् ! रहाणास्स पे त्तिमो पावि । स  
च म गग ( ? ) अनुजानेय्य गच्छयाहं भगवत्तं सम्मनाय अरहन्तं सम्मा  
सम्बुधं नि ।

"साधु साधु माण ! गच्छ हर माण त भगवन् दग्गमनाय अरहन्तं सम्माम्बुधं  
नि । त्तिमो पावि हर माण ! तं भगवन् पाणात्ति पाणात्तीयं सतिद्वयं सत्त  
मानय उतम समममयनुपत्तं सत्तं गुत्तं सतिद्वयं <sup>१</sup>, ताम, त्तिस्वा मम वक्कन  
भगवन्ता पा<sup>२</sup> मिग्गा यत्ति अणासाधं भग्गानत्तं<sup>३</sup> एट्ठुता वत्तं पाणुविहार  
पुच्छ—'आणाया म मत्ता<sup>४</sup> आरम्मा महावच्चाता भगवन्तो पा<sup>५</sup> मिग्गा  
वत्तन्ति अणासाध प पाणुविहारे पुच्छता<sup>६</sup> नि ।

'अयं नन् ति सा आयम्मा माणा आयरमनो महावच्चात्तम्भासितं  
अभिनित्तिंसा वनमात्तिंसा उट्ठपागता आयम्मतं महावच्चात्तं अभिवात्ता  
परिणाय वत्ता मनामनं गगामत्ता पत्तवात्तरामात्ताय येन साधत्ती तन चारि  
परामि अनुपुच्छन साग्गि वरमानो यत्ता मावयी जतवन् अनायपिण्डिस्साराणो  
यत्ता भगवा तत्तागत्तमि उतगत्तमिंसा भगवन्तं अभिवात्ता एवमन्त  
निमोत्ति एवमन्त निमिप्पा सा आयरमा साणो भगवन्तं एवमोक्ष—'अ  
ज्जपाया म प पुच्छती नि ।

'वच्चि भिक्खु ! समनाय वच्चि यापनीयं, वच्चि पि अप्पत्तिमपन  
अद्दानं आगतो न च विण्णवा त्तिन्ना<sup>७</sup>मा' नि ?

'समनीयं भगवा ! यापनाय भगवा ! अप्पत्तिमपनं तादं भन्ते । अद्दानं  
आगता, न च विण्णवन्<sup>८</sup> त्तिन्ना म्ही नि ।

अयं सा भगवा आयस्मन्तं जात्ता आमन्तमि—'इमस्सानद ! आगन्तुस्स  
भिक्खुना भेत्तासन् पञ्जापही' नि ।

अयं सो आयस्मन्ता जानत्तस्स एतत्तामि—'यस्स सो म भगवा जाणा  
पनि—इमस्सानत्ता आगन्तुस्स भिक्खुनी सत्तासन् पञ्जापही नि, इच्छति  
भगवा तन भिक्खुना सद्धि एवविहारं वत्तु<sup>९</sup> च्छति भगवा आयस्मन्ता सोपन  
सद्धि एवविहारं वत्तु नि, यस्मि विहारं भगवा विहरति तस्मि विहारे  
आयस्मन्तो साणम्म सत्तागन् पञ्जापमि । अयं सो भगवा वट्ठुत्तं रत्तं अभोक्कति  
निसात्राय वानिनामत्ता पाद पम्पात्त्वा विहारं पाविमि आयस्मा पि सा सो

महावग्गो द्रष्टव्य AB सतिद्वय, D सतिद्वय

<sup>२</sup>B° ति—परित्यक्त D

<sup>३</sup>AB पिण्डिवन्, न C पुस्तके

<sup>४</sup>A वत्तिमतो

णो बहु वे पाविसि । अथ खो भगवा रत्तिया पच्चूससमय पच्चुदाय आयस्मन्त सोण अज्जेसि—“पटिभातु भिक्खु त धम्म भासिते”ति ।

“एव भन्ते”ति खो आयस्मा सोणो भगवतो पटिस्सुत्वा सोळस अट्ठकवगि हानि<sup>१</sup> सञ्चानव सरेण अमणि । अथ खो भगवा आयस्मतो सोणस्स सरभञ्ज परियासान अम्भनुमोदि—“साधु साधु भिक्खु ! सुग्गहीतानि भिक्खु ! सोळस अट्ठकवगिणानि सुमनसिवतानि भूपधारितानि, वत्थानियासि<sup>२</sup> वाचाय समन्नागतो वित्थदाय अनेलाय<sup>३</sup> अत्थस्स विज्जापनिया । वत्तिवत्तो सि त्व भिक्खु ति ।

“एक्कवत्तो अह भगवा”ति ।

‘विस्स पन त्व भिक्खु ! एव चिर अवासी ति ।

‘चिर दिट्ठो म भन्ते ! वामेसु आदीनवो अपि च सम्बाधो धरावाप्तो बहुविच्चो बहुकरणीया ति ।

अथ खो भगवा एतमत्थ विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानमि—

दित्वा आदीनव लोके जत्वा धम्म निरूपधि ।

अरिया न रमन्ति पापे, पापे न रमन्ति सुची’ति ॥६॥

### ( ४७—रेवत-सुत ५१७ )

एव मे सुत—एक समय भगवा सावत्थिय विहरनि जेतवने अनापपिण्डिकस्स आरामे ।

तन खो पन समयेन आयस्मा कट्ठखा रेवतो भगवन्तो अविहूरे निसिन्नो हाति पल्लव आभुजित्वा उज्जु काय पणिघाय अत्तनो वड्ढमावितरणविमुद्धि पच्चवेक्कमानो । अइसा खो भगवा आयस्मन्त कट्ठसारेवन अविहूरे निसिन्न पल्लव आभुजित्वा उज्जु काय पणिघाय अत्तनो वड्ढमावितरणविमुद्धि पच्चवेक्क मान । अथ ता भगवा एतमत्थ विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानमि—

मा काचि कट्ठवा इध वा हुर वा सक्वेदिया वा परवेदिया वा शायिनो ता पजहति सव्वा अतापिनो ब्रह्मचरिय चरन्ता’ति ॥७॥

<sup>१</sup> सुत्तनिपाते

<sup>२</sup> न AD पुस्तकयो, C° म

<sup>३</sup> B (महावग्गे घ) अनेलाय, C अनेलाय



## ( ४८—तत् सुतो ५१८ )

एवं म सुत—एवं समय भगवा रात्रगृहे विहर्ता वेदुषो बलद्वयनियते ।

ता सो एन समयन आत्मा तात्ता तगृहगमये पुष्कलमयं निशमत्वा  
पक्षीवरमाणस्य राजगृहे निशम्य पक्षिमि । अह्मा सा देवदत्तो आयम्भनं आन  
रात्रगृहे निशम्य तात्ता निशम्य वा आत्मा आनन् तनुपगच्छामि, उगच्छा  
मित्रा यस्मिन् आत्मा एतत्तात्ता—'अत्राग्य दानं आत्मा आत्मा'  
अच्छयेन भगवा अत्मा भिन्नुम ॥ उपाय तस्मिन्मित्रा सद्यस्मात्तात्ता पानि ।

अतः सा तस्मात् तात्ता । रात्रगृहे निशम्य पक्षिणा पक्षिणा निशम्य  
पक्षिणा यन भगवा तनुपगच्छामि उगच्छामित्रा भगवन् अतिशयवा  
एतन्मित्रा निशम्य एतन्मित्रा सा तस्मात् आनन् भगवन् एतन्मित्रा—  
'एवं ह भव' । पुष्कलमयं निशम्य पक्षीवरमाणस्य राजगृहे निशम्य  
पक्षिमि । अह्मा सा म भव' । 'अत्राग्य दानं आत्मा आत्मा'  
तनुपगच्छामि उगच्छामित्रा म एतन्मित्रा—'अत्राग्य दानं आत्मा आत्मा'  
भन्ते । दयता सद्यस्मिन्मित्रा उपायञ्च करिष्मिन् सुदयस्मात्तात्ता पानि ।  
ति । अतः सा तस्मात् तात्ता तस्मात् तात्ता तस्मात् तात्ता तस्मात् तात्ता—

गुरार साधुता माधु तामु पापान् दुरार ।

पाप पापन गुरार पाप जग्धिभि दुरार ति ॥८॥

## ( ४९—सदायमान-सुत ५१९ )

एवं म सुत—एवं समय भगवा बालमु चारिव परनि मत्ता भिन्नुगच्छन  
सदि ।

तन सा पा समयन सम्बद्धा माणवरा भगवता अतिदूरं महायमानरूपा<sup>१</sup>  
अतिवर्मन्ति । अह्मा सा भगवा सम्बद्धा माणवने अतिदूरं सदायमानरूपा<sup>२</sup>

४८ सादृश्य सुत ६३ ।

४९ <sup>१</sup> यथायमानरूपा, D यथायमानरूपा, D सदायमानरूपा, C यथाय  
मानरूपा नि उप्पीठनजातिषा जातिषा (?) पटनञ्च ते त आविषलतीति  
यत्तव्य दीप्य ब्रह्मापाठायमानाति युत्त । अथवा बिहेठे कथे विद्य अत्तान आचरन्तीति  
यथायमाना सदायमानाति पि पाठो उच्चान्महभ्रातृद्व करोतीति अत्यो ।

<sup>२</sup> द्रष्टव्य १ ३ सावृत्त्य महावग्ने, गायया १०

अतिवरमन्ते । अथ सो भगवा एतमत्यं विदित्वा तायं वेत्तायं इम उदान  
उदानसि<sup>१</sup>—

परिमृष्टा पण्डिताभासा वाचागोचरभाणिनो ।

याविच्छन्ति भुग्यायाम, येन नीता ऽ त विदू'ति ॥९॥

( ५०—पञ्चन-सुत ५।१० )

एव मे सुत—एव ममय भगवा सावरिथय विहरति जेतवने अनापपिण्डकस्त  
आरामे ।

तत्र सो पन समयेन आयस्मा चूर्णपचयो<sup>२</sup> भगवतो अविदूरे निसिन्नो  
हाति पल्लवक आभुजित्वा उजु वाय पणिधाय परिमुख सति उपट्टपेत्वा । अहमा  
सो भगवा आयस्मन्त चूर्णपचयो<sup>३</sup> अविदूरे निसिन्न पल्लवक आभुजित्वा उजु वाय  
पणिधाय परिमुख सति उपट्टपेत्वा । अथ सो भगवा एत मत्य विदित्वा ताय  
वेत्ताय इम उदान उदानेसि—

ठितेन कायेन ठितेन चेतसा तिष्ठ निसिन्नो उद वा सयानो ।

एत सति भिक्खु अधिद्वहानो लभेथ पुब्बापरिय विसेस ।

एद्वान पुब्बापरिय विमस अदस्सन मच्चूराजस्स गच्छे ति ॥१०॥

सोणस्स घेरस्स<sup>४</sup> वग्गो पञ्चमो ।

तत्र उदान—

राजा अत्तायुका कुट्ठी सुमारका च उपोसथो

सोथो च रेवतो नग्गे सहायमाना (?)<sup>५</sup> पचयेन वाति ।

<sup>१</sup> च इव टिप्प० p 395

५० <sup>२</sup> गा० १० A चूर्णवण्टको

<sup>३</sup> A चूर्णवण्टक

<sup>४</sup> विषय सूची A पयाम, B सट्ठाय च, D पयाय

<sup>५</sup> AD सोणत्थेरस्स, C महावग्गवण्णना

## ६—अरुचन्ध-यगो

( ११—आयुसम-मुत्त ६।१ )

एव मे मुत्त—एत गमय भगवा वेसालिषं विहरति महावने बूढागारसालाय ।

अथ वो भगवा पुत्रगमय निवामत्वा पत्तचीवरमाणाय वेसालि पिण्णद पाविमि वगाणिय पिण्णाय त्रित्वा पच्छाभस पिण्डपातपटिवरन्तो आयस्मन्न आनद आमन्नेमि— गच्छहि जानन् । तिसीदन, येन चापाल चनिय तन उपसद्धमिस्सामि त्रिजानि तया नि ।

“एव भन्ने”ति ता पन आयस्मा जानन्ते भगवता पटिस्मुया नितोन्नमाणाय भगवन्त पिट्ठितो पिट्ठिता अनुगच्छि । अथ ता भगवा येन चापालचेनिय तनुपसद्धमि उपसद्धमिचा पञ्चास्त आसत निमीदि ।

निमज ता भगवा आयस्मन्न आनद आमन्नेसि—“रमणीया आनन्द । वेसाला रमणीय उदेन चनिय रमणाय गोतमक् चेतिय, रमणाय सत्तम्ब चेतिय<sup>१</sup>, रमणीय बहुपुत्त चेतिय रमणाय सारदद चेतिय, रमणीय चापाल चेतिय । यस्म कस्मचि आनद । चत्तारो इद्धिपादा भाविता बहुलीकता यानिकता वत्तुक्ता अनुट्ठिता परिचिन्ता सुममारद्धा, ता आवज्जमानो कप्प वा निट्ठय्य कप्पावमेम चांति । तयागनस्त वो आनन् । चत्तारो इद्धिपादा सुममारद्धा, आवज्जमानो आनन्द । तयागता कप्प वा निट्ठय्य कप्पावमेम वा ति ।

एव पि वो आयस्मा जानन्ते भगवता आहारिक् निमित्ते कयिरमाने ओठारिक् आभासे कयिरमान नासवित पटिविज्जितु न भगवन्त याचि— पिट्ठितु भन्त । भगवा कप्प, निट्ठितु सुगतो कप्प बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय त्वमनुस्सानन्ति, यया न मारा परियुद्धितचित्तो ।

५१ <sup>१</sup> सावुश्य महापरिनिव्वानमुत्तेन ABD सत्तम्ब, महाप २ C सताम्बक २ ADC आनदचेतिय [त्रिषु स्थानेषु], B सारद, सारज्जो, सारददचेतिय

दुतिप' पि खो भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि—'रमणीया पे तथागतो मय्य वा तिष्ठेय्य वप्पावसेस वा'ति। एव' पि खो आयस्मा आनन्दो पे परियुद्धितचित्तो। तनिय पि खो भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि—'रमणीया पे तथागतो मय्य वा तिष्ठेय्य वप्पावसेस वा'ति। एव' पि खो आयस्मा आनन्दो पे परियुद्धितचित्तो।

अथ खो भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि—'गच्छ त्व आनन्द। यस्म' दानि काल मज्जासो'ति।

एव भन्ते'ति खो आयस्मा आनन्दो भगवतो पटिस्सुत्वा उट्ठामासना भगवन्त अभियादत्वा पदविक्षण क्त्वा अविदूर जज्जतरस्मि इत्थमूले निसीदि।

अथ खो मारो पापिमा अचिर प्यक्कन्ते आयस्मन्ते आनन्द यन भगवा तेनुप सद्धमि' उपसद्धकमित्वा एकमन्त अट्ठासि, एकमन्त ठिता खो मारो पापिमा म'वन् एतदवोच—'परिनिब्बातु दानि भन्ते। भगवा, परिनिब्बातु सुगो, परिनिब्बानकालो दानि भन्ते। भगवतो। भासिता खो पन एसा' भन्ते। भगवता वाचा—न ताव'ह पापिम। परिनिब्बायिस्सामि, याव म भिक्खू न सावका मविस्सन्ति वियत्ता विनीता विसारदप्पत्ता यागक्खेमा बहुस्सुता धम्मधरा धम्मा गृधम्मपटिपन्ना सामीचिपटिपन्ना अनुधम्मचारिनो सक् जावरियक् उग्गहेत्वा आचिक्खिस्सन्ति देसिस्सन्ति<sup>१</sup> पज्जापेस्सन्ति पट्टपेस्सन्ति विवरिस्सन्ति विभजिस्सन्ति उत्तानिवरिस्सन्ति उप्पत्त परप्पवाद सहधम्मन मुनिग्गहीत निग्ग हवा<sup>२</sup> सप्पाटिहारिय धम्म देसिस्सन्ति ति। सन्ति खो पन भन्ते। एतरहिं भिक्खू भगवतो सावका वियत्ता उग्गहेत्वा आचिक्कान्ति देसेन्ति पज्जापेन्ति पट्टपेन्ति विवरन्ति विभजन्ति उत्तानिकरोन्ति उप्पत्त परप्पवाद सट् धम्मन मुनिग्गहीत निग्गाहेत्वा सप्पाटिहारिय धम्म देसेन्ति। परिनिब्बातु दानि भन्ते। भगवा, परिनिब्बातु सुगता, परिनिब्बानकालो दानि भन्ते भगवता। भासिता खो पनेसा भगवता वाचा—न ताव'ह पापिम। परिनिब्बायिस्सामि, याव मे भिक्खूनियो साविका मविस्सन्ति वियत्ता पे अनुधम्मचारि नियो पे सप्पाटिहारिय धम्म देसिस्सन्ती'ति। सन्ति खो पन भन्ते। एतरहिं भिक्खूनियो भगवतो साविका पे सप्पाटिहारिय धम्म देसन्ति। परिनिब्बातु पे वाचा न ताव'ह पापिम। परिनिब्बायि

<sup>१</sup> महापदेसेस्सन्ति

<sup>२</sup> AB निग्गहेत्वा, निग्गाहित्वा



तेन खो पन समयेन भगवा सायण्हसमय पटिसु  
 खोद्वं निसिन्नो हाति । अथ यो राजा पसेनदि यन  
 उपसद्धमित्वा भगवन्त अभिवादत्वा एकमन्त निसीदि ।  
 सत्त च जटिला सत्त च निगण्ठा सत्त च अचेत्ता सत्त च एकसाट  
 पण्हवच्छनपलोमा सारिविविधमादाय । भगवता अविदू  
 यो राजा पसेनदि कोसलो तं सत्त च जटिल सत्त च निगण्ठ  
 एकसाट सत्त च परिव्वाजके परलवच्छनपलोम सारि  
 अविदूरे अतिवामन्त, त्स्वान उट्ठायासना एवस उत्तराम  
 जाणुमण्डल पठविय निहत्त्वा यन ते सत्त च जटिला सत्त च  
 सत्त च एकसाटा सत्त च परिव्वाजका, तेनज्जलि  
 सावसि—<sup>१२</sup> राजाह भन्ते । पसेनदि कोमलो, कोसलो<sup>१</sup> नि ।

अथ खो राजा पसेनदि कोसलो अचिरपक्वन्तेमु तमु  
 च निगण्ठेमु सत्तमु च अचेत्तेमु सत्तमु च एकसाटमु स  
 भगवा तेनुपसद्धममि, उपसद्धमित्वा भगवन्त अभिवा  
 एकमन्त निसिन्नो सो राजा पसेनदि कोमलो भगवन्त एन  
 भन्त । लोके अरहन्तो वा अरहत्तमग्ग वा समापग्ग,

<sup>११</sup> दुज्जान खा एत महाराज । तथा गिहिना  
 सयनमज्जावसन्तेन कातिकचन्दन पच्चनुभोन्तेन  
 जातरूपरजत सादियन्तेन इमे वा अरहन्तो इमे वा  
 मयासेन खो महाराज । सील वदितव तच्च खा  
 मनसिक्खरोत्ता नो अमनसिकारा पज्जावता ना  
 महाराज । सोचेम्य वेदितव्य तच्च खा दीघेन पे  
 महाराज । धामो विदितव्वा, सा च खो दीघेन  
 सो महाराज पज्जा वेत्तिव्वा सा च खो दीघेन

अच्छरिय भन्ते अब्भुत भन्ते । याव सु  
 दुज्जान खो पे अरहत्तमग्ग समापग्ग नि ।

५२ <sup>१</sup>C सारिविविधमादाया'ति विविधानि  
 पञ्चजित परिकलारमण्डभण्डिक गृहेत्वा ।

<sup>२</sup>AB ये च खो, B ये न केचि, सादय

<sup>३</sup>A सबोहारेण, C सबोहारेणा'ति कथनम् ।







सन्ति एन वे परत्ता सुगदुस्य अत्ता व गोरो च ति । सत्त' व  
 सयवत्त' व परत्त' व सुगदुस्य अत्ता च गोरो च ति । सन्ति एन वे  
 असयवत्त' व परत्त' व अधि-वसमुण्ण सुगदुस्य अत्ता व गोरो च ति । ते  
 भण्ण' जाता [इष्ट' ५४ सुत्त] एणिया धम्मा नि । अय सो सम्बहूला भिक्खू  
 पुब्बण्हममय [इष्ट' ३४ सुत्त] भगवन् एनदवावु इय भन् ।  
 स'वहूला नानादिट्ठितिसयनिम्भिता । गन्तव' प' एण्मो धम्मो नि ।

अज्जनिधिया भिराव' । परिम्वज्जा अया भवन्नुया अय न  
 जानन्ति आत्थ न ता'नि धम्म न जानन्ति, अधम्मं न जानन्ति । त अय  
 भज्जाता जीय' नानत्ता धम्म भज्जानन्ता अधम्म भज्जाता भग्ग'  
 जाना एणिया धम्मा नि । अय यो भगवा एनम'य विदित्वा ताय बलाय  
 इम उत्तान उत्तानमि

दममु गिर सज्जि ए' समणब्राह्मणा ।

अत्ता च त्रिणी'न' १ अप'न' २ व ततो गध' ३ ति ॥५॥

### ( ५६—तित्थिय सुत्त ६।६ )

[५५=५६ तत्रान्नु तु अय यो भगवा एन अर्थं विदित्वा ताय बलाय दम  
 उत्तान उत्तानमि—]

अहङ्कारपमुत्ता अय पजा परवार्थमहिता ।

एतदेवे नामज्जाम' न' न' मल्ल ति अहमु ।

एत च मल्ल पण्डित्त्व ( ? ) १ पम्पना अहं करोमी' ति न तस्स हाणि  
 परो करोती ति न तस्म हाति ।

मानुपेता अय पजा मानग'या २ माननिविद्धा' ।

दिट्ठिमु व्यारम्भवता ( १ ) ३ ससार नातिवत्तती ति ॥६॥

१ AD अयाभा विसीदति २ B अप्पत्वा ३ C जोषसलात निम्बान

५६ १६ AD एयवादेवना भञ्जामु B एतदेवे नामभट्टामु, C एतदेवेने  
 न' भञ्जामु' ति एत विट्ठिद्वय एते समणा तत्थ दोसदस्सिनो हत्वा नानुजानिनु

१ AC पण्डित्त्व B पण्डित्त्व D पण्डित्त्व २ AD मानयथा ३ AC  
 विनिबध्या, BD विनिबध्या

विरोधा ABD १ कया २ C सारम्भकया ३ सारम्भकत

## ( ५७—सुभूति-सुत ६।७ )

एव मे सुत—एव समय भगवा सावत्थिय बिहरति जेतवने अनायपिण्डिक्खस आरामे ।

तत्र खो पन समयेन आयस्मा सुभूति भगवतो अविदूरे निसिन्धो होति पल्लङ्क आभुजित्वा उज्जु वाय पणिघाय अवितक्क समाधि समापज्जित्वा । अद्दसा खो भगवा आयस्मन्त सुभूति अविदूरे निसिन्ध पल्लङ्क आभुजित्वा उज्जु वाय पणिघाय अवितक्क समाधि समापत्त । अय खो भगवा एत अत्थ विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—

यस्स वितक्का विदूषिता<sup>१</sup> अज्झत्त सुविक्कप्पिता असेसा ।

त सद्दगमतिच्च<sup>२</sup> अरूपसज्जी चतुयोगानिगतो न जाति एती<sup>३</sup>ति ॥७॥

## ( ५८—गणिता-सुत ६।८ )

एव मे सुत—एव समय भगवा राजगहे बिहरति वेळ्ळवने कलदक्कनिघापे ।

तत्र खो पन समयन राजगह द्वे पूगा अज्झतरिस्सा गणिकाय सारत्ता होन्ति पटियदचित्ता<sup>४</sup> भण्डनजाता मल्लजाता विवादापन्ना अज्झमज्ज पाणीहि पि उपक्कमन्ति लड्ढूहि पि उपक्कमन्ति दण्ढहि<sup>५</sup> पि उपक्कमन्ति सत्थेहि<sup>६</sup> पि उपक्कमन्ति । त त थ मरणप्पि निगच्छन्ति मरणमत्तपि दुक्क ।

अथ खो सम्बहुला भिक्खू पुब्बहसमम निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय राजगह पिण्डाय पाविसिंसु, राजगहे पिण्डाय चरित्वा पच्छाभत्त पिण्डपातपटिक्कता येन भगवा तेनुपसङ्गमिंसु, उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवात्तेत्वा एकमन्त<sup>७</sup> निसीदिंसु, एकमन्त निमिना खो ते भिक्खू भगवन्त एतदवोचु—‘इध भन्त<sup>८</sup> । राजगह द्वे पूगा पे दुक्क नि । अथ खो भगवा एत अत्थ विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—

यच्च पत्त यच्च पत्तब्ब, उभयमेत रजानुक्किण आतुरस्सानुसिक्किनो<sup>९</sup> येव सिक्खसासारा । मील्लन्त जीवित ब्रह्मचरिय उपद्वानसारा, <sup>१०</sup>अयमेको अन्तो येव एववान्तिना । नत्थि कामेसु दोमो<sup>११</sup>ति अय दुतियो अन्तो ।

५७ <sup>१</sup>AD विदूषिता, BC विदूषिता=समुच्छिन्ना <sup>२</sup>A सङ्गमति  
अरूपच्च, D सकमति अरूपच्च, B सद्गमति, C सद्गम अतिच्छ (<sup>१</sup>)  
जतिक्कमित्वा <sup>३</sup>ABD न जातुमेति, C ध्वात्वायते—मकारो पदसधिकरो,  
जातु एकसेनेव पुनरुभवाय नेति न जातिमेति<sup>३</sup>ति<sup>३</sup>पि पठति, सो एयं<sup>३</sup>त्यो ।

५८ <sup>४</sup>AB पटियदचित्ता <sup>५</sup>A आनसिक्कतो <sup>६</sup>AD सारा

अथ एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता ।

एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता । अथा अविश्वत्ता एता, एता  
था अविश्वत्ता एता अविश्वत्ता एता अविश्वत्ता एता अविश्वत्ता  
एता अविश्वत्ता । ॥८॥

### ( ६६—उपनिश्वत्ता १६ )

एता अथा अविश्वत्ता एता अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता ।

एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता ।

एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता । ॥९॥

### ( ६०—उपनिश्वत्ता १० )

एता अथा अविश्वत्ता एता अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता ।

अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता । एता अथा अविश्वत्ता अविश्वत्ता अविश्वत्ता  
अविश्वत्ता ।

<sup>1</sup> ABD अविश्वत्ता

<sup>2</sup> परित्यक्तं BD

५९ <sup>3</sup> BD निमित्तम्

<sup>4</sup> A अभिपातका वि पट्टपातका ( ! )

ये सत्ताति वि युक्तानि, AD अभिपातका अभिपातके <sup>5</sup> A अभिपातका  
'ACD इति सोः, B इति हेतोः, C कथाति—एते सत्ताप्रमाण  
ACD प्रमाणपाठः । ६० AD न उपनि, BC न उपनि ।

यतो च खो भन्ते ! तथागता लोके उप्पज्जन्ति अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा, अथ खो जज्जन्तित्थिया परिव्वाजका असक्कता होन्ति अगहक्ता अमानिता अपूर्जिता न अपचिता न लाभी पे परिक्रारान। भगवा येव दानि भन्त ! सक्कतो मानितो पूजितो अपचिनो लाभी प परिक्रारान भिक्खुसङ्घो चा' ति।

“एवमेत आनन्द ! याववीवञ्च आनन्द ! तथागता लोके नुप्पज्जन्ति प परिक्रारान। यतो च खो आनन्द ! तथागता लोके उप्पज्जन्ति प परिक्रारान। तथागतो' व दानि सक्कतो गुरुक्ता पे भिक्खुसङ्घो चा ति। अथ खो भगवा एतमत्थं विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—

ओभासति ताव सो किमि, याव न उन्नमति<sup>१</sup> पभञ्जरो।

विरोचनमिह उगगते हसप्पभो हाति न चापि भासति<sup>२</sup>।

एव ओभासिनमे<sup>३</sup> व तित्थियान याव सम्मासम्बुद्धा लोकं नुप्पज्जन्ति<sup>४</sup>।

न तत्किंवा मज्जन्ति न चापि सावका दुद्दिट्ठी<sup>५</sup> न दुक्खा पमुच्चरे<sup>६</sup> ति॥१०॥

जञ्चधम्मगा छट्ठो

तत्र उदान आहु—

आयुसस<sup>७</sup> ओसज्जन<sup>८</sup> पटिसम्भा (१५)<sup>९</sup> आहु तत्र-च विरत्त-य (१५)<sup>१०</sup>

सत्तममाह सुभुत्ति ११ यत्थिवा उपपत्ति नवमो उपपज्जन्ति च ते दसा नि।

—

<sup>१</sup>AD न उज्जमति, BC न उन्नमति।

<sup>२</sup>A न चाधिभासति,

D न च अभिभासति <sup>३</sup>AD सुभासित

<sup>४</sup>A न समुप्पज्जति।

<sup>५</sup>C दुद्दिट्ठिनो मिच्छाभिनिविदुद्दिट्ठिका।

<sup>६</sup>BD पमुच्चरे।

<sup>७</sup>A आयुस्स

<sup>८</sup>D ओसज्जनञ्च

<sup>९</sup>B पत्तिता, D तिणा।

<sup>१०</sup>D तत्थिया

<sup>११</sup>A सत्तममाह सुभुत्तो, D सत्तममो सा पि सुयोधि।



यतो च खो भन्ते । तथागता लोके उष्पज्जन्ति अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा, अथ खो  
अज्जतिस्सिया परिब्बाजका असक्का हान्ति अग्रवना अमानिता अपूजिता न  
अपचिता न लाभी प परिक्खारान । भगवा येव दानि भन्त । सक्कतो  
मानितो पूजितो अपचिता लाभी पे परिक्खारान भिक्खुमङ्गघो चा' ति ।

"एवमत आनन्द । यावकीवञ्च आनन्द । तथागता लोके नुष्पज्जन्ति  
प परिक्खारान । यतो च खो आनन्द । तथागता लोके उष्पज्जन्ति प  
परिक्खारान । तथागतो व' दानि सक्कतो गुरुवतो ग भिक्खुसङ्गघो चा' ति ।  
अथ खो भगवा एतमत्थं विदित्वा तां वलाय इम उदान उदानेस्सि—

आभासति ताव सो विमि, याव न उन्नमसि<sup>१</sup> पमङ्करो ।

विरोचनमिह उगगतं, इतप्पमो हासि न चापि भासति<sup>२</sup> ।

एव ओभासितमे<sup>३</sup> व तित्थियान याव सम्मासम्बुद्धा लोके नुष्पज्जन्ति<sup>४</sup> ।

न तक्किवा सज्जन्ति न चापि सावका दुहिद्धी<sup>५</sup> न दुवप्पा पमुच्चरे<sup>६</sup> ति ॥ १० ॥

जञ्च'धवगो छट्ठा

तत्र उदान आहु—

आयुसस<sup>७</sup> ओसज्जन<sup>८</sup> पटिसङ्गा (१०)<sup>९</sup> आहु तज्ज-न फिर १०-५ (१०)<sup>१०</sup>

सत्तममाह समुत्ति ११ गच्छिवा उपाति मक्कमो उष्पज्जन्ति च ते' स्या ति ।

<sup>१</sup> AD न उन्नमसि, BC न उन्नमसि ।

<sup>२</sup> A न चापिभासति,

D न च अभिभासति <sup>३</sup> AD सुभासित

<sup>४</sup> A न समुष्पज्जन्ति ।

<sup>५</sup> C दुहिद्धिनो भिच्छाभिनिविद्धिद्धिका ।

<sup>६</sup> BD पमुच्चरे ।

<sup>७</sup> A आयुस्स

<sup>८</sup> D ओसजननञ्च

<sup>९</sup> B पतिला, D तिणा ।

<sup>१०</sup> D तत्थिया

<sup>११</sup> A सत्तममाह समुत्तो, D सत्तमफो ता पि सुबोधि ।

### ७—सुस्तयगो

( ६१—भदिय सुत्त ७।१ )

एव म सुत्त—एव समय भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनापविष्टि  
कम्म आराम ।

तेन या पन समयं जायमा साविपुत्तो आयम्मन्त लुण्ठकभदिय<sup>१</sup>  
अनरपगियायेन घम्मिया कथाय गम्मोति गमाणां समुत्तजति सप्प  
हुनेति । जय ता आरस्सो लुण्ठकभदियम्<sup>२</sup> जायमा साविपुत्तेन अनेरप  
गियायन घम्मिया कथाय भग्गियमानस्स गमाणियमानस्स समुत्तियमानस्स  
सम्पत्तियमानस्स अनुण्णाय आसवहि चित्तिमुच्चि । अहम्मा ता भगवा  
आयस्सन्त लुण्ठकभदिय<sup>३</sup> आयम्मता साविपुत्तेन अनरपरियायेन घम्मिया कथाय  
सत्तस्सियमान समुत्तियमान समुत्तियमान सम्पत्तियमान अनुपादाय आसवहि  
चित्ति विमुत्त । जय ता भग्वा एतमथ चित्तिं ताय मलाय दम उण्णं  
उण्णमि—

उद्ध अथा च सव्यधि विपमुत्तो अयमहमस्मी ति आनुपम्मो ।

एव विमुत्तो उण्णारि जाय जनिण्णपुत्र अपुरा भवाया नि ॥१॥

( ६२—भदिय सुत्त ७।२ )

एव म सुत्त—एव समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनापविष्टि  
कम्म आराम ।

जय ता जायमा साविपुत्तो आयस्सन्त लुण्ठकभदिय<sup>३</sup> सेत्तो ति

६१ <sup>१</sup> A सुस्तयगो

<sup>२</sup> A लुण्ठक°, BD [ Childers ] लकु ष्टक°, C लुण्ठक°

६२ <sup>३</sup> उपरि टिप्पणी द्रष्टव्या ।

मञ्जिमान भिय्यो सोमत्ताय अनेकपरियायेन धम्मिया कयाय सन्दस्सेति समादपति समुत्तजेति सम्पहसेति । अद्दसा खो भगवा आयस्मन्त सारिपुत्त आयस्मन्त लवुण्ठ-भहिय सेखो'ति मञ्जिमान भिय्योसोमत्ताय अनेकपरियायेन धम्मिया कयाय सन्दस्मन्त समादपेन्त समुत्तेजेन्त सम्पहसेन्त । अय खो भगवा एतमत्थं विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानसि —

अच्छिज्जि वट्टं व्यागा<sup>१</sup> निराम, विमुक्खा सरित्ता न सन्दति ।

छिन्न वट्टं न वत्तति, एसेवन्तो दुक्खस्सा'ति ॥२॥

### ( ६३—कामेसु-सत्त-सुत्त ७।३ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा सावित्थिय विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे ।

तत्र खो पन समयेन सावत्थिय मनुस्सा येभ्य्येन कामेसु अतिवेल सत्ता होन्ति रत्ता गिद्धा गथिता भुच्छिता अज्झोपना<sup>२</sup>, सम्पत्तकजाता (?)<sup>३</sup> कामेसु विहरति । अय खा सम्बहुला भिक्खू पुब्बण्हसमय निवासेत्वा पत्तचीधरमादाय सावत्थि पिण्डाय पाविंसिसु, सावत्थिय पिण्डाय चरित्वा पच्छाभत्त पिण्डपानपटि ववन्ता येन भगवा तेनुपसङ्गमिसु, उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादत्वा एकमन्त निसीविसु, एवमन्त निसिन्ना खो भगवन्त एतदवोवु— 'इय भन्ते ! सावत्थिय मनुस्सा पे विहरती ति ।

अय खो भगवा एतमत्थं विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानसि—

कामेसु सत्ता<sup>४</sup> कामसङ्गासत्ता सयोजने वज्जमपस्समाना ।

न हि जातु सयोजनसङ्गसत्ता ओभ तरेय्यु विपुल महन्त नि ॥३॥

<sup>१</sup>A ध्यासा, B व्यागा, D व्यभा, C विसेतना अगा'धिगतो विष्णाणा (?)

६३ <sup>२</sup>AD अज्झोपना, C अज्झापना, B अज्झोपना, B निसिपति अधिकता <sup>३</sup>C सम्पत्तकजाता ति कामेसु पातव्यत आपज्जन्ता अप्पुल्लवेदनाय सम्पत्तका सुट्ठ पत्ता जाता, सम्परायिक जाता'ति पि पढो जातसम्परायिका उपभाषहाता (?) तो ति अत्यो, A सम्बतकजाता, D सपत्तकजाता, B सम्पत्तकजाता <sup>४</sup>C सत्ता गो= रत्ता



## ( ६४—सामेमु-सुत्त सुत्त ७।४ )

एव मे सुन—एव समय भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनापपिण्डकस्स आराम ।

तत्र सो पन समयन सावत्थियं मनुस्सा यभुय्यन वामगु मत्ता हानि रत्ता गिण्ण गणिता मुच्छिन्ना अज्जापन्ना<sup>१</sup> अधिपाना मत्तत्तरज्जाता<sup>२</sup> वामगु विहरन्ति । अथ सो भगवा पुब्बपट्टममय निवागे<sup>३</sup> सा पनचावरत्ताग्गय सावत्थियं विण्णय पावसि । अह्मा सो मया गावत्थियं ते मनुस्स यभुय्यन वामगु मत्त रत्त गिद्ध गधियं मुच्छिन्न जग्गापन्ना<sup>४</sup> अधिपाने मत्तत्तरज्जाता<sup>५</sup> वामेगु विहरन्ति । अथ सो भगवा एतमत्थं विजित्वा साय यत्ताय इधं उज्जन उज्जनमि—

वामपा जालसञ्ज्झन्ना<sup>६</sup> सत्ताछदाछान्ति ।

पमतवधुना वधा<sup>७</sup> वच्छा<sup>८</sup> व तुगिनामुर ।

जगमरणं गच्छन्ति वच्छा नीलना<sup>९</sup> व धानर नि ॥४॥

## ( ६५—लकुण्डक सुत्त ७।५ )

एव मे सुन—एव समय भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनापपिण्डकस्स आराम ।

तत्र सो पन समयन जायम्मा लकुण्डकमदिआ<sup>१</sup> सम्बहुलान भिक्खून् पिट्ठितो पिट्ठिता येन भगवा तत्र उज्जग्गामि । अह्मा सो भगवा आयस्सन्त लकुण्डकमदिआ<sup>२</sup> दूरताव सम्बहुलान भिक्खून् पिट्ठितो पिट्ठितो जागच्छन्त दुग्गणं दुद्धिसिअ जातोदिमव य भुय्यन भिक्खून् परिभूतरूपं सिस्वान भिक्खू आसन्तामि— परमय ना तुग्गह भिक्खवे ! एत भिक्खू दूरतो व वे परिभूतरूपं ति ।

६४ <sup>१</sup> AB अज्जापन्ना, पञ्चात ए, D अज्जोपन्ना, द्रष्टव्या ६३

<sup>२</sup> AB अज्जोपन्ना पञ्चात °ए, D अज्जोपन्ना °ए <sup>३</sup> द्रष्टव्या ६३ टिप्पणी

<sup>४</sup> AD सत्ताछ <sup>५</sup> C पमतवधुना वधा पमतवधुनेन वधी

[पाठ्य वधा (!)] ति पि पठन्ति वधाति नियमिता, ABD

<sup>६</sup> वधनावधा

<sup>७</sup> A सिस्वानो

६५ <sup>१</sup> A लकुण्डका

<sup>२</sup> C ओक्कोति मक्खनं ति य इमिना

आरोहसम्पत्तिमा अभावनं दस्सेति, द्रष्टव्यं सत्तुते कुटि D अरोहिमकोटिक

‘एव भन्ते’ति ।

‘एसो भिक्खवे । भिक्खु महिद्धिक्को महानुभावो, न च सा’ समापत्तिं सुलभरूपा, या<sup>२</sup> तं भिक्खुना असमापन्नपुब्बा, यस्स चत्थाय कुलपुत्ता सम्मत्तं ववगारस्मा अनगारिय पब्बजति, तदनुत्तरं ब्रह्मचरियपरियासानं दिट्ठे व धम्मसयं अभिज्जा सञ्चिक्त्वा उपसम्पज्ज विहरती’ति ।

अथ सो भगवा एतमत्थं विदित्वा तां वेलाय इमं उदानं उट्ठानसि—  
नेलगो<sup>३</sup> सेतपच्छादो एकारो वत्तती रथो ।

अनीयं पस्स आयन्तं<sup>४</sup> छिन्नसोतं अवधनं ति ॥५॥

### ( ६६—तण्हकूखय-सुत्त ७१६ )

एव मे सुत्त—एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथ पिण्डिकस्स आगमे ।

तत एव पन समयेन आयस्मा अज्जातकोण्डञ्जो भगवतो अविद्वरे निसिन्नो होति पल्लङ्कनं<sup>१</sup> आभुजित्वा उज्जु कायं पणिधाय तण्हासङ्खयं विमुत्तिं पच्चवेक्खमानो । अहसा सो भगवा आयस्मन्तं अज्जातकोण्डञ्जं अविद्वरं निसिन्नं पल्लङ्कं आभुजित्वा उज्जु कायं पणिधाय तण्हासङ्खयविमुत्तिं<sup>२</sup> पच्चवेक्खमानं । अथ सो भगवा एतमत्थं विदित्वा तां वेलाय इमं उदानं उट्ठानसि—

यस्स मूलं<sup>३</sup> छमा न त्थि, पज्जा नत्थि कुतो रुना ?

त धीरं वधना मुत्तं को तं निन्दितुमरहति ?

तेवा पि न पससन्ति ब्रह्मणा पि पससितां ति ॥६॥

<sup>१</sup>AC ते न चसा, D तेनेव

<sup>२</sup>BD त्यजत या

<sup>३</sup>AD नेलङ्गो, Bनेलको, C नेलगो । नेल पद्यानभूत —अण ।

<sup>४</sup>BD आयस्मन्त

<sup>५</sup>A तण्हासङ्खयं विमुत्ति, D तण्हासङ्खायविमुत्ति

<sup>६</sup>ABD मूला, C मूल

<sup>७</sup>पठ्यते अरहति—अरहति मेत्रि अइसा इट्ठयं Fausboll,

## ( ६७—पञ्चरसय-मुत्ता ६।७ )

एव म गुत्—अत्र सम्यं भगवा सावर्धियं विहरति जैनधने अनायविधि  
वस्तु आराम ।

तत्र ता पा ममया भगवा अतथा पाञ्चरसयामद्रव्यापहान<sup>१</sup>  
पञ्चरसयाना विनिता हति । अथ सो भगवा अतथा पाञ्चरसयामद्रव्याप  
हान<sup>२</sup> विनिता ताये वेत्ताये इमं उक्तं उक्तमि—

यस्म पञ्चा गि<sup>३</sup> च न त्वि मयानं पञ्च<sup>४</sup> यातिवत्ता ।

न १<sup>५</sup> नितह मुनि चरन् नावजागति सत्तरा वि लोको ॥७॥

## ( ६८—भन्वात-मुत्ता ६।८ )

एव म गुत्—अत्र सम्यं भगवा सावर्धियं विहरति जैनधने अनायविधि  
वस्तु आराम ।

ता ता पन ममयन आयम्मा महाक्वानो भगवता अरिर  
निसिन्ना हानि पाञ्चर<sup>१</sup> आमुजित्वा उक्तु वाय पणिधाय वायगताय मनिमा  
अपत्त परिमुत्त मुनिनिष्ठाय । अहमा ता भगवा आयम्मान महाक्वान अविद्वर  
निमित्त पाञ्चर<sup>२</sup> आमुजित्वा उक्तु वाय पणिधाय वायगताय सत्तरा अज्जत  
परिमुत्त मुनिनिष्ठाय । अथ सो भगवा एतमत्य विनिता ताये वेत्ताये इम  
उक्तं उक्तमि—

यस्म मिया मच्चन्ना मनि सान वायगता उपद्धिता ।

नो च स्त<sup>३</sup> नो च म मिया न भविस्सन्ति न च मे भविस्सन्ति ।

अनुपुन्विहाति तय सो बाल्ल य तरे विमत्तिक् वि ॥८॥

६७ <sup>१</sup> B हो <sup>२</sup> पद्दीन

<sup>२</sup> AD पहिन, B पद्दीन

<sup>३</sup> AB धिति, C पापञ्च छिती ति च पाठो ।

<sup>४</sup> AB सघान D पनान C वघान वघनतविसत्ता यघानन ( ! )  
ति लद्धनामा तण्हानिष्ठयो ।

<sup>५</sup> B त त । नास्ति D पुस्तके ।

<sup>६</sup> ना च—इति नास्ति AD पुस्तकयो B यस्तये

## ( ६६—उदपान-मुक्त ७१६ )

एव य सुजं—एक समय भगवा भल्लेमु चारिख चरमानो महता भिक्षुसुधन सद्धि येन धूनं नाम भल्लान ब्राह्मणगामो तदवसरि ।

अम्मोनु मा धून्येयवा ब्राह्मणगहपतिवा—समणो गल्लु भो गोतमो सक्ककुला पब्बज्जितो भल्लसु चारिख चरमानो महता भिक्षुसुधन सद्धि धूनं अनुप्पत्ता<sup>१</sup>ति उदपान तिणस्स च भुसस्स च याव मुत्ततो पूरेसु मा त मुण्डवा-समणवा<sup>२</sup> पाणीय अदमु<sup>३</sup>ति ।

अथ खो भगवा भगवा ओक्कम्म “यन अज्जतरं ह्कामूल तेनुपसज्जमि, उपसज्जमि<sup>४</sup>त्वा पज्जत्ता आमने निसीदि, निमग्ग खो भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तसि—“इद्ध पे त्व आनन्द ! एतम्हा उदपाना पानीय आहरा<sup>५</sup>ति ।

एव वुत्ते आयस्मा आनन्दो भगवन् एतदवाच—“इदानीं सो भन्ते उदपानो पूनय्यवहि ब्राह्मणगहपतिवेहि तिणस्स च भुसस्स च याव मुत्ततो पूरितो—‘मा ने मुण्डवा समणवा<sup>६</sup> पाणीय अदमु<sup>७</sup>’ति ।

इतिय पि खा भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तसि—“इद्ध आहरा<sup>८</sup> नि । दुनिय पि खा आयस्मा आनन्दो भगवन्त एतदवाच—“इदानीं सो भन्ते ! उदपानो पे अदमु<sup>९</sup>ति ।

तनिय पि खो भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि—‘इद्ध प आहरा<sup>१०</sup>ति ।

“एव भन्ते<sup>११</sup> ति खो आयस्मा आनन्दा भगवतो पटिस्सुत्वा पत्त गहेत्वा येन मा उदपाना तनुपमज्जमि । अथ खो उदपातो आयस्मन्ते आनन्दे उपसज्जमन्तं सव्व त तिणं च भुसं च मुत्ततो ओरमित्वा जच्छस्स उदक्कस्स अनाविहस्स विप्पसन्नस्स याव मुत्ततो पूरितो विस्सदत्तो मज्जे अट्ठासि । अथ खो आयस्मनो आनन्दस्स एतदहासि—जच्छगिय यन नो ! अज्जुत वन मो !<sup>१२</sup> तथागतस्स मण्डिकता महानुभावता, अथ हि सो उदपानो मयि उपसज्जमन्ते सव्व त तिणं च भुसं च मुत्ततो आवमित्वा अट्ठासि<sup>१३</sup> ति<sup>१४</sup> पनेन पाणीय<sup>१५</sup> आदाय येन भगवा तेनुपसज्जमि उपसज्जमि<sup>१६</sup>त्वा भगवन्त एतदवाच—अच्छरिय अट्ठासि । पिवतु भगवा पाणीय पिवतु सुगतो पाणीय नि ।

६९ १ AD समणा, B समनका ।

२ B अपत्त, च अपत्तु ।

३ B उक्कम्म ।

४ AD विस्स-दो B विस्सन्दत्तो ।

५ BD इत्तो ।

६ AD विस्स-दो, B विस्स-दत्तो ।

BD इत्तो ।

७ त्यज्यते

सव्व हस्तलेजेपु ।

## ( ६७—पराशर-मुता ६।७ )

एतं म मुता—एतं समयं भगवा सावन्विषं विद्वन्ति अथवा अनापविष्ट  
वर्ग आराम ।

एतं यो वा समयं भगवा अति पराशरमुतामन्त्राणां<sup>१</sup>  
पञ्चमः स्यात् विद्वन्ति इति । अथवा भगवा अथवा पराशरमुतामन्त्राणां  
ज्ञां विद्वन्ति तर्कं वक्तव्यं इति उक्तं ज्ञानमिति—

एतं पराशरं विद्वं च विद्वि मन्त्रं पविष्टव्यं<sup>२</sup> चातिवत्त ।

७ म<sup>३</sup> विद्वन्ते मुति पञ्च<sup>४</sup> नाथनापवि सन्तरे वि तातो ॥७॥

## ( ६८—भक्तान्-मुता ६।८ )

एतं म मुता—एतं समयं भगवा सावन्विषं विद्वन्ति अथवा अनापविष्ट  
वर्ग आराम ।

तत एव पन समयं आरम्भा महावृत्तानो भगवा अविवरे  
निमित्ता होति पञ्च<sup>५</sup> आभुजित्त उक्तु कार्यं पविषाय वायव्याय गतिषा  
अन्तर्गत्तुमुग मुनिद्विषाय । अथवा यो भगवा आरम्भं<sup>६</sup> मन्त्राणां अविद्व  
विद्वन्ति पञ्च<sup>७</sup> आभुजित्त उक्तु कार्यं पविषाय वायव्याय गतिषा अन्तर्ग  
परिमुग मुनिद्विषाय । अथ यो भगवा एवमथ विद्वन्ति तर्कं वक्तव्यं इति  
ज्ञानं ज्ञानमिति—

यस्य सिया गच्छन्ति सति माल वायव्याय उपद्विषा ।

नो च रस<sup>८</sup> नो च प्र सिया न भविस्सति न च म भविस्सति ।

अनुपुन्यविद्वन्ति तय यो वाताय तरे विगतित्ति नि ॥८॥

६७ <sup>१</sup> B ही <sup>२</sup> वहीन

<sup>२</sup> AD पहिन, B पहीन

<sup>३</sup> AB धिनि, C पापञ्च छिनीति च पाठो ।

<sup>४</sup> AB सपान D पानं C वपान वपनसद्वितता वपानन ( १ )  
ति इदनामा तद्वादिद्विषो ।

<sup>५</sup> B तं तं । नास्ति D पुस्तके ।

<sup>६</sup> नो च—इति नास्ति AD पुस्तकयो , B यस्तये

## ( ६६—उदपान-मुत्त ७१६ )

एवं ये सुत—एक समय भगवा मल्लेसु चारिक् चरमानो महता भिक्कुमघेन  
सद्धि येन धूनं नाम मल्लान ब्राह्मणयामो तदवसरि ।

अस्मोसु खो धून्येयका ब्राह्मणगहपतिका—समणो गलु भो गोतमो  
सक्कहुला गव्वजिनो मल्लेसु चारिक् चरमानो महता भिक्कुमघेन सद्धि धूनं  
अनुपत्तो<sup>१</sup>ति उदपान तिणस्स च भुमस्स च याव मुखतो पूरेसु मा ते मुण्डका  
समणका<sup>२</sup> पाणीय अदमु<sup>३</sup>ति ।

अथ खो भगवा मग्गा ओवम्म येन अञ्जतर रुक्कमूल तेनुपसद्धकमि,  
उपसद्धकमित्वा पञ्जात्ते आसने निसादि, निसज्ज खो भगवा आयस्मन्त आनन्द  
आमन्तेसि—“इद्धय मे त्व आनन्द । एतम्हा उदपाना पाणीय आहरा<sup>४</sup>ति ।

एर वुत्त आयस्मा आनन्दो भगवन्त एतदवोच—“इदानीं सो भत्त उदपानो  
धून्येहि ब्राह्मणगहपतिवेहि तिणम्म च भुमस्स च याव मुखता पूरितो—मा  
ते मुण्डका समणका<sup>३</sup> पाणीय अदमु<sup>५</sup>ति ।

दुतिय पि खो भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि—“इद्धय आहरा<sup>४</sup>  
ति । दुतिय पि खो आयस्मा आनन्दो भगवन्त एतदवोच—“इदानीं सो भन्त<sup>६</sup> ।  
उदपानो प अदमु<sup>५</sup>ति ।

ततिय पि खो भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि—“इद्धय पे  
आहरा<sup>४</sup>ति ।

‘एव भन्ते’ ति खो आयस्मा आनन्दो भगवता पठिस्सुत्वा पत्त गहेत्वा  
येन सो उदपानो तेनुपसद्धकमि । अथ खो उदपाना आयस्मन्ते आनन्द उपसन्न  
मन्त सव्व त तिण च भुम च मुखतो आयमित्वा अञ्छस्स उदवस्स अताविस्स  
विणसत्तस्स याव मुखतो पूरितो विस्मदता<sup>७</sup> मज्जे अट्ठासि । अथ खो आय-  
स्मतो आनन्दस्स एत्थहासि—“अञ्छरिय भत्त भो ! अञ्जुत्त वत्त भो ! । तथागतस्स  
मार्हद्विक्ता महानुभावता अय हिं सो उदपाना भयि उपसद्धकमन्त सव्व त  
तिण च भुम च मुखतो ओवमित्वा अट्ठानि<sup>८</sup> ति<sup>९</sup> पत्तेन पाणीय आदाय  
येन भगवा तेनुपसद्धकमि, उपसद्धकमित्वा भगवन्त एतदवोच—“अञ्छरिय  
अट्ठासि । पिबतु भगवा पाणीय, पिबतु सुगमो पाणीय<sup>१०</sup> ति ।

६९. <sup>१</sup> AD समणा B समणका । <sup>२</sup> B अपस्स, च अपसु ।

<sup>३</sup> B उवम्म । <sup>४</sup> AD विस्सदो, B विस्सदत्तो । <sup>५</sup> BD छिनो ।

<sup>६</sup> AD विस्सदो, B विस्सदत्तो । <sup>७</sup> BD छिता । <sup>८</sup> त्यज्यते

सवय दृस्तलेयेय ।

अथ खो भगवा एतमथ विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—  
 जि वयिरा उदपानेन, आपा<sup>१</sup>चे सम्बन्धा सियु ?  
 तण्णाय मूलतो छेत्वा किस्स परियेसन चरे ति ॥९॥

( ७०—उपनि-सुता ७।१० )

एव मे नुत—एव समय भगवा कोसम्बिय विहरति घोसितारामे ।

तेन खो एन समयेन रञ्जो उदेनस्स उव्यानगतस्स अतेपुर दड्ढ होति  
 पञ्च इत्थिसतानि कालङ्कृतानि होन्ति सामावतिप-मुत्त्वानि ।

अथ घो सम्बहुला भिक्खू पुबण्हसमय निवामेत्वा पत्तचीवर आणय कांसि  
 पिण्डाय पाविसिमु कोसम्बिय पिण्डाय चरित्वा पच्छाभत्त पिण्डपातपटिक्कन्ता  
 येन भगवा तेनुपसङ्गमिमु उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसी  
 दिमु, एकमन्त तिसिन्ना खा ते भिक्खू भगवन्त एतदवोचु— इध भन्ते ।  
 रञ्जो उदेनस्स उव्यानगतस्स अन्तेपुर दड्ढ पञ्च इत्थिसतानि कालङ्कृतानि  
 सामावतिपमुत्त्वानि । तास भन्ते उपासिकान का गनि को अभिसम्परायो<sup>१</sup> ति ।

‘सन्तेत्य भिक्खवे’ उपासिकायो मोतापत्ता, सन्ति सबदागामिनियो, सन्ति  
 अनागामिनियो । सम्भा ता भिक्खवे । उपासिकायो अनिप्पणानि कालङ्कृतानीति

अथ खो भगवा एतमथ विदित्वा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—

मोहसम्बन्धनो लोको भव्वरूपो<sup>२</sup>व त्स्मिति<sup>३</sup>,

उपनिबन्धना वाला तमसा परिवारितो

सत्सर इव<sup>४</sup> क्षायति पस्सतो नत्थि किञ्चन ति ॥१०॥

चूलवग्गो सत्तमा ।

( तस्स ) उदान—

होति दुवे तथा महिवा ? होति दुवे कामेसु सत्ता

रञ्जो ५ तण्णाययो च पपडवलयो च क-वानो उपास २०॥१॥

<sup>१</sup> A अत्ता

७० “ D अपहरणो C अभववरूपो च दिस्सती<sup>१</sup>ति भववरूपो च  
 दिस्सती ति पाठो । <sup>२</sup> A सत्तीर इव, B सत्ति, D सत्सरि, C

सत्सरि इव सत्सतो विप, अत्सत्सर इव क्षायती ति पि पाठो रकारो  
 हि पस्यिपकारो । विषयसूची <sup>३</sup> प्रथम पादो नास्ति D पुस्तके,

A भद्रियता, भण्डिय

<sup>४</sup> A लङ्कुण्ड, D लङ्कुण्डक, A चलवग्गा

## ८—पाटलिगामिय-धम्मो

### ( ७१—निब्बान-सुत्त ८।१ )

एष मे सुठ— एष समयं भगवा सावत्थियं विन्दति जेतवने अनारयपिण्डवत्ता आराम।

तत्र सो पन समयेन भगवा भिक्खू निब्बानपटिगञ्जुत्ताय धम्मिया षयाय मल्लस्सेति समादपनि समुत्तजेनि सम्पहसति, ते च भिक्ख अट्ठियत्वा<sup>१</sup> मनमिक्खत्वा मच्चञ्चेतमो समग्गाहरित्वा आहितमोता धम्म गुणन्ति। अथ सो भगवा एतमत्थं विदित्वा तां वग्गय इम उदान उदानेसि—

‘अत्थि भिक्खवे ! तदायतनं, यत्थ नेव पठणी न आपो न तेजा न धामो न आकामानञ्चायतनं न विञ्ज्याणानञ्चायतनं न आविञ्चञ्जायतनं न नेव सञ्जानासञ्जायतनं नाय लोको न परलोरो उभा चन्दिमसूरिया, तदाह<sup>२</sup> भिक्खव ! नेव आगनिं वग्गामि न गानि न ठित्तिं न खुत्तिं न उपपात्ति, अप्पनिट्ठं अपावत्तं अनारम्मणमेव त एसे<sup>३</sup> वन्तो दुवत्तस्सा<sup>४</sup> ति ॥१॥

### ( ७२—निब्बान-सुत्त ८।२ )

..(७२=७१)—एतमत्थं विदित्वा तां वेलाय इम उदान उदानेसि—  
दुद्धं अनत्त<sup>३</sup> नाम<sup>४</sup>, न हि सञ्च सुदत्तसं  
पटिविद्धा तण्हा जानती, पत्ततो<sup>५</sup> न त्थि विञ्चनं ति ॥२॥

७१, ७३, ७४ द्रष्टव्य Oldenberg Buddha, p 289 and p 446  
१ AD अट्ठियत्वा, C अत्थियत्वा ति अधिकिञ्च, अयं नो अत्थो अधिगतस्सो एव सल्लक्षणेत्वा तां देसनाय अत्थियत्वा इत्वा। २ A समह, B तवह D तदह।

७२ ३ अनत्त B अनत्त, D अत्त [=अनत्त], C अत्त (?)  
निब्बानं ति अत्थो। अनत्तं ति पि पठन्ति, अत्तविग्रहितं चेच्च पन अनत्तं ति पदस्स अप्पमानं ति अत्थं वदन्ति। ४ BD नाम AC नाम ५ A सत्ततो



अथ यो भगवा एतमत्य विन्दित्वा ताय वलाय इम उत्पन्न उदानेति—  
 किं ययिरा उदपानेन आपा<sup>१</sup>चे सन्नदा सियु ?  
 तण्हाय मूलतो छत्वा किस्म परियसन चरे नि ॥९॥

( ७०—उत्पन्न सुत्त ७।१० )

एव मे सुत्त—एव समय भगवा कोसम्बिय विहरति घोसितारामे ।

तत्र सो एन समयन रज्जो उदेनस्स उय्यानगतस्स अत्तपुर दड्ड होनि,  
 पञ्च इत्थिसत्तानि बालद्रवत्तानि होन्ति सामावत्तिप-मुत्थानि ।

अथ सो सम्यहल्ला भिक्खू पुब्बण्हममय निवासत्वा पत्तचीवर आदाय कोसविं  
 पिण्डाय पाविस्सिमु, कोसम्बिय पिण्डाय चरित्वा पच्छामत्त पिण्डपातपटिवन्ता  
 येन भगवा सनुपसङ्गकमिमु उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एवमन्त निमा  
 दिमु, एवमन्त निसिन्ना यो ते भिक्खू भगवन्त एतदवोचु—‘इध भन्ते ।  
 रज्जो उत्पन्नस्म उय्यानगतस्स भन्तेपुर दड्ड पञ्च इत्थिसत्तानि बालद्रवत्तानि  
 सामावत्तिपमुत्थानि । तास भन्ते उपासिकाव का गति को अभिमम्भरायो’ति ।

भन्तेत्थ भिक्खवे । उपासिकायो सोत्तापरा, सन्ति सबदागामिणियो सन्ति  
 अनागामिणियो । सग्वा ता भिक्खव । उपासिकायो अनिप्पन्नानि बालद्रवत्तानीति

अथ यो भगवा एतमत्य विन्दित्वा ताय वलाय इम उत्पन्न उदानेति—

मोहसम्बधनो लोको भव्वरूपो व न्तिस्मि<sup>२</sup>

उपाधिबधनो बालो तमसा परिवारितो

सस्सर इव<sup>३</sup> स्थायति पस्सतो नत्थि किञ्चन ति ॥१०॥

चूलनग्गो सत्तमो ।

( तप्त ) उदान—

होति दुवे तथा मत्थि<sup>४</sup> ? होति दुवे कामेसु सत्ता

अकुण्ठो<sup>५</sup> तण्हायवो च पपञ्चयवो च च-यवो उत्पन्न उदेवोति ।

<sup>१</sup> A जप्ता

७० <sup>२</sup> D अव्यवस्थो C अव्यवस्थो च विस्सती<sup>३</sup>ति भव्वरूपो च  
 विस्सती ति पाठो ।

<sup>३</sup> A सत्तीर इव, B सत्ति D सत्सरि, C  
 सत्सरि इव सत्सतो विप, अस्सत्सर इव स्थायती<sup>४</sup>ति पि पाठो रकारो  
 हि पञ्चभिक्कारो । विषयसूची

A भद्रियता भण्डिय

<sup>५</sup> A लकुण्ड, D लकुण्डक, A चलवगो

## ८—पाटलिगामिय-धम्मो

( ७१—निब्बान-सुत्त ८।१ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा सावत्थिय विहरति जेतवने अनापविण्णिकस्स  
आरामे ।

तत्र खो पन समयन भगवा भिक्खू निब्बानपटिस्सञ्जुत्ताय धम्मिया  
कयाय सदस्सेति समादपेति समुत्तजेति सम्पहमेति, स च भिक्खू अट्ठिक्त्वा<sup>१</sup>  
मनसिक्त्वा सच्चञ्चेतमो समग्नाहगित्वा ओहितसोता धम्म सुणन्ति । अथ खो  
भगवा एतमत्थं विदिवा ताय वेलाय इम उदान उदानेसि—

‘अत्थि भिक्खवे । तदायतन, यत्थ नय पठवी न आपो न तेजो न वायो न  
आकासानञ्चायतन न विज्जाणानञ्चायतन न आकिञ्चञ्चायतन न नेव  
मज्जानासञ्जायतन नाय लोको न परलोको उभो च्चदिमसूरिया, तदाह<sup>२</sup>  
भिक्खवे । नय आगनि वदामि न गनि न ठिति न चुति न उपपत्ति, अप्पत्तिट्ठ  
अपावत्त अनारम्भणमेव न एस वतो दुवलस्सा’ति ॥१॥

( ७२—निब्बान-सुत्त ८।२ )

( ७२=७१ )—एतमत्थं विदित्वा ताम वेलाय इम उदान उदानेसि—

दुदत्त अनत्त<sup>३</sup> नाम<sup>४</sup>, न हि सच्च सुदस्सन,

पटिविद्धा तण्हा जानतो पस्सतो<sup>५</sup> न त्थि किञ्चन ति ॥२॥

७१, ७३, ७४ द्रष्टव्य Oldenberg Buddha, p 289 and p 446

<sup>१</sup> AD अट्ठिक्त्वा, C अत्थिक्त्वा ति अधिकिञ्च, अर्थं नो अत्थो अपिगतत्त्वो एव  
सत्त्वत्वेत्वा ताप देसनाय अत्थिक्त्वा हत्वा । <sup>२</sup> A समह, B तदह, D तदह ।

७२ <sup>३</sup> अनत्त B अनत्त D अत्त [=अनत्त] C अनत्त (?)  
निब्बान’ ति अत्थो । अनत्त’ ति वि पठन्ति, अत्तविरहितं चेदि पन वन  
ति पदस्स अप्पमानं ति अत्थं वदन्ति । <sup>४</sup> BD नाम AC नाम <sup>५</sup> <sup>५</sup> <sup>५</sup>

## ( ७३—निब्बान-मुत्त ८।३ )

७ = ७१ २ एतमस्य विदित्वा ताय चेलायं इम उदान उदानेति—

अस्थि भिक्खव । अजान अभूत अवत अवसत, नो च त भिक्खव ।  
अभविस्स अजात अवत अवत असद्वसत, न यिध जातस्स भूतस्स वनस्स  
सद्वसतस्स निस्सरण पञ्जायय । यग्मा च यो भिक्खवे । अस्थि अजात अभूत  
अवत असद्वसत, तस्मा जातस्स भूतस्स वनस्स सद्वसतस्स । निस्सरण पञ्जा  
ययी ति ॥३॥

## ( ७४—निब्बान-मुत्त ८।४ )

७४ = ७१, ७२ ७३ एतमस्य विदित्वा ताय वगय इम उदान उदानेति—

निस्सितस्स च चलित अनिम्मितस्म चलित न स्थि, चलिते असति पस्सदि,  
पस्सद्विया सति रति न होति रतिया असति आगतगति न होति, आगतगतिमा  
असति चुत्तपपानो न हाति चुत्तपपात असति न वेध न हुर न उभयम तरे एमनो  
दुक्खस्साति ॥४॥

## ( ७५—चुत्त-मुत्त ८।५ )

एव मे सुत्त—एक समय भगवा मल्लेषु चारिक चरमानो महता भिक्खुसघन  
सद्धि येन पावा तदवसरि ।

तत्र सुद भगवा पावाय विहरति बुद्धस्स कम्मारपुत्तस्स अम्बवने । अस्तोसि  
सो बुद्धो कम्मारपुत्तो—'भगवा विर मल्लेषु चारिक चरमानो महता  
भिक्खुसंघेन सद्धि पावाय अनुप्पन्नो पावाय विहरति मह्य अम्बवने'ति ।

अथ सो बुद्धो कम्मारपुत्ता येन भगवा तनुपसद्वक्खमि उपसद्वक्खमित्वा भगवन्त  
अभिवान्तिवा एवमन्त निस्सोदि एवमन्त निस्सित मा बुद्ध कम्मारपुत्त भगवा  
पम्मिया कथाय सद्धिस्सि ममादपेमि समत्तजमि मप्पहमेमि । अथ सो बुद्धो  
कम्मारपुत्तो भगवता सन्दस्सितो सगादपितो समुत्तजिता सम्पहसिता भगवत्  
एतदवोच— अधिवासेनु म भन्ते । भगवा स्वान्ताय भत्त सद्धि भिक्खुसंघेना ति ।

७५ इ० महापरिनिब्बानमुत्त, pp 41-43 च 47 48 Rhys Davids  
Buddhist Suttas pp 70-73 and pp 82 84

अधिवाससि भगवा तुष्णीभावेन । अथ सो चुन्दो बम्मारपुत्तो भगवतो  
अधियासनं निदित्वा उट्टायासना भगवन्त अभिवादेत्वा पदकिरणं कृत्वा पक्वामि ।  
अथ सो चुन्दो बम्मारपुत्तो तस्मा रतिया अचचयेन सवे निवेसने पणीत खाद  
नीय भोजनीय पटियादापत्वा पट्टनं च सूकरमद्वय<sup>१</sup> भगवतो काल आरोचापेति—  
'वालो भन्ते ! निद्रितं भत्तं ति ।

अथ सो भगवा पुण्ड्रहस्तमय निवासेत्वा पत्तचीवर आणाय सद्धि भिक्षुसुत्तपन  
यन चुन्दस्स बम्मारपुत्तरस निवसन् तेनुपसङ्गमि, उपसङ्गमिन्त्वा पञ्जत्त आसने  
निसोदि, निसज्जं ग्वा भगवा चुन्द बम्मारपुत्त आमन्तेमि— 'यन्ते तुद ! सूकर  
मद्वय पटियत्त, तेन म परिवसि, य पनञ्ज खादनीय भोजनीय पटियत्त, तेन  
भिक्षुसुत्त परिवसि' ति ।

'एव भन्ते' ति सो चुन्दो बम्मारपुत्तो भगवतो पटिस्सुत्ता य अहोसि सूकर  
मद्वय पटियत्त तेन भगवन्त परिवसि, य पनञ्ज खादनीय भोजनीय पटियत्त तन  
भिक्षुसुत्त परिवसि । अथ सो भगवा चुन्द बम्मारपुत्त आमन्तेमि— 'यन्ते  
चुन्द ! सूकरमद्वय अवमिट्ठं त सोब्भ निवणाहि, नाहं त चुन्द पस्सामि मदेवके  
लोके समारके सत्तहके सत्तसमणत्ताहणिया पजाय सदेवमनुस्साय, यस्स त परिभुत्त  
सम्मापरिणाम गच्छेय्यं अञ्जय सयागतस्मा ति ।

'एव भन्ते' ति सो चुन्दो बम्मारपुत्तो भगवतो पटिस्सुत्ता य अहोसि सूकर  
मद्वय अवसिट्ठ, त सोब्भे निगणित्वा येन भगवा तेनुपसङ्गमि उपसङ्गमिन्त्वा  
भगवन्त अभिवादेत्वा एवमन्तं निसीत्ति एवमन्तं निसिज्जं सो चुन्द बम्मारपुत्त  
भगवा धम्मिया कयाय सद्दस्सेत्वा समादयेत्वा समुत्तजेत्वा सम्पहसेत्वा उट्टायासना  
पक्वामि अथ सो भगवतो चुन्दस्स बम्मारपुत्तस्स भत्तं भुत्ताविस्सं खरो अबाधो  
उपज्जि लोहितपक्वदिका वाळ्हा<sup>२</sup> वेदना यत्तन्ति माग्णन्तिका । तत्र सुदं भगवा  
सतो सम्पजानो अधियातोमि अविहज्जमानो । अथ सो भगवा आयम्मन्त आनन्दं  
आमन्तेमि— 'आयामाद ! येन कुसिनारा<sup>३</sup> तेनुपसङ्गमिस्सामा ति ।

एव भन्ते' ति सो आयस्मा आनन्दो भगवतो पच्चस्सोसि ।

चुन्दस्स भत्तं भुज्जित्वा बम्मारस्सा'ति मे सुत ।

आबार्थं सफुमो धीरो पवाळ्हा<sup>४</sup> मारणत्तिक ।

<sup>१</sup>C सूकरमद्वय' ति सूकरस्स मुदुसिनिद्ध पवत्तमस' ति महाटठकयायं युत्त ।  
केचि पन सूकरमद्वय' ति न सूकरमस सूकरेहि महितवत्तालिरो' ति वदन्ति, अञ्जो  
सूकरेहि महितपदेसे अहिच्छत्तकत्ति, अपरे पन सूकरमद्वय नाम एकं रसायन' ति  
गण्हमु । <sup>२</sup>D वाळ्हा <sup>३</sup>A कुसिनारामो <sup>४</sup>B कुसिनारामे <sup>५</sup>A सवाळ्हा



उपसङ्गमित्वा भगवान् एतदबोच—“अच्छरिय भन्त ! अद्भुत भन्ते !  
तथागतस्म अनाविला सन्दति । पिवतु भगवा पाणीय पिवतु सुगतो पाणीय’  
ति । अथ सो भगवा पाणीय अपासि ।

अथ सो भगवा महता भिक्कुसणेन सद्धि येन कुबुद्धा नदी तेन उपसङ्गमि,  
उपसङ्गमित्वा कुबुट्ट नदी अज्जोगाहेत्वा<sup>१</sup> नहात्वा च पिवित्वा च पच्चुत्तरित्वा  
एन अम्बवन तनुपमङ्गमि, उपसङ्गम मित्वा आयस्मन्त चुदक्’ माम् तेसि—“इद्धय  
मेत्वं चुदक् । चतुग्गुण सङ्गघाटि पञ्जापहि, विरुन्तोस्मि चुन्दक् निपज्जि  
त्तामा नि । “एव भन्त’ति सो आयस्मा चुदक्को भगवनो पटिरसुत्वा चतुग्गुण  
सङ्गघाटि पञ्जापसि । अथ सो भगवा दक्षिणणेन पम्मेन गीहमेय्य कप्पेसि पादे  
पाद अच्चाधाय सता सम्पजानो उट्ठानमज्ज मनसिक्खित्वा । आयस्मा पन  
चुल्का तत्थेव भगवता पुरतो निसीदि ।

गन्तवान् बुद्धो नदिय कुबुट्ट अच्चादक्<sup>२</sup> सातोल्<sup>३</sup> विप्पसध ।

जोगाहि सत्था सुविलन्तरूपो तथागतो अप्पटिमोघलोके<sup>४</sup> ।

नहात्वा च पिवित्वा च<sup>५</sup> उदत्तारि<sup>६</sup> सत्था पुरक्खतो भिक्कुगणस्स मज्जे ।

सत्था पवत्ता भगवा इध<sup>७</sup> धम्म उपागमि अम्बवन महेसि ।

आमत्तयि चुल्क् नाम भिक्खु—चतुग्गुण पत्थरा मे निपज्ज<sup>८</sup> ।

सो चोत्तिता भावितत्तेन चुद्धो चतुग्गुण पत्थरि लिप्पमेव ।

निपज्जि सत्था सुविलन्तरूपो, चुन्दोपि तत्थ<sup>९</sup> पमुल्ले<sup>१०</sup> निसीदी ति ।

अथ सो भगवा आयस्मन्त आनन्द आमन्तेसि— सिया खो पनानद ।  
चुल्क्स्स कम्मार्पुत्तस्स कोवि विप्पटिसार उपादहेय्य<sup>११</sup> ।— तस्स ते आवुसो चुद !  
अलामा, तस्स ते आवुसो चुद ! दुल्लद्ध, यस्स त तथागतो पच्छिम पिण्डपात परि  
भुज्जित्वा परिनिब्बुतो ति । चुदस्म आनन्द ! कम्मार्पुत्तस्स एव विप्पटिसारो  
पटिक्खिनोदतब्बो—‘तस्स ते आवुसो चुद ! लामा तस्स ते सुल्लद्ध, यस्स  
त तथागतो पच्छिम पिण्डपात परिभुज्जित्वा परिनिब्बुतो । सम्मुत्ता मे’त आवुसो  
चुद ! भगवतो सुत सम्मुत्ता पटिग्गहीत द्वे मे पिण्डपाता समा समक्कला’<sup>१२</sup>

<sup>१</sup> B अपासि, D अपायि, नास्ति in A पुस्तके <sup>२</sup> D गहेत्वा <sup>३</sup> D ° दिक्

<sup>४</sup> A घलोके, B क्षघलोके, D घ लोके, C घ्याख्यायते—इमस्मि सदेवके  
लोके <sup>५</sup> A हत्वा चिवित्वा, B महत्वा पिवित्वा D नहायित्वा च पिवित्वा च

<sup>६</sup> A उत्तरि, B उदक्कानि D उदक्कोनि (1) <sup>७</sup> A इमे BD इध

<sup>८</sup> AD निसज्ज <sup>९</sup> A तस्स <sup>१०</sup> AD सम्मुल्ले <sup>११</sup> BD उपादहेय्य, C  
उपादहेय्य उपादेय्य <sup>१२</sup> A तथासममहत्तता

तमागमयितारा अतिरिय अज्जेहि विण्णपाहि महणन्नरा च महानिस्सारा  
 ता नि । यमं इ ?—य च विण्णानो पम्भुञ्जिवा तयागो अनुत्तर म्भवापि  
 क्षमिगम्यन्ति यज्ज विण्णान परिमञ्जिवा तयागो अनुगमिगमाय निम्मान  
 पापुग परिनिव्वसन्ति, इमं इ विण्णान ममासमप्पन् । ममागमयितारा  
 तिरिय अज्जेहि विण्णपाहि महणन्नरा च मन्तिगमनरा च । आयुवत्तनिक  
 आयस्मना पुन वम्माम्पुत्तन वम्म म्पारि वप्पवत्तनिक आयस्मता  
 उत्तरि, गुणवत्तनिक आयस्मता उपरि, तमगवत्तनिक आयस्मता  
 उपरि, यमवत्तनिक आयस्मता उपरि, अभिगममवत्तनिक आयस्मता  
 उपरि वि सुत्तज्ज जानन् । वम्माम्पुत्तरा एवं विण्णटिगारो पटिविरो  
 दनञ्चा नि ।

अथ गो भगवा गमत्थं विहित्वा ताव वलायं इमं उदानं उदानमि—  
 म्मता पुञ्ज पयद्दन्ति, मयमता धरं न चीयन्ति ।  
 सुमतो च जहानि पापकं खगगेममागमा परिनिव्वुता<sup>१</sup> नि ॥५॥

### ( ७६—पाटलिगामिग सुत्त ८१६ )

एव मे सुत्त—एव समयं भगवा भगधेसु चारियन्नरमानो महता भिवपुगपन  
 सद्धि मेव पाटलिगामो उदरसरि ।

अस्मागु ता पाटलिगामिया उपासना—भगवा निर भगधसु चारिय  
 उरमानो मन्ता भिवपुमपेन सद्धि पाटलिगाम जुणत्तो नि । अथ गो पाटलिग  
 मिया उपासनाया भगवा तनुपमद्वनमिमु उपमद्वनमिवा भगवन्त धमिया  
 दत्त्वा एवमन्त निसीन्निमु एवमन्त निमित्ता गो पाटलिगामिया उपासका  
 भगवन्त एतवोबु—'अधिवागसु ना भन्ते । भगवा आवससागार नि । अधि  
 धालेमि भगवा पुण्डीमानन ।

अथ ता पाटलिगामिया उपासना भगवतो अधिवागन विहित्वा उद्वायासना  
 भगवन्त धमियात्तेत्वा पन्निगण वन्ता येन आवससागार तेनुपमद्वनमिमु, उप

<sup>१</sup> असमासमहत्फला इष्टव्य महाप, p 48 AD सयमतो  
 (सज्जमतो) चेतन चीयति, C वेदना चीयति B विर न भविस्सति

७६ इष्टव्य महाप p 10 15 महावण ७२८, इष्टव्यानि Rhys  
 David's Buddhist Suttas, p 15 22

सञ्जमित्वा सर्वसंयारि आवसथागार संयारित्वा आसनानि पञ्जापेत्वा उदक-  
मणिक पतिद्वापत्वं तन्पदीप आरोपेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्गमिमु, उपसङ्ग-  
मिवा भगवन् अभिवादेत्वा एकमन्त अट्ठमु, एकमन्त ठिना खो पाटलि गामिया  
उपासका भगवन्त एतदवोचु—“सर्व संयारि संयत मन्ते । आवसथागार  
आसनानि पञ्जानानि, उदकमणिको पतिद्वापितो, तेन्पदीपो आरोपितो । यस्स  
दानि भगवा काल भञ्जती”ति ।

अथ खो भगवा पुब्बण्हवमय निवासेना पत्तचीवर आदाय मट्ठि भिक्खुसघेन  
पन आवसथागार तेनुपसङ्गमि, उपसङ्गमित्वा पाणे पक्कालेत्वा आवसथागार  
पविसित्वा मज्जिम घम्म निस्साय पुरत्थाभिमुखो निसीदि, भिक्खुसघो पि खो  
पादे पक्कालेत्वा आवसथागार पविसित्वा मज्जिम भित्ति निस्साय पुरत्थाभिमुखो  
निसीदि भगवन्त यव पुरवित्त्वा<sup>१</sup>, पाटलिगामिया पि खो उपासका पादे  
पक्कालेत्वा आवसथागार पविसित्वा पुरत्थिम भित्ति निस्साय पञ्चाभिमुखा  
निसीन्नु भगवन्त एव पुरवित्त्वा ।

अथ खो भगवा पाटलिगामिये उपासके आचतेति—“पञ्चमे गहपतयो  
आदानवा दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया । कतमे पञ्च—

“(१) इध गहपतयो । दुस्सीलो सीलविपत्तो पमादादाधिकरण महति भोग  
जानि तिगच्छति । अथ पठमो आदीनवो दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया । (२) पुन  
च परं गहपतयो । दुस्सीलस्स सीलविपत्तस्स पापको नितिसदो अम्भुगगतो । अथ  
दुतियो आदानवा दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया । (३) पुन च परं गहपतयो ।  
दुस्सीलो मालविपत्तो य यदेश परिस उपसङ्गमति यदि क्षत्तिमपरिस यदि  
माहणपरिस यदि गहपतिपरिस यदि समणपरिस अविसारदो उपसङ्गमति  
मद्धुभूतो । अथ ततियो आदीनवो दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया । (४) पुन च  
परं गहपतयो । दुस्सीलो मीन्विपत्तो सम्मुल्लहो काल करोति । अथ चतुथो  
आदीनवो दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया । (५) पुन च परं गहपतयो । दुस्सीलो  
सीलविपत्तो वायस्स भदा पर मरणा अपाय दुर्गाति विनिपात निरयं उपपज्जति ।  
अथ पञ्चमा आदानवा दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया । इमे खो गहपतयो । पञ्च  
आदानवा दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया ।

पञ्चमे गहपतयो । आनिससा सीलवतो सीलसम्पदाय । कतमे पञ्च ?

(१) इध सीलवा सीलसम्पन्नो अपमादायिवग्ण मन्त भोगस्स य अधिगच्छति ।  
अथ पठमो आनिससो सीलवो सीलसम्पदाय । (२) पुन च परं गहपतयो ।



मोक्षया मोक्षमप्यत्रम् वक्ष्यामीति तस्यैव अन्वयः । अथ दुर्निता आनिमं  
 सो मोक्षया मोक्षमप्यत्रम् । (२) पुनः च परं गहनतया । मोक्षया मोक्षमप्यत्रम्  
 यस्याः च परिमं उपमन्त्रमिति यदि गतिरपरिमं यदि ब्रह्मण्यपरिमं यदि गहनं  
 परिमं यदि समन्यपरिमं विमर्शना उपमन्त्रमिति अमन्त्रभूता । अयं तत्रियो  
 मोक्षमया मोक्षया मोक्षमप्यत्रम् । (४) पुनः च परं गहनतया । मोक्षया मोक्षम  
 प्यत्रम् यस्याः च परिमं उपमन्त्रमिति । अयं चतुर्था आनिमो मोक्षया मोक्षमप्यत्रम् ।  
 ( ) पुनः च परं गहनतया । मोक्षया मोक्षमप्यत्रम् वायस्य भन्त परं मरणा  
 मुक्तिं मया मोक्ष उपपन्नमिति । अथ पञ्चमा आनिमो मोक्षया मोक्षमप्यत्रम् ।  
 इमं या गहनतया । पञ्च आनिमो मोक्षया मोक्षमप्यत्रम् इति ।

अथ सो भगवा पाटलिगामिय उपमन्त्रं ब्राह्मणं गतिं धम्मिया कथाय  
 मोक्षया मोक्षमप्यत्रम् समुत्तरेण सम्पत्तेन उच्यते— अभिचला सा  
 गहनतया । रति, यम्, दानि कालं मञ्जया इति । अथ सो पाटलिगामिया  
 तासरा भगवतो भामिन् अभिनन्त्वा पन्तिषणं कृत्वा पञ्चमियु ।<sup>१</sup>

अथ सो भगवा अभिचरणान्तेषु पाटलिगामियेषु उपमन्त्रेषु मुञ्जयागार  
 पाविमि । तां या पन समपन मुनीध-वस्तकारा<sup>२</sup> भगवमहामत्ता पाटलिगाम  
 नगरं मापति वज्जीनं पटिवाहयाम् । तां सो पा समयेन मम्बहुला न्वाया  
 मत्ससम्<sup>३</sup> । च पाटलिगामं वक्ष्यन्ति पन्तिषण्ति । यस्मिं पन्तं महसक्ता न्वता  
 कर्तुयां परिगणन्ति महमन्त्रान् तस्य रज्ज् राजमहामत्तान् चित्तानि नमन्ति  
 निधमनानि मापन्तु । यस्मिं पन्ते मज्जिमा देवता वक्ष्यन्ति परिगणन्ति, मज्जिमा  
 तस्य रज्ज् राजमहामत्तान् चित्तानि नमन्ति निधमनानि मापन्तु । यस्मिं पन्तं  
 नाचा देवता वक्ष्यन्ति परिगणन्ति, नाचान् तस्य रज्ज् राजमहामत्ता चित्तानि  
 नमन्ति निधमनानि मापन्तु । अहं सो भगवा निन्नेन चत्तुना विमुद्धन्ति  
 वन्तमानुस्मक्त्वा ता दानायो सहस्रसम्<sup>४</sup> एव पाटलिगामं वक्ष्यन्ति परिगणन्ति ।  
 यस्मिं पदेन महसक्ता मापन्तु । यस्मिं पदेन मज्जिमा मापन्तु । यस्मिं  
 पदेन नीचा मापन्तु । अथ सो भगवा तस्या रातिया अच्चयेन पञ्चमसमये  
 पञ्चद्वयं जायस्मन्त आनदं आनन्ति— को नु सो आनन्<sup>५</sup> । पाटलिगामं  
 नगरं मापन्तु<sup>६</sup> इति ।

मुनीध-वस्तकारा भन्ते<sup>१</sup> भगवमहामत्ता पाटलिगामे नगरे मापन्ति वज्जीनं  
 पटिवाहयानि ।

<sup>१</sup>D पक्कमियु    <sup>२</sup>AD मुमिध०, BC मुनीध०    <sup>३</sup>ABD सहस्र  
 एव(१)    <sup>४</sup>A मापेति (महावगे—के मापेन्तीति)

‘सेय्यथा पि आनन्द’<sup>१</sup> देवहि तार्वनिसेहि सद्धिं मन्नेत्वा एव एव ख  
आनन्द । सुनीधवस्सकारा मगधमहामत्ता पाटलिगामे नगरं मापेत्ति वज्जी  
पट्टिवाहाय । इमाह आनन्द । अहं दिब्बं चक्षुना विमुदेन अतिकवन्तमा  
नुस्सत्तेन सम्यहूला देवताया सहस्सस्स<sup>२</sup> । एव पाटलिगामे वत्थूनि परिगण्हन्तियो  
यस्मि मापेतु, [ त्रिरावृत्ति ] । यावत्ता आनन्द । अरिय आयतनं, यावत्ता  
वणिप्पथा<sup>३</sup> इदं अग्नग<sup>४</sup> भविस्सति पुटभेत्त<sup>५</sup> । पाटलिपुत्तस्स खो आनन्द ।  
तयो अन्तराया भविस्सति अग्नितो वा उन्कतो व मिमुभेदतो वा’ ति ।

अथ खो सुनीध-वस्सकारा मगधमहामत्ता यन भगवा तेन उपसङ्कमिस्सु उप  
सङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोत्तिस्सु, सम्मोदनीयं कथं साराणियं वीतिसरेत्वा  
एकमन्तं अट्टं सु, एकमन्तं ठित्ता खो सुनीधवस्सकारा मगधमहामत्ता भगवन्तं एतद  
योचु— अधिवासेतु नो भव गोतमो अज्जतनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुमथना ति

अधिवासेमि भगवा तुण्हीभावेन । अथ खो सुनीध-वस्सकारा मगधमहामत्ता  
भगवता अधिवासनं विदिस्वा येन सको आवसथो तेनुपमङ्कमिस्सु उपसङ्कमित्वा  
सके आवसथे पणीतं खादनीयं भोजनीयं पट्टियादापेत्वा भगवतो बालं आरोचेसु—  
‘कालो भो गोतम’ निद्रितं भत्तं ति । अथ खो भगवा पुब्बण्णसमयं निवासेत्वा  
पत्तचीवरं आदाय यन सुनीध-वस्सकाराणं मगधमहामत्तानं आवसथो तनुप  
सङ्कमि, उपसङ्कमित्वा पञ्जत्ते आसने निसीदि । अथ खो सुनीध-वस्सकार  
मगधमहामत्ता बुद्धपमुत्तं भिक्खुसङ्घं पणीतेन खादनीयं भोजनीयेन सहत्थं  
सन्तप्पत्वा सम्पवारेसु । अथ खो सुनीध-वस्सकारा मगधमहामत्ता भगवन्तं भुत्तावि  
ओनीनपत्तपाणिं<sup>६</sup> अञ्जतरं नीचं आसनं गृह्त्वा एकमतं निसीदिस्सु, एकमन्तं  
निसिने खो सुनीधवस्सकारा मगधमहामत्ते भगवा इमाहिं गायामहिं अनुमोदि—

यस्मिं पदसं कप्पेति वासं पण्डितजातिया ।

सीलवन्ते’त्थं भोजेत्वा सञ्जते ब्रह्मचारिये ।

या तत्थं देवता आसु<sup>७</sup> तामं दक्खिणं आदिसे ।

ता पूजिता पूजयन्ति मानिता मानयन्ति न ।

ततो न अनुकम्पन्ति माता पुत्तं व ओरसं ।

देवतानुकम्पितो पोखो सदा भद्धानि पस्सती ति ।

<sup>१</sup> AB अरिय - A वणीनुप्पथो, BD वणिप्पथो <sup>२</sup> A अग्नं नगरं

<sup>३</sup> C ध्याययते—पुटभेदनद्वानति मण्डपुटभेदनद्वानं मण्डकानं मोचनद्वानति  
युत्तं होति (?) सव हस्तलेखेषु त्यक्तं भविस्सति शब्दान्तरं पाटलिपुत्तं  
इति । द्रष्ट० महाव, महाप <sup>४</sup> A अग्निना, B ओनीत <sup>५</sup> Oldenberg



ततियपि सो भगवा आयस्मात् नागसमाल एतदवोच—“अय भन्ते भगवा पथो, मिना गच्छामा” ति । ततिय पि सो भगवा आयस्मात् नागसमाल एतदवोच—‘अय नागसमाल पथो, इमिना गच्छामाति ।

अय सो आयस्मा नागसमालो भगवतो पत्तचीवर तत्थेव छमाय निक्खपित्वा पक्वामि—“इद भन्ते भगवा पत्तचीवरन्ति । अय सो आयस्मा नागसमालस्स तेन पथेन गच्छन्तस्स अन्तरामगे चोरा निक्खमित्वा हत्थेहि वा पादहि वा नाकात्तेसु पत्तञ्च भिन्दिसु सङ्घाटि च विष्फालेसु” । अय सो आयस्मा नागसमालो भिन्नेन पत्तेन विष्फालिताय सङ्घाटिया यन भगवा तेन उपसङ्गमि, उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसीत्ति, एकमत निसिन्ता सो आयस्मा नागसमालो भगवन्त एतदवोच—“इद<sup>१</sup> मय्ह भन्ते तेन पथेन गच्छन्तस्स अन्तरामगे चोरा निक्खमित्वा हत्थहि च पादहि च कोटसु पत्त च<sup>२</sup> भिन्दिसु सङ्घाटि च विष्फालेसु” ति ।

अय सो भगवा एन अय विदिवा नाय वत्ताय इम उदान उदानसि—

सद्धि चर एवतो वस मिस्सा<sup>३</sup> अज्जनन वेदगू ।

विद्वा पजहानि पापक कोञ्चो खीरपको<sup>४</sup>व मित्रपन्ति ॥७॥

### ( ७८—विमाखा-सुत ८१८ )

एव मे सुत—एव समय भगवा सावत्थिम विहरति पुब्बारामे मिगार मातुपासादे ।

तेन सो पन समयन विमाखाय मिगारमातुपा नत्ता कालङ्कता होति पिया मनापा । अय सो विमाखा मिगारमाता अल्लवत्था अल्लवेसा दिवादिवम्म येन भगवा तेनुपसङ्गमि उपसङ्गमिवा भगवन्त अभिवादेत्वा एवमन्त निसीदि, एवमन्त निसिन्ता सो विमाख मिगारमातर भगवा एतदवोच—‘हं कुतो नु त्व विमाखे । आगच्छसि अल्लवत्था अल्लवेसा इधुपसङ्गन्ता दिवादिवस्सा’ ति ।

“नत्ता म भन्ते । पिया मनापा कालङ्कता तेनाह अल्लवत्था अल्लवेसा इधुपसङ्गन्ता दिवादिस्सा’ ति ।

<sup>१</sup>D विष्फालेसु । D इय <sup>२</sup>A चत्त, BD पत्ते च <sup>३</sup>A मिस्सो, D मियो <sup>४</sup>A खिरपको

“इच्छेय्यासि त्व विसारे । यावन्निवा सावत्थिया मनुस्सा तावतिके पुत्त च नत्तारो चा ति ।

‘इच्छेय्याह भगवा यवन्निवा मनुस्सा तावन्निवे पुत्ते च नत्तारो चा ति ।

वीव वट्ठ्ठा पन विसावे सावत्थिया मनुस्सा देवसिक् कालङ्करोत्ति ति ।

‘दसपि भन्ते । सावत्थिया मनुस्सा देवसिक् कालङ्करोत्ति, नव पि कालङ्करोत्ति, अट्ठ पि , सत्त’ पि , छ’ पि , पञ्चापि , चत्तारि पि , त्रीणि’ पि , द्व’ पि एका पि भन्ते । सावत्थिया मनुस्सो देवसिक् कालङ्करोत्ति । अविवित्ता’, पि भन्ते । सावत्थिया मनुस्सेहि कालङ्करोत्तहि ति ।

‘त किं मञ्जासि विमाखे । अपि नु त्व वदावि करह्वि अनल्लवत्था वा भवय्यामि अनल्लवत्था ति ।

‘नो हेन भन्ते । अ म भन्ते । ताव वट्ठ्ठेहि पुत्तहि च नत्तारोहि चा ति ।

यस सा भन पियानि सत्त तस दुक्खानि येम नवुनि पियानि नवुनि तेम दुक्खानि यस असोनि पियानि असोति तम दुक्खानि, येस सत्तति पियानि सत्तति तेम दुक्खानि, यम सट्ठि पियानि सट्ठि तस दुक्खानि, येस पञ्जास पियानि पञ्जास तम दुक्खानि येस चत्तारीस पियानि चत्तारीम तम दुक्खानि यस तीस पियानि तीस तेम दुक्खानि, येम वीसति पियानि वीसति तम दुक्खानि येस दस पियानि दस तेस दुक्खानि, येस नव पियानि नव तस दुक्खानि, यस अट्ठ पियानि अट्ठ तेस दुक्खानि, येस सत्त पियानि सत्त तेम दुक्खानि, यस छ पियानि छ तेस दुक्खानि यम पञ्च पियानि पञ्च तेम दुक्खानि, यस चत्तारि पियानि चत्तारि तेस दुक्खानि, येस त्रीणि पियानि त्रीणि तेस दुक्खानि यम द्व पियानि द्व तेम दुक्खानि, येम एक पियेनि एव तम दुक्ख, येस नत्थि पिय तत्थि तेस दुक्ख, असोका ते विरजा अनुपायासा’ति वदामीति ।

ये केचि सोवा परिदेविता वा दुक्खा च लोकस्मि अनेकरूपा ।

पियं पटिच्च<sup>३</sup> भवन्ति ये ते, पिये असन्ते न भवन्ति एत ।

तस्माहि ते सुखिनो वीगमोवा येस पिय तत्थि कुहिञ्चि लोके ।

तस्मा असोक विरज पत्थयानो पिय न वविराय<sup>४</sup> कुहिञ्चि नेक ति ॥८॥

<sup>१</sup> C अधिवित्ता’ ति अनुञ्जा

<sup>२</sup> AD कत्तारिस, B कत्तालिमं

<sup>३</sup> B पटिच्चेव AD पटिच्चा

<sup>४</sup> A करियाय

## ( ७६—दम्ब-सुत ८।६ )

एव म सुत—एक समय भगवा राजगहे विहरति वेळुवने बल्लद्वनिवाये ।

अथ सो आयस्मा दम्बो मल्लपुत्तो यन भगवा तेनुपसङ्गमि, उपसङ्गमित्वा भगवन्त अभिवादेत्वा एकमन्त निसीणि, एकमन्त निसिप्पो खो आयस्मा दम्बो मल्लपुत्तो भगवन्त एतदबोच—“परिनिव्वानवाणे मे दानि भुगता” ति ।

‘यस्स दानि त्व दम्ब काल मज्जासि’

अथ सो आयस्मा दम्बो मल्लपुत्तो उट्ठायासना भगवन्त अभिवादेत्वा पत्तकिण कत्वा वेहास अभुगन्त्वा आकासे अन्तलिक्खे पल्लद्वनेन निमीदित्वा तेजोघातु समापज्जित्वा बुद्धित्वा परिनिव्वायि । अथ सो आयस्मतो दम्बस्म मल्लपुत्तस्स वेहास अभुगन्त्वा आकासे अन्तलिक्खे पल्लद्वन निमीदित्वा तेजो घातु समापज्जित्वा बुद्धित्वा परिनिव्वुत्तस्म सरीरस्म ज्ञायमानस्स ड्ह्मानस्स नेव छारिका पज्जायित्थ न मसि<sup>१</sup> सेव्यथा पि नाम सणित्थ वा तेलस्म वा ज्ञायमानस्स ड्ह्मानस्स नेव छारिका पज्जायति न ममि एव एव सो आयस्मता दम्बस्म मल्लपुत्तस्स वेहास अभुगन्त्वा आकासे अन्तलिक्खे पल्लद्वनेन निमी दित्वा तेजोघातु समापज्जित्वा बुद्धित्वा परिनिव्वुत्तस्म सरीरस्स ज्ञायमानस्स ड्ह्मानस्स नेव छारिका पज्जायित्थ न मसी<sup>१</sup> ति । अथ सो भगवा एत अत्थ विदित्वा ताय येलाय इम उदान उप्पनेसि—

अभेदि कायो निरोधि सज्जा वेदना<sup>२</sup> पि<sup>३</sup> ति दहसु सत्त्वा<sup>४</sup>

वूपसमिसु मज्जारा विज्जाणमत्थं अयमा ति ॥९॥

## ( ८०—दम्ब-सुत ८।१० )

एव मे सुत—एक समय भगवा सावस्थिय विहरति जेतवने अनापपिण्डि-  
कस्स आरामे ।

७९ <sup>१</sup>A मसि, BD मसि    <sup>२</sup>ABD निरोध C व्याख्यायते—सत्त्वा  
पि सज्जा निव्वज्जि    <sup>३</sup>A वेदना पि तिदहसु सत्त्वा, B वेदना सीतिरहसु  
सत्त्वा, D वेदना ति तिरहसु सत्त्वा, C वेदना पि दहसु सत्त्वाति    सत्त्वा  
पि वेदना    निरोध गता पि त दसहिसु (?)<sup>४</sup> ति पि पठन्ति    निददा  
अहेमुन्ति अत्थो पि<sup>५</sup> तिदहसु    <sup>५</sup>AB विज्जाणत्यगमासीति, D विज्जाणा  
अत्तुपगमा ति

८० A मसि ।

तत्र सो भगवा भिन्नू आमन्तेसि—“भिवन्वो” नि ।

‘भन्ते नि त भिन्नू भगवता पञ्चस्साम् ।

भगवा एतदवाच—दम्बस्स भिन्नसे । मल्लपुत्तस्स वेहास अमुग्गन्वा  
तमसि<sup>१</sup> (=५०) । सय्यथापि नाम सण्णस्म न मयी<sup>२</sup> एव मा भिन्नव  
दस्स मल्लपुत्तस्म । विदिवा जय सो भगवा एतमत्य ताप वेलाय  
इम उदान उज्जानमि—

अयाधनहनस्स एव जलतो जातवेदस्स ।

<sup>३</sup>अनुपुब्बपसन्तस्स यथा न जायत <sup>४</sup> गति ।

एव सम्माविमुत्तान वामव पायतारिण<sup>५</sup> ।

पञ्जापतु गति नत्थि पत्ता जल सुव<sup>६</sup>ति ॥१०॥

पाटलिगामियग्गो<sup>७</sup> अट्ठमा ॥ ८ ॥

अत्र उदान मत्ति—

(अष्टमे वर्गे सूत्रसूची)

अस्समा अतरो उता सुग्गे पाटलिगामिवा ।

द्विवाग्गो विमाळा च म्भेन च महु ते दसा<sup>८</sup> ति ।

(उदानस्य वर्गसूची)

अग एव तस्म दत्तोपि अग्गमिन् अत्थिमे सुचत्तिन्ने ।

अन्ववग्गवग्गो अत्थिमे मेधिवग्गवग्गो अतुत्थो ।

पञ्चमवग्गवग्गो ति सोत्थो<sup>९</sup> अट्ठमवग्गो ति अत्थो<sup>१०</sup> ।

सत्तमवग्गवग्गो ति च धूत्थो, <sup>११</sup>१०पाटलिगामियग्गो अट्ठमवग्गो ।

अत्थिमेधिवग्गवग्गो अग्गमिन् अत्थिमे सुचत्तिन्ने ।

अत्थिमेधिवग्गवग्गो अग्गमिन् अत्थिमे सुचत्तिन्ने ।

उदान समस

<sup>१</sup>A मति

<sup>२</sup>A मसोति

<sup>३</sup>AB अनुपुब्बप सतस्स

<sup>४</sup>AD यथा पञ्जापते, B यथा न ज्ञायते, C यथा न जायते

<sup>५</sup>A तादिन, B तानि, D जान्ति C व्याख्यायते—अथ तस्मिन्

<sup>६</sup>ABD पाणलिगामियग्गो

<sup>७</sup>BD दत्तेन ते दसा ।

<sup>८</sup>A पञ्चमवग्गं यदिह सोण, BD पञ्चम वग्गवर ति सोण ।

<sup>९</sup>A अट्ठमवग्गवर तु ति अत्थो, B अत्थो, तमदा, D अत्थो तु तमत्तो ?

<sup>१०</sup>A ति धूत्थो B ति पञ्चदो, D ति धूत्थो <sup>११</sup>A दस्सिता, B दस्सिका,

D दस्सिता

<sup>१२</sup>A सत्ताहि त, B सत्ताहि हित D अत्ता हित ।







